ऑनलाइन कारोबार ने पकड़ी रफ्तार, पलायन को मजबूर छोटे व्यापारी-12

भारी हंगामे के कारण नहीं चले संसद के दोनों सदन - 12

कुलगाम में इस साल की सबसे लंबी मुठभेड़ 7वें दिन भी गोलाबारी जारी - 13

मैंने भारत के खिलाफ बल्लेबाजी नहीं करने के बारे में कभी नहीं सोचा था : क्रिस वोक्स- 14

आज का मौसम

32.0⁰ अधिकतम तापमान

28.0⁰ न्यूनतम तापमान

सूर्योदय 05.37

सूर्यास्त 06.51

अमृत विचार

एक सम्पूर्ण दैनिक अखबार

|कानपुर नगर|

www.amritvichar.com

2 राज्य | 6 संस्करण

लखनऊ बरेली कानपुर मुरादाबाद अयोध्या हल्द्वानी

श्रावण शुक्ल पक्ष चतुर्दशी 02:12 उपरांत पूर्णिमा विक्रम संवत 2082

शुक्रवार, 8 अगस्त 2025, वर्ष 3, अंक 349, पृष्ठ 14 ■ मूल्य 5 रुपये

कानपुर महानगर की खबरों का पुलआउट अंदर के पन्नों में...।

ब्रीफ न्यूज

मोदी और नड्डा चुनेंगे उपराष्ट्रपति उम्मीदवार

नई दिल्ली। राजग ने उपराष्ट्रपति चुनाव में गठबंधन का उम्मीदवार चुनने के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा को अधिकृत किया। केंद्रीय मंत्री किरेन रीजीजू ने यह जानकारी दी। रीजीजू ने कहा कि यह सर्वसम्मति से लिया गया निर्णय था। संसद परिसर में भाजपा के प्रमुख नेताओं और उनके गठबंधन सहयोगियों की एक बैठक हुई जिसमें यह निर्णय लिया गया। बैठक में नड्डा के अलावा केंद्रीय मंत्री राजनाथ सिंह और अमित शाह, जनता दल (यूनाइटेड) के ललन सिंह, शिवसेना के श्रीकांत शिंदे, तेदेपा के एल. श्रीकृष्ण देवरायलु और लोजपा (रामविलास) के चिराग पासवान भी शामिल हुए। बता दें कि बीते दिनों जगदीप धनखड़ ने राज्यसभा की कार्यवही के अगले दिन इस्तीफा दे दिया था।

अंदर देखें ... यूरेका

राघवेंद्र हत्याकांड के दो शूटर हरदोई बार्डर पर मुठभेड़ में ढेर

कार्यालय संवाददाता, सीतापुर

- यूपी एसटीएफ व जिले की एसओजी टीम ने की संयुक्त कार्रवाई
- दोनों पर एक-एक लाख का इनाम था, पिस्टल व कारतूस बरामद

अमृत विचार : पत्रकार राघवेंद्र वाजपेई की हत्या में वांछित शूटर एसटीएफ के हत्थे चढ़े और हरदोई बॉर्डर पर मुठभेड़ में मारे गए। पिसावां इलाके में हुई संयुक्त कार्रवाई में बदमाशों के कब्जे से कार्बाइन, पिस्टल, असलहे और भारी संख्या में कारतूसें बरामद हुईं। पांच माह से वांछित चल रहे दोनों शूटरों पर एक-एक लाख का इनाम घोषित था।

बता दें कि बीती 8 मार्च को महोली कोतवाली क्षेत्र में हेमपुर नेरी ओवरब्रिज पर पत्रकार राघवेंद्र वाजपेई की पांच गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। पुलिस ने वारदात में शामिल महोली के कारेदेव मंदिर से जुड़े आध्यात्मिक गुरु शिवानंद उर्फ विकास राठौर, इमलिया सुल्तानपुर के निर्मल सिंह और असलम गाजी को पहले ही गिरफ्तार कर जेल भेज चुकी है। जांच में मिश्रिख के अटवा निवासी राजू तिवारी उर्फ रिजवान और उसके भाई संजय तिवारी उर्फ अकील का नाम सामने आया। एसपी अंकुर अग्रवाल ने बताया कि दोनों अपराधियों के हरदोई सीमा पर मिलने का इनपुट एसटीएफ और जिले की एसओजी टीम को मिला। संयुक्त टीम ने पिसावां थानाक्षेत्र में दूल्हापुरवा के निकट घेराबंदी की थी।

टैरिफ पर दो टूक, किसानों के हितों से समझौता नहीं

नई दिल्ली, एजेंसी

- भारतीय वस्तुओं पर टैरिफ 50% करने के बाद प्रधानमंत्री ने ट्रंप को दिया परोक्ष संदेश
- कहा- आवश्यक हुआ तो वह व्यक्तिगत रूप से इसकी भारी कीमत चुकाने के लिए तैयार

अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को परोक्ष रूप से संदेश देते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने गुरुवार को कहा कि भारत अपने किसानों, मछुआरों और डेयरी क्षेत्र से जुड़े लोगों के हितों से कभी समझौता नहीं करेगा।

प्रधानमंत्री ने कहा कि अगर आवश्यक हुआ, तो वह व्यक्तिगत रूप से इसकी भारी कीमत चुकाने के लिए तैयार हैं। ट्रंप द्वारा भारतीय वस्तुओं पर शुल्क (टैरिफ) बढ़ाकर 50 प्रतिशत करने के एक दिन बाद प्रधानमंत्री का यह बयान आया है, जबकि दोनों देश द्विपक्षीय व्यापार समझौते पर चर्चा कर रहे हैं। यह व्यापार समझौता भारत के कृषि और डेयरी बाजार तक अधिक पहुंच की अमेरिका की मांग के बीच हो रहा है। मोदी ने कहा, हमारे लिए अपने किसानों का हित सर्वोच्च प्राथमिकता है। उन्होंने कृषि वैज्ञानिक एवं हरित क्रांति के जनक एमएस स्वामीनाथन की जन्मशती के उपलक्ष्य में आयोजित तीन दिवसीय वैश्विक सम्मेलन को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि अमेरिका ने कच्चे तेल को लेकर रूस पर अपनी निर्भरता कम करने के लिए भारत पर दबाव बनाने के मकसद से

भारतीय वस्तुओं पर व्यापार शुल्क बढ़ा दिया है। अमेरिका मक्का, सोयाबीन, सेब, बादाम और इथेनॉल जैसे उत्पादों पर शुल्क कम करने के साथ डेयरी उत्पादों तक पहुंच बढ़ाने की मांग कर रहा है। भारत इन मांगों का विरोध कर रहा है, क्योंकि इनका सीधा असर किसानों पर पड़ेगा।

स्वामीनाथन के सम्मान में डाक टिकट जारी

इस अवसर पर मोदी ने महान वैज्ञानिक स्वामीनाथन के सम्मान में एक विशेष सिक्का और डाक टिकट भी जारी किया। वर्तमान में (अमेरिका के साथ) व्यापारिक तनावों से इतर मोदी ने भारतीय कृषि के भविष्य के लिए अपने दृष्टिकोण को रेखांकित किया, जिसमें पोषण सुरक्षा, फसल विविधीकरण और जलवायु-अनुकूल फसल किस्मों एवं प्रौद्योगिकी एकीकरण पर जोर दिया गया। उन्होंने कृषि प्रणालियों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) और मशीन लर्निंग के एकीकरण पर जोर देते हुए सूखा को सह सकने वाला, ताप-प्रतिरोधी और बाढ़-अनुकूल फसलें विकसित करने का आह्वान किया।

अनुसंधान बढ़ाने का किया आह्वान

मोदी ने फसल चक्र कैसे बदला जाए, किस मिट्टी के लिए क्या उपयुक्त है, उस पर अनुसंधान बढ़ाने का आह्वान किया तथा किफायती मृदा परीक्षण उपकरण एवं प्रभावी पोषक तत्व प्रबंधन तकनीकों को विकसित करने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने सौर ऊर्जा चालित सूक्ष्म सिंचाई (ड्रिप सिंचाई प्रणाली और प्रिसिशन सिंचाई प्रणाली) की दिशा में प्रयासों को तेज करने की आवश्यकता पर भी जोर दिया और कहा कि ड्रिप प्रणालियों और प्रिसिजन (सटीक) सिंचाई को और अधिक व्यापक एवं प्रभावी बनाया जाना चाहिए।

कांग्रेस ने सामूहिक हत्याएं कराईं सपा ने उनके पापों पर पर्दा डाला

हिंसा के बाद पहली बार संभल पहुंचे मुख्यमंत्री योगी विपक्ष पर बरसे

- कहा- काशी और अयोध्या में संभव तो संभल में क्यों नहीं हो सकता भगवान कल्कि और हरिहर के पावन धाम का पुनरुद्धार

कार्यालय संवाददाता,बहजोई/संभल

अमृत विचार : हिंसा के बाद गुरुवार को पहली बार संभल में पहुंचे सीएम योगी ने सपा और कांग्रेस पर जमकर निशाना साधा। कहा कि आजादी के बाद से संभल में कांग्रेस ने सामूहिक हत्याएं कराईं और सपा उसके पाप पर पर्दा डालकर अपराधियों को बचाती रही। उन्होंने संभल के धार्मिक महत्व को भी रेखांकित करते हुए कहा यदि काशी और अयोध्या में हो सकता है तो संभल में भगवान कल्कि व हरिहर के पावन धाम का पुनरुद्धार क्यों नहीं हो सकता।

संभल जनपद के बहजोई में कलेक्ट्रेट सहित 659 करोड़ की 222 विकास परियोजनाओं का लोकार्पण व शिलान्यास करने के बाद जनसभा को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि विरासत को विस्मृत करके कोई भी समाज आगे नहीं बढ़ सकता। संभल की इसी सच्चाई को बताने के लिए हम आपके बीच आए हैं। कांग्रेस सामूहिक हत्या करवाती थी और सपा उनके चेले के रूप में पाप पर पर्दा डालकर हत्यारों को बचाती थी। सच्चाई सामने आ जाती तो उनको वोट बैंक खिसकने का डर था। हम लोग वोट के लिए नहीं, विरासत का संरक्षण करने के लिए आए हैं। योगी ने हरिहर मंदिर और कल्कि अवतार का जिक्र करते हुए कहा कि हरि और हर यानी विष्णु और शिव दोनों के जहां पर एक सामूहिक रूप से दर्शन हो सकते हों उसी संभल में भगवान विष्णु का कल्कि अवतार होगा यह हमारे पावन ग्रंथों ने माना है। कुछ लोगों को यह विवादित विषय लगता होगा लेकिन यह विवाद का विषय नहीं हो सकता।

संभल के बहजोई में पदाधिकारियों द्वारा भेंट की गदा को उठाते मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ।

अब उप्र में सभी निवासी सुरक्षित

उन्होंने कहा कि संभल की सच्चाई को छुपाने की कुत्सित चेष्टा करने वालों के मंसूबों को भी ध्वस्त करने का काम करेंगे। जो भारत, भारतीयता और विरासत को कलंकित करने का कार्य करेंगे उन्हें ऐसा सबक सिखाएंगे कि उनकी आने वाली कई पीढ़ियां याद रखेंगी। हमारे पास शास्त्रीय प्रमाण भी हैं, पुरातात्विक प्रमाण भी और लोक मान्यताएं भी हैं सब कुछ बताने के लिए हमारे पास है। प्रदेश की कानून व्यवस्था का जिक्र करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि पिछली सरकार एक जिले में एक माफिया को पालती थी। उस माफिया के गुंडे पूरे जनपद को तबाह करते थे, दंगा करवाते थे। अब हर उत्तर प्रदेश वासी सुरक्षित हैं। अब तो बस दंगाई सुरक्षित नहीं है। दंगाई के ऊपर अब महाकाल अपना वास्तविक असर दिख रहा है।

वोट चोरी पर राहुल ने डेटा किया सार्वजनिक, ईसी बोला-सबूत दें

कांग्रेस नेता का आरोप, कर्नाटक के महादेवपुरा विस में 5 तरह की हेराफेरी हुई

नई दिल्ली, एजेंसी

कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने 2024 के लोकसभा चुनाव के आंकड़ों का हवाला देते हुए गुरुवार को आरोप लगाया कि कर्नाटक के महादेवपुरा विधानसभा क्षेत्र में पांच तरह की हेराफेरी के जरिए एक लाख से अधिक वोट चुराए गए। इसके साथ ही कहा कि वोट चोरी हमारे लोकतंत्र पर एक एटम बम की तरह है। गांधी ने यहां एक संवाददाता सम्मेलन में कहा कि हमारे आंतरिक सर्वेक्षणों के अनुसार हमें कर्नाटक में (2024 के लोकसभा चुनाव में) 16 सीट जीतने की उम्मीद थी। हालांकि, हमने नौ सीट जीतीं।

राहुल के इन आरोपों पर कर्नाटक के मुख्य निर्वाचन अधिकारी (सीईओ) ने कांग्रेस नेता राहुल गांधी से उन मतदाताओं के नाम साझा करने को कहा, जिनके बारे में उन्होंने दावा किया है कि उन्हें राज्य की मतदाता सूची में गलत तरीके से शामिल किया गया है या बाहर रखा गया है। साथ ही, उन्होंने राहुल गांधी

से इस संबंध में एक हस्ताक्षरित घोषणा पत्र भी मांगा है, ताकि चुनाव प्राधिकारी इस मामले में आवश्यक कार्यवाही शुरू कर सकें। निर्वाचन आयोग के सूत्रों ने कहा कि गांधी को या तो चुनाव संचालन नियमों के तहत एक घोषणा पत्र पर हस्ताक्षर करना चाहिए और उन लोगों की सूची प्रस्तुत करनी चाहिए, जिनके बारे में उनका दावा है कि उन्हें मतदाता सूची में गलत तरीके से शामिल किया गया है या हटा दिया गया है या फिर उन्हें भारत के लोगों को गुमराह करना बंद करना चाहिए और चुनाव प्राधिकरण के खिलाफ निराधार आरोप लगाना बंद करना चाहिए। वहीं, भाजपा ने गांधी के आरोप को एक सुनियोजित धोखाधड़ी करार दिया, और आरोप लगाया कि कांग्रेस भारत के लोकतंत्र तथा संविधान के खिलाफ एक बड़ी साजिश के तहत संवैधानिक संस्थाओं पर व्यवस्थित हमला कर रही है।

1,00,250 मतों की चोरी का आरोप

गांधी ने कहा, लोस चुनाव में बेंगलुरु मध्य लोकसभा सीट के महादेवपुरा विधानसभा क्षेत्र में 1,00,250 मतों की चोरी की गई जबकि यह सीट भाजपा ने 32,707 मतों के अंतर से जीती। उन्होंने कहा, यहां 11,965 डुप्लीकेट वोटर बनाए गए, 40,009 फर्जी पतों का इस्तेमाल हुआ 10,452 वोटरों को एक ही पते पर पंजीकृत किया गया, 4,132 वोटर फर्जी फोटो के साथ सूची में जोड़े गए। 33,692 नए वोटर फॉर्म-6 का गलत इस्तेमाल कर जोड़े गए। उन्होंने उदाहरण दिया कि आदित्य श्रीवास्तव नामक एक मतदाता का चार स्थानों पर वोट है।

न्यायमूर्ति वर्मा का आचरण विश्वास से परे : सुप्रीम कोर्ट

नई दिल्ली, एजेंसी

- कैश कांड मामले में शीर्ष अदालत ने न्यायमूर्ति वर्मा की याचिका की खारिज

सुप्रीम कोर्ट ने आंतरिक जांच समिति की उस रिपोर्ट को अमान्य करार देने का अनुरोध करने वाली इलाहाबाद हाईकोर्ट के न्यायाधीश यशवंत वर्मा की याचिका गुरुवार को खारिज कर दी, जिसमें उन्हें नकदी बरामदगी मामले में कदाचार का दोषी ठहराया गया है। कार्ट ने कहा इस प्रक्रिया का पूरी कड़ाई से पालन किया गया था।

न्यायमूर्ति दीपांकर दत्ता और न्यायमूर्ति एजी मसीह की पीठ ने कहा कि न्यायमूर्ति वर्मा का आचरण विश्वास से परे है और उनकी याचिका पर सुनवाई नहीं की जानी चाहिए। यह न्यायाधीश वर्मा के लिए एक बड़ा झटका है जो दिल्ली स्थित अपने आधिकारिक आवास के भंडार गृह में आग लगने के बाद बड़ी मात्रा में अधजली नकदी बरामद होने के बाद विवादों के केंद्र में हैं। न्यायमूर्ति वर्मा ने 8 मई की उस सिफारिश को रद्द करने का भी अनुरोध किया था जिसमें भारत के तत्कालीन सीजेआई संजीव खन्ना ने संसद से उनके खिलाफ महाभियोग की कार्यवाही शुरू करने का अनुरोध किया था। शीर्ष कोर्ट ने कहा कि तत्कालीन सीजेआई और आंतरिक समिति ने पूरी प्रक्रिया का कड़ाई से पालन किया, सिवाय वीडियो फुटेज और तस्वीरें अपलोड करने के।

समिति ने 10 दिन तक जांच कर 55 गवाहों से की पूछताछ

पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश शील नागू की अध्यक्षता वाली तीन न्यायाधीशों की समिति ने 10 दिन तक जांच की, 55 गवाहों से पूछताछ की और न्यायमूर्ति वर्मा के आधिकारिक आवास पर उस स्थान का दौरा किया, जहां 14 मार्च को रात करीब 11:35 बजे आग लगी थी। मामले की जांच कर रही समिति की रिपोर्ट में कहा कि न्यायमूर्ति वर्मा का कदाचार साबित होता है और यह इतना गंभीर है कि उन्हें पद से हटाया जाना चाहिए।

रेलवे भर्ती में धांधली, पूर्व चेयरमैन समेत 5 पर एफआईआर

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

- पूर्वोत्तर रेलवे में 2018-19 में आयोजित की गई थी भर्ती
- सीबीआई ने सभी के ठिकानों पर मारा छापा, 280 फाइलें जब्त की

अमृत विचार: पूर्वोत्तर रेलवे में वर्ष 2018-19 में हुई भर्ती में धांधली के आरोप में भर्ती बोर्ड के पूर्व चेयरमैन प्रवीण कुमार राय, आरआरबी के तत्कालीन तकनीशियन विनय कुमार श्रीवास्तव, कार्यालय सहायक वरुण राज मिश्रा, सूरज कुमार श्रीवास्तव और एक अन्य के खिलाफ भ्रष्टाचार की रिपोर्ट दर्ज की गई है।

सीबीआई लखनऊ की टीम ने गुरुवार को पूर्व चेयरमैन समेत कई कर्मचारियों के कार्यालय व आवास पर छापा मारकर भर्ती से जुड़ी 280 फाइलें जब्त की हैं। फिलहाल अभी तक किसी के हिरासत या गिरफ्तार किए जाने की पुष्टि नहीं है। भर्ती धांधली के मामले में पूर्वोत्तर रेलवे गोरखपुर के महाप्रबंधक (सतर्कता) जेए वंड्रिन ने सीबीआई लखनऊ कार्यालय में शिकायत की। उन्होंने सात जनवरी को पत्र लिखा। जिसमें एक जून 2023 की जांच रिपोर्ट भी शामिल थी। सीबीआई लखनऊ यूनिट ने इस मामले में मंगलवार देर शाम एफआईआर दर्ज की थी। महाप्रबंधक (सतर्कता) की जांच रिपोर्ट में साफ लिखा कि भर्ती बोर्ड द्वारा बिना किसी उचित कारण के ही योग्य अभ्यर्थियों के पैनल में देरी की गई। देरी होने के कारण अभ्यर्थियों ने आरआरबी कार्यालय में संपर्क किया।

उन्हें कर्मचारी विनय कुमार श्रीवास्तव व वरुण राज मिश्रा के माध्यम से तत्कालीन अध्यक्ष प्रवीण कुमार राय से मिलने का निर्देश दिया गया। तत्कालीन अध्यक्ष ने व्यक्तिगत रूप से उनके आवेदन और मोबाइल नंबर जुटाया। इसके बाद कई नंबरों से कॉल कर अभ्यर्थियों को उन्हें व्हाट्सएप कॉल के माध्यम से संपर्क करने को निर्देश दिया गया। पैनल में शीघ्रता से शामिल करने के लिए रुपये का दबाव डाला गया था।

सीआरपीएफ जवानों से भरा वाहन नाले में गिरा, 3 की मौत

- उधमपुर में हुआ हादसा, पांच जवान गंभीर रूप से घायल

जम्मू। जम्मू कश्मीर के उधमपुर जिले में गुरुवार को एक वाहन के सड़क से फिसल कर नाले में गिरने से केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के तीन जवानों की मौत हो गयी और 15 अन्य घायल हो गए।

उपराज्यपाल मनोज सिन्हा और केंद्रीय मंत्री जितेंद्र सिंह ने जवानों की मौत पर दुख जताया और अधिकारियों को घायल जवानों को उत्कृष्ट उपचार मुहैया कराने और हरसंभव सहायता देने का निर्देश दिया। यह हादसा कडवा इलाके में सुबह करीब साढ़े 10 बजे हुआ जब जवान बसंतगढ़ से एक अभियान से एक बंकर वाहन में सवार होकर लौट रहे थे।

फैसला योगी कैबिनेट ने भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी-चिवनिंग छात्रवृत्ति योजना को दी मंजूरी

उप्र के छात्र यूके में ले सकेंगे मास्टर डिग्री, सरकार उठाएगी खर्च

- राज्य सरकार देगी 23 लाख रुपये प्रति छात्र, शेष खर्च उठाएगा यूके का एफसीडीओ

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचारः योगी मंत्रिमंडल ने गुरुवार को उच्च शिक्षा को नई दिशा देने वाला एक अहम फैसला लिया है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की अध्यक्षता में लोकभवन में हुई कैबिनेट बैठक में भारत रत्न श्री अटल बिहारी वाजपेयी-चिवनिंग उप्र राज्य सरकार छात्रवृत्ति योजना को मंजूरी दी गई है। यह योजना राज्य के मेधावी छात्रों को यूनाइटेड किंगडम (यूके) में उच्च शिक्षा प्राप्त करने का अवसर प्रदान करेगी।

उच्च शिक्षा मंत्री योगेंद्र उपाध्याय ने इस फैसले की जानकारी साझा करते हुए बताया कि सरकार की इस पहल के तहत, हर साल प्रदेश के पांच प्रतिभाशाली छात्र-छात्राओं को यूके के किसी प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय से एक वर्ष की मास्टर डिग्री के लिए छात्रवृत्ति दी जाएगी। इस योजना को भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी की असाधारण उपलब्धियों से प्रेरणा लेते हुए शुरु किया जा रहा है। यह छात्रवृत्ति उत्तर प्रदेश सरकार तथा यूनाइटेड किंगडम के फॉरेन कॉमनवेल्थ एंड डेवलपमेंट ऑफिस (एफसीडीओ) के संयुक्त सहयोग से चलाई जाएगी।

मंत्रिमंडल की बैठक लेते मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ।

फिलहाल 3 वर्षों की योजना, मासिक भत्ता व विमान किराया भी देंगे

उच्च शिक्षा मंत्री के मुताबिक, छात्रवृत्ति में छात्रों को शैक्षणिक शिक्षण शुल्क, परीक्षा एवं शोध शुल्क, रहने के लिए पर्याप्त मासिक भत्ता तथा इकोनॉमी क्लास में एक बार आने-जाने का विमान किराया भी शामिल रहेगा। चयन प्रक्रिया राज्य सरकार और एफसीडीओ के बीच हुए समझौते (एमओयू) के अनुसार निष्पक्ष और पारदर्शी तरीके से संपन्न होगी। योजना शैक्षणिक वर्ष 2025-26 से लागू होगी और यह तीन वर्षों (2025-26, 2026-27, 2027-28) तक प्रभावी रहेगी। आगे इसके नवीनीकरण पर निर्णय लिया जाएगा।

प्रति छात्र कुल खर्च 42,076 डॉलर तक आने का अनुमान

सरकार योजना के तहत प्रत्येक छात्र के लिए 19,800 डॉलर (लगभग 23 लाख रु.) का खर्च वहन करेगी। कुल अनुमानित खर्च 38,048 डॉलर से 42,076 डॉलर के बीच होगा, जिसमें शेष धनराशि का प्रबंध एफसीडीओ यूके द्वारा किया जाएगा। योगेन्द्र उपाध्याय के अनुसार, यह योजना उप्र के छात्रों के लिए वैश्विक शिक्षा के द्वार खोलेगी और उन्हें अंतरराष्ट्रीय मंच पर प्रतिस्पर्धा करने का अवसर देगी। यह मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की युवा सशक्तिकरण एवं शिक्षा के क्षेत्र में सुधार की प्रतिबद्धता का एक और प्रमाण है।

अमृत विचार

कानपुर, शुक्रवार, 8 अगस्त 2025

न्यूज ब्रीफ

ट्रंप का भारत पर टैरिफ लगाना विश्वासघाती

अमृत विचार, लखनऊ : बसपा प्रमुख मायावती ने कहा कि अमेरिकी राष्ट्रपति

डोनाल्ड ट्रंप का भारत पर टैरिफ लगाना विश्वासघाती व देश को कमजोर करने वाला है। उन्होंने सोशल मीडिया 'एक्स' पर पोस्ट के जरिये कहा कि ब्रिक्स देश ब्राजील की तरह भारत पर 50 प्रतिशत का भारी भरकम टैरिफ (शुल्क) लगाकर अमेरिका ने भारत को आघात पहुंचाने का प्रयास किया है। भारत सरकार ने अपने संयमित बयान में 'अनुचित, अन्यायपूर्ण व अविवेकी' बताया है, पर देश की जनता इसे प्रथमदृष्टया विश्वासघाती व देश को कमजोर करने वाला कदम ज्यादा मानती है। इससे निपटने के लिए सभी को पूरी परिपक्वता दिखाना चाहिए।

बाढ़ प्रभावित किसानों को तत्काल मुआवजा मिले : अनिल दुबे

अमृत विचार, लखनऊ : राष्ट्रीय लोकदल (रालोद) के राष्ट्रीय महासचिव अनिल दुबे ने गुरुवार को जल संसाधन एवं बाढ़ नियंत्रण विभाग के प्रमुख सचिव अनिल गर्ग से भेंट की। उन्होंने प्रशासन द्वारा चलाए जा रहे राहत कार्यों में तेजी लाने और किसानों को उनकी नष्ट हुई फसलों का उचित मुआवजा तत्काल देने की बात की। राष्ट्रीय महासचिव ने कहा कि सरकार द्वारा किसानों के हित में जो योजनाएं चल रही हैं, उन्हें बाढ़ से प्रभावित क्षेत्रों में तत्काल लागू किया जाना चाहिए, ताकि प्रभावित परिवारों को राहत मिल सके। उन्होंने कहा कि रालोद प्रदेश सरकार से मांग करता है कि वह हर जिले में कंट्रोल रूम सक्रिय करे, राहत शिविरों में भोजन, दवा, साफ पानी एवं जरूरी सामग्री की तत्काल व्यवस्था की जाए।

बिजली कर्मी आज से शुरू करेंगे अभियान

अमृत विचार, लखनऊ : सार्वजनिक क्षेत्र में ऊर्जा क्षेत्र को बचाए रखने के लिए बिजली कर्मी 8 अगस्त से तिरंगा लेकर एक सप्ताह तक 'अंग्रेजो भारत छोड़ो' आंदोलन की तर्ज पर कॉरपोरेट सेक्टर सार्वजनिक क्षेत्र में पावर सेक्टर छोड़ो अभियान' चलाएंगे। विद्युत कर्मचारी संयुक्त संघर्ष समिति उप्र के आह्वान पर प्रदेश के सभी ऊर्जा निगमों के बिजली अभियंता व अवर अभियंता समेत अन्य कर्मचारी व संविदा कर्मी अभियान में शामिल होंगे। संघर्ष समिति के संयोजक शैलेंद्र दुबे ने बताया कि 15 अगस्त तक अभियान चलाया जाएगा। राजधानी लखनऊ में लेसा भवन रेजीडेंसी खंड मुख्यालय पर विरोध सभा होगी। सभा के बाद बिजली कर्मी तिरंगा लेकर शहीद स्मारक तक जाएंगे और शहीदों को श्रद्धासुमन अर्पित करेंगे।

अब गांवों में नामांतरण और संशोधन प्रक्रिया होगी आसान

यूपी कैबिनेट के फैसले : दस्तावेजों को अपडेट करने की प्रक्रिया को सरल और पारदर्शी बनाने के लिए उप्र. ग्रामीण आबादी अभिलेख विधेयक-2025 को मंजूरी

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

- स्वामित्व योजना के तहत तैयार की गई घरौनियों में नामांतरण, संशोधन और अपडेट की प्रक्रिया को आसान बनाएगा विधेयक

अमृत विचार : मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की अध्यक्षता में हुई कैबिनेट की बैठक में गुरुवार को 19 प्रस्ताव रखे गए, इसमें से 18 पर मुहर लगाई गई। बैठक में कैबिनेट और राज्यमंत्री के साथ नव नियुक्त मुख्य सचिव एसपी गोयल भी शामिल हुए।

प्रमुख प्रस्तावों को हरी झंडी दिखाने के साथ उप्र. में बाढ़ के ताजा हालातों पर भी खास चर्चा की गई। प्रमुख प्रस्तावों को पारित करने के ही तहत ग्रामीण क्षेत्रों में नामांतरण और संशोधन की प्रक्रिया को आसान बनाया गया है। ऐसे में कैबिनेट ने ग्रामीण आबादी के दस्तावेजों को अपडेट करने की प्रक्रिया को सरल और पारदर्शी बनाने के लिए उप्र. ग्रामीण आबादी अभिलेख विधेयक-2025 को मंजूरी दी है। यह विधेयक स्वामित्व योजना के तहत तैयार की गई घरौनियों (मालिकाना दस्तावेज) में नामांतरण, संशोधन और अपडेट की प्रक्रिया को आसान बनाएगा।

अब इससे वरासत, विक्रय, उपहार, वसीयत, नीलामी, अदालत के आदेश या पारिवारिक समझौते के आधार पर नाम बदलवाना आसान होगा। राजस्व निरीक्षक और तहसीलदार, नायब तहसीलदार को साफ-सुथरे मामलों में घरौनी अपडेट करने का अधिकार मिलेगा। लिपिकीय त्रुटि या मोबाइल नंबर-पते में सुधार के लिए भी अब आवेदन किया जा सकेगा। गौरतलब हो कि अब तक राज्य में 1.06 करोड़ से अधिक घरौनियां तैयार हो चुकी हैं, जिनमें से 1.01 करोड़ से अधिक का वितरण हो चुका है।

प्रदेश मंत्रिमंडल की बैठक के दौरान मुख्यमंत्री योगी, साथ में दोनों उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य व ब्रजेश पाठक। अमृत विचार

तीन नए निजी विश्वविद्यालय खोलने को मंजूरी

अमृत विचार : राज्य में तीन नए निजी विश्वविद्यालय खोलने को मंजूरी दी गई। इसके तहत मुजफ्फरनगर में वेदान्ता विश्वविद्यालय, बाराबंकी में बोधिसत्व विश्वविद्यालय और मथुरा में केडी विश्वविद्यालय स्थापित किए जाएंगे।

इस बाबत उच्च शिक्षा मंत्री योगेन्द्र उपाध्याय ने जानकारी दी कि कैबिनेट बैठक में तीन नए निजी विश्वविद्यालयों की स्थापना को भी सैद्धांतिक सहमति मिली है। वेदान्ता विश्वविद्यालय, मुजफ्फरनगर की स्थापना फतेह चन्द चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा मुजफ्फरनगर के ग्राम हुसैनपुर बोपाडा, तहसील खतौली में 23 .3349 एकड़ भूमि पर की जायेगी। उच्च स्तरीय समिति द्वारा 19 दिसम्बर 2024 को आयोजित बैठक में इसकी संस्तुति करते हुए आशय-पत्र निर्गत किये जाने की अनुशंसा की गई थी, जिसे अब मंजूरी दी गई है। इसके अतिरिक्त, बोधिसत्व विश्वविद्यालय, बाराबंकी की स्थापना के लिए बोधिसत्व चैरिटेबल ट्रस्ट, लखनऊ द्वारा ग्राम गदिया, परगना देवा, तहसील नवाबगंज, बाराबंकी में 25 .31 एकड़ भूमि चिन्हित की गई है। इस विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए राज्य सरकार द्वारा उत्तर प्रदेश निजी विश्वविद्यालय (तृतीय संशोधन) अध्यादेश, 2025, का प्रख्यापन किया जायेगा तथा इसके बाद संचालन प्राधिकार पत्र निर्गत किया जायेगा।

तीसरे विश्वविद्यालय के रूप में केडी विश्वविद्यालय, मथुरा की स्थापना राजीव मेमोरियल एकेडेमिक वेलफेयर सोसाइटी, मथुरा द्वारा ग्राम अकबरपुर, तहसील छाता, जनपद मथुरा में 50 .54 एकड़ भूमि पर प्रस्तावित की गई है। इसके लिए उप्र. निजी विश्वविद्यालय अधिनियम, 2019 की अनुसूची में संशोधन के लिए उत्तर प्रदेश निजी विश्वविद्यालय (चतुर्थ संशोधन) अध्यादेश, 2025 प्रख्यापित कर संचालन प्राधिकार-पत्र जारी किये जाने का फैसला लिया गया है।

होर्डिंग व प्रचार को मिलेगा अब 15 वर्ष तक का ठेका

अमृत विचार : राज्य सरकार ने शहरों में आकाश चिह्न और विज्ञापन लगाने का लाइसेंस देने की व्यवस्था को बदला है। इसके लिए अब 15 वर्षों तक का ठेका दिया जाएगा। यह ठेका अभ तक केवल दो वर्ष के लिए मिलता था। व्यवस्था बदलने के लिए सरकार ने उप्र नगर निगम अधिनियम 1959 की धारा 305 में संशोधित कर दिया है। इससे संबंधित प्रस्ताव को कैनिबेट ने मंजूरी दे दी है।

केजीएमयू कार्यपरिषद में ओबीसी व एससी के होंगे सदस्य

अमृत विचार : कैबिनेट के एक निर्णय के अनुसार, किंग जार्ज चिकित्सा विश्वविद्यालय की कार्यपरिषद में पिछड़ा वर्ग और अनुसूचित जाति अथवा जनजाति वर्ग का एक-एक प्रतिनिधि रखा जाएगा। इसके लिए विश्वविद्यालय के अधिनियम 2002 में संशोधन करते हुए धारा-24(1)(ए) शामिल की जाएगी। बदलाव संबंधी विधेयक को राज्य विधान मंडल के आगामी सत्र में रखने संबंधी प्रस्ताव को बुधवार को मंत्रिमंडल में मंजूरी दे दी गई है। केजीएमयू की कार्य परिषद में पिछड़े वर्ग और अनुसूचित जाति, जनजाति का प्रतिनिधि रखने की लंबे समय से मांग की जा रही है।

विधानसभा में पेश होगी सीएजी रिपोर्ट

अमृत विचार : 11 अगस्त से शुरू हो रहे विधानसभा सत्र में ग्रेटर नोएडा औद्योगिक विकास प्राधिकरण (ग्रेनो) में भूमि अर्जन एवं परिसंपत्तियों के आवंटन की भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया जाएगा। इससे पहले राज्यपाल की अनुमति भी ली जानी है। साथ ही छठे राज्य वित्त आयोग (पंचायती राज और स्थानीय निकाय) की अंतरिम रिपोर्ट व राज्य सरकार की कार्यवाही ज्ञापन को भी सदन में पेश किया जाना है, मंत्रिमंडल ने प्रस्ताव परित किया है।

औद्योगिक भूखंडों की दर क्षेत्रवार तय लेदर फुटवियर नीति को भी मंजूरी

अमृत विचार, लखनऊ : कैबिनेट ने प्रदेश के औद्योगिक विकास को गति देने के उद्देश्य से दो महत्वपूर्ण नीतियों को मंजूरी दी है। एमएसएमई एवं निर्यात प्रोत्साहन मंत्री राकेश सचान ने बताया कि दोनों नीतियों से न केवल औद्योगिक आधारभूत ढांचे को मजबूती मिलेगी, बल्कि लाखों युवाओं के लिए रोजगार के नए अवसर भी बनेंगे। उप्र. सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम औद्योगिक आस्थान प्रबंधन नीति के अंतर्गत अब औद्योगिक भूखंडों, शेडों का आवंटन लीज, रेंट के आधार पर ई-ऑक्शन से किया जाएगा।

भूखंडों की दर क्षेत्रवार तय की गई है, जिसमें पश्चिमांचल में 3000 रुपये, मध्यांचल में 2500 रुपये और पूर्वांचल, बुंदेलखंड में 2000 रुपये प्रति वर्गमीटर आरक्षित मूल्य रखा गया है। इसके साथ ही हर वर्ष 5 प्रतिशत की दर से मूल्य वृद्धि होगी। दूसरी ओर, उत्तर प्रदेश फुटवियर, लेदर और नॉन-लेदर क्षेत्र विकास नीति-2025 को भी स्वीकृति दी गई है। इस नीति के जरिए निर्यात में बढ़ोतरी, तकनीकी उन्नयन, और रोजगार सृजन के लिए विशेष प्रोत्साहन प्रदान किया जाएगा। कुशल श्रमिकों के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम भी संचालित होंगे। इस नीति से घरेलू और विदेशी निवेश को आकर्षित करने में मदद मिलेगी।

इसी क्रम में राज्य के 62 जिलों में असफल हो चुके 1750 सरकारी नलकूपों का पुनर्निर्माण किया जाएगा, जिससे लगभग 2.4 लाख लघु और सीमांत किसानों को लाभ मिलेगा।

12 करोड़ रुपये से होगा 60 लाख झंडों का वितरण

अमृत विचार : स्वतंत्रता दिवस 2025 के उपलक्ष्य में प्रदेशभर में हर घर तिरंगा कार्यक्रम को भव्य रूप से आयोजित करने के लिए गुरुवार को मंत्रिपरिषद द्वारा नगर निकायों को राज्य वित्त आयोग की धनराशि से झंडों की व्यवस्था किए जाने के प्रस्ताव को मंजूरी प्रदान की गई। यह कार्यक्रम 2 अगस्त से 15 अगस्त तक पूरे प्रदेश में संचालित किया जाएगा। इस विशेष अभियान के अंतर्गत शहरी गरीब क्षेत्रों में 60 लाख झंडों का नि:शुल्क वितरण किया जाएगा। इसके लिए 12 करोड़ रुपये की राशि राज्य वित्त आयोग की धनराशि से नगर निकायों को उपलब्ध कराई जा रही है। यह झंडे नगर विकास विभाग के अंतर्गत राज्य शहरी आजीविका मिशन से जुड़े स्वयं सहायता समूहों द्वारा तैयार किए जाएंगे, जिससे लगभग 29,000 महिलाओं को रोजगार मिलेगा और स्थानीय अर्थव्यवस्था को भी बल मिलेगा।

बहनों के साथ एक सहयात्री को भी मुफ्त यात्रा की सुविधा

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

- मुख्यमंत्री के निर्देश पर रक्षाबंधन पर परिवहन निगम समेत सिटी बसों के लिए आदेश जारी

अमृत विचार : मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देश पर परिवहन निगम समेत सभी सिटी बसों में रक्षाबंधन पर बहनों-माताओं के साथ एक सहयात्री को भी तीन दिन मुफ्त यात्रा की सुविधा रहेगी। यह आदेश परिवहन विभाग और नगर विकास विभाग की ओर से जारी कर दिए गए हैं।

परिवहन राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) दयाशंकर सिंह ने बताया कि मुख्यमंत्री के आदेश पर रक्षाबंधन पर्व पर यूपीएसआरटीसी द्वारा संचालित समस्त श्रेणी की बसों में माताओं, बहनों एवं बेटियों को एक सहयात्री के साथ मुफ्त यात्रा की सुविधा मुहैया कराई जाएगी। यह सुविधा 8 अगस्त को सुबह छह बजे से 10 अगस्त की रात्रि 12 बजे तक उपलब्ध रहेगी। उधर, नगर विकास विभाग के प्रमुख सचिव अमृत अभिजात ने बताया कि नगरीय परिवहन निदेशालय द्वारा संचालित सिटी बसों में बहनों के साथ यात्रा करने वाले एक सहयात्री के लिए भी तीन दिन निःशुल्क यात्रा की सौगात दी गई है। यह सुविधा प्रदेश के विभिन्न शहरों में संचालित सिटी बसों पर लागू होगी, जिससे महिलाओं को अपने गंतव्य तक पहुंचने में आसानी होगी।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की पहल पर शुरू की गई इस योजना के तहत बीते 8 वर्षों में अब तक 1,23,30,194 महिलाएं लाभान्वित हो चुकी हैं।

मंदिरों का सरकारी पोर्टल से होगा सजीव प्रसारण

एक ही पोर्टल पर अयोध्या, काशी, मथुरा समेत प्रदेश के सभी मंदिर होंगे लाइव

धीरेंद्र सिंह, लखनऊ

- राज्यपाल ने दी एक करोड़ की अनुमन्य धनराशि में से 45.14 लाख की मंजूरी
- यूपी इलेक्ट्रॉनिक्स कॉर्पोरेशन लि. को दी गई जिम्मेदारी

अमृत विचार : मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ प्रसिद्ध मंदिरों को सरकारी पोर्टल से सजीव प्रसारण का बड़ा तोहफा देने जा रहे हैं। घर बैठे जिस भी मंदिर का चाहें, उसकी पूजा-परंपरा और आरती में हिस्सा ले सकते हैं। अयोध्या, काशी, मथुरा समेत हर जिले में धार्मिक स्थलों-तीर्थों और पीठों का कायाकल्प करने के बाद इस कदम से अर्थव्यवस्था को जहां नई ऊंचाई मिलेगी, वहीं लोगों को रोजगार भी मिलेगा। पोर्टल के लिए राज्यपाल ने एक करोड़ की अनुमन्य धनराशि में से 45.14 लाख की मंजूरी दी है। इसे विकसित करने का जिम्मा यूपी इलेक्ट्रानिक्स कार्पोरेशन लि. को दिया गया है।

गोरक्षपीठाधीश्वर योगी आदित्यनाथ पिछले आठ साल से मुख्यमंत्री की कमान संभालने के बाद राज्य के आस्था और धार्मिक पर्यटन केंद्रों को खास महत्व देते आ रहे हैं। अयोध्या, काशी और मथुरा का कायाकल्प तो हुआ ही, पूरे प्रदेश में शहर से लेकर गांव-गांव तक के प्रसिद्ध मंदिरों-तीर्थों और सिद्ध पीठों पर अरबों रुपये खर्च करके चमकाया गया है। इससे भक्तों और पर्यटकों के आने से इलाके की आर्थिक तस्वीर बदल ही रही है, साथ में राज्य की अर्थव्यवस्था भी शिखर चूम रही है। आंकड़े बताते हैं कि साल 2017 में जहां लगभग 24 करोड़ पर्यटक प्रदेश में आए थे, वहीं दिसबंर 2024 तक यह संख्या बढ़कर लगभग 65 करोड़ तक पहुंच गई। यानी पिछले 8 वर्षों में प्रदेश ने 41 करोड़ पर्यटकों की वृद्धि दर्ज हुई है।

अब योगी सरकार सभी मंदिरों को एक ऑनलाइन पोर्टल विकसित करने जा रही है। इसका नाम ऑनलाइन एकीकृत मंदिर सूचना प्रणाली (आईटीआईएमएस) पोर्टल रखा गया है। मुख्यमंत्री योगी के निर्देश पर धर्मार्थ कार्य विभाग ने इसका डोमेन नाम (www.upitims.in) बीते 21 अप्रैल को ही सुरक्षित कर लिया था। सरकार के प्रस्ताव पर इस पोर्टल के लिए एक करोड़ रुपये की अनुमन्य धनराशि में से 45 लाख 14 हजार 574 रुपये की स्वीकृति राज्यपाल आनंदी बेन पटेल ने दे दी है। यह धनराशि उप्र इलेक्ट्रानिक्स कारपोरेशन लि. लखनऊ के पक्ष में जारी हुई, जो पोर्टल को विकसित करेगा।

जिलाधिकारी देंगे मंदिरों की समग्र सूचनाएं

आईटीआईएमएस पोर्टल पर मंदिरों से संबंधित समग्र सूचनाएं जिलाधिकारी के माध्यम से आएगी। शासन ने धर्मार्थ कार्य विभाग के निदेशक को निर्देश दिया है कि संबंधित सूचनाओं को अपलोड किए जाने के लिए जिलों को मार्गदर्शन करने

पोर्टल पर देख-सुन सकेंगे आस्था की कहानी

मंदिरों का संख्या हजारों में होने से पोर्टल की क्षमता आईजीआरएस से भी अधिक मजबूत की जा रही है। यहां हर मंदिर की प्राचीनता और देवी-देवताओं का महत्व, पर्व-त्योहार, आस्था की कहानियों और मनीषियों के साहित्य देख-सुन व पढ़ सकेंगे। साथ ही एक क्लिक से पूजा, आरती, राग-भोग आदि में सीधे भागीदार महसूस कर सकेंगे। पोर्टल पर संबंधित धार्मिक स्थल पर कैसे पहुंचा जा सकता है, इलाके का खान-पान, होटल, सराय, होमस्टे आदि का भी ब्योरा होगा।

सोनभद्र में विकसित होगा धार्मिक पर्यटन और कैंपिंग सर्किट

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

- समाज कल्याण और वन विभाग के राज्यमंत्रियों की साझा बैठक में बनी सहमति

अमृत विचार : सोनभद्र में धार्मिक, पर्यटन और कैम्पिंग सर्किट विकसित होगा। सोनभद्र, चंदौली व मीरजापुर में वनाधिकार प्रमाण पत्र के प्रकरण निस्तारित किये जाएंगे। इसके लिए निदेशक जनजातीय व वन विभाग की संयुक्त टीम मौके पर जाकर अभिलेखों की जांच करेंगी। गुरुवार को भागीदारी भवन में हुई समाज कल्याण व वन विभाग के राज्यमंत्रियों की साझा समीक्षा बैठक में इस पर सहमति बनी।

चर्चा के दौरान बताया गया कि सोनभद्र को विकसित किये जाने से न सिर्फ स्थानीय स्तर पर रोजगार का सृजन होगा बल्कि विभिन्न तरह के पर्यटन को भी बढ़ावा मिलेगा। बैठक के बाद समाज कल्याण राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) असीम अरुण ने बताया कि सोनभद्र, चंदौली और मीरजापुर जिलों में वनाधिकार प्रमाण पत्रों के प्रकरणों में एकरूपता जांचने के लिए निदेशक जनजातीय विभाग और वन विभाग से प्रधान मुख्य वन संरक्षक (सीसीएफ) की संयुक्त टीम मौके पर जाएगी। टीम मौके पर प्रवास कर कागजात की जांच पड़ताल करेगी। बैठक में वन राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) अरुण कुमार सक्सेना और समाज कल्याण राज्य मंत्री संजीव कुमार गोंड उपस्थित रहे।

वन क्षेत्र में तलाशी जाएंगी संभावनाएं

टीम इस पर जोर देगी कि वन की भूमि को कुछ शर्तों के साथ उपयोग कैसे किया जा सकता है। इसे कैसे आगे बढ़ाया जा सकता है। टीम यह भी संभावना तलाशेगी कि वन क्षेत्र का ऐसा उपयोग 'फॉरेस्ट कवर' बढ़ने के साथ ही, वन का उपयोग बढ़ाये जाने व स्थानीय लोगों की आय में बढ़ोतरी पर जोर देगी।

काकोरी ट्रेन एक्शन शताब्दी समारोह का आज समापन करेंगे मुख्यमंत्री योगी

अमृत विचार, लखनऊ : मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ शुक्रवार सुबह 10 बजे काकोरी शहीद स्मारक जाकर काकोरी ट्रेन एक्शन शताब्दी समारोह का समापन करेंगे। उधर, मुख्य सचिव एसपी गोयल ने सभी एसीएस, प्रमुख सचिव, सचिव, मंडलायुक्त और जिलाधिकारियों को काकोरी ट्रेन एक्शन शताब्दी समारोह के समापन पर शहीद स्मारकों, स्मृति स्थलों, अमृत सरोवरों, वाटिकाओं पर वृहद रूप से राष्ट्रभक्ति के ओतप्रोत कार्यक्रमों के आयोजन का निर्देश दिया है। गोयल ने निर्देश दिए कि विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस पर 14 अगस्त को लखनऊ समेत 75 जिलों में तय स्थलों पर बंटवारे के दर्द से जुड़ी प्रदर्शनी लगाएंगे और कार्यक्रम आयोजित करके लोगों को एकता, सद्भाव और सशक्तिकरण का संदेश दिया जाएगा।

रायबरेली के मंदिरों का 5.75 करोड़ रुपये से होगा विकास

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

- ठाकुर बाबा मंदिर, परशुराम घाट सहित सात परियोजनाएं मंजूर

अमृत विचार : मुख्यमंत्री पर्यटन स्थल विकास योजना के तहत रायबरेली के मंदिर परिसरों और उनके आसपास के क्षेत्रों का पर्यटन विकास किया जाएगा। इसके लिए 5.75 करोड़ रुपये की धनराशि स्वीकृत की है।

पर्यटन मंत्री जयवीर सिंह ने बताया कि विकासखंड डीह स्थित ठाकुर बाबा मंदिर ग्राम किन्नावा के लिए एक करोड़ रुपये, परशुराम घाट के लिए एक करोड़ रुपये, ग्राम पंचायत चितचनियां स्थित शिव मंदिर, ग्राम कत्रावां बछरावां में मुडियाडीह आश्रम और चामुंडा शक्तिपीठ प्राचीन मंदिर के विकास के लिए एक-एक करोड़ रुपये स्वीकृत हुए हैं। ग्राम सभा कोडरस बुजुर्ग स्थित बुढ़ेश्वर मंदिर के के लिए 75 लाख रुपये की, हरचंदपुर के गहिरेश्वर बाबा गहिरी स्थल के विकास के लिए 50-50 लाख रुपये तथा विकास खंड सरेनी के तेलारकुटी व बाजपेईपुर स्थित गेगासो मां गंगा तट पर पर्यटन कार्यों के लिए 50 लाख रुपये की मंजूरी दी गई है।

350 नई परियोजनाओं के लिए 359.85 करोड़ का बजट

पर्यटन मंत्री जयवीर सिंह ने बताया कि मुख्यमंत्री पर्यटन स्थल विकास योजना अंतर्गत वर्तमान वित्तीय वर्ष के मूल बजट में 4,400 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है। इसमें 350 नई परियोजनाओं के लिए अनुमानित धनराशि 359 .85 करोड़ रुपये रखी गई है। इसके अलावा अगले वर्ष की क्रियान्वित परियोजनाओं के लिए 280 करोड़ रुपये की धनराशि अनुमोदित की गई है।

केंद्र सरकार की विदेश नीति फेल : अखिलेश

अमृत विचार, लखनऊ : सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने कहा है कि केन्द्र सरकार की विदेश नीति पूरी तरह से फेल है। जिस तरह से लगातार पाबंदिया लग रही हैं, उससे अर्थव्यवस्था संकट में हैं। देश संकट में हैं। भारत चौतरफा घिर गया है। सरकार को देश, किसानों और कारोबारियों के हितों के बारे में सोचना चाहिए।

सपा प्रमुख बुधवार को संसद परिसर में मीडिया से बात कर रहे थे। उन्होंने कहा कि उद्योग और उद्योगपति खत्म हो रहे हैं। किसान बर्बाद हो रहा है। नौजवान को नौकरी और रोजगार नहीं मिल रहा है। देश कहां जा रहा है। भाजपा सरकार के लोग दावा करते थे कि दुनिया में डंका बज रहा है।

कवायद

10 मंडलों के प्रत्येक कार्यालय में तीन अस्थाई पद होंगे सृजित

क्षेत्रीय उच्च शिक्षा अधिकारी कार्यालय होंगे स्थापित

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

- सहायक सेवाओं के लिए आउटसोर्सिंग के माध्यम से की जाएगी नियुक्ति

अमृत विचार: राज्य सरकार ने प्रदेश के 10 मंडलों अलीगढ़, आजमगढ़, प्रयागराज, चित्रकूट, देवीपाटन, अयोध्या, बस्ती, विंध्याचल, मुरादाबाद और सहारनपुर में क्षेत्रीय उच्च शिक्षा अधिकारी कार्यालयों की स्थापना को स्वीकृति दे दी है। इस निर्णय से स्थानीय स्तर पर उच्च शिक्षा संस्थानों की निगरानी, मूल्यांकन एवं समन्वयन की प्रक्रिया को गति मिलेगी।

उच्च शिक्षा मंत्री योगेन्द्र उपाध्याय ने जानकारी दी कि प्रत्येक क्षेत्रीय कार्यालय में तीन पदों क्षेत्रीय उच्च शिक्षा अधिकारी, सहायक लेखाधिकारी एवं कनिष्ठ सहायक की अस्थायी सृजन की अनुमति प्रदान की गई है, जो 28 फरवरी 2026 तक प्रभावी रहेगी। कुल 30 पद (प्रत्येक मंडल के लिए 3 पद) सृजित किए जाएंगे, जिन पर नियमानुसार पदस्थापन किया जाएगा। इनमें से क्षेत्रीय उच्च शिक्षा अधिकारी का पद राजकीय महाविद्यालयों के प्राचार्यों के स्थानांतरण द्वारा भरा जाएगा, जबकि शेष दो पदों पर चयन वित्त विभाग एवं अधीनस्थ सेवा चयन आयोग द्वारा निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार किया जाएगा।

इन कार्यालयों के संचालन में सहायक सेवाओं के लिए मानवशक्ति की व्यवस्था भी आउटसोर्सिंग के माध्यम से की जाएगी। इस क्रम में प्रत्येक मंडल में एक-एक कम्प्यूटर आपरेटर, वाहन चालक, सफाईकर्मी तथा दो-दो परिचर, चौकीदार नियुक्त किए जाएंगे। इस प्रकार कुल 50 पदों के समतुल्य मानवशक्ति की तैनाती की जाएगी, जिनकी सेवाएं निर्धारित योग्यता एवं मानकों के अनुरूप क्रय की जाएंगी। सातवें वेतन आयोग के अनुसार देय वेतनमान एवं भत्ते लागू होंगे।

महिला छात्रावास का वर्चुअल शिलान्यास

अमृत विचार : केंद्र सरकार की प्रधानमंत्री उच्चतर शिक्षा अभियान (पीएम उषा) के तहत कु. मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर, गौतम बुद्ध नगर में महिला छात्रावास निर्माण का वर्चुअल शिलान्यास गुरुवार को उच्च शिक्षा मंत्री योगेन्द्र उपाध्याय ने किया। इस दौरान प्रमुख सचिव, उच्च शिक्षा विभाग एमपी अग्रवाल, निदेशक उच्च शिक्षा अमित भारद्वाज समेत अन्य अधिकारी मौजूद रहे।

निकांत जैन के पांच ठिकानों पर ईडी का छापा

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

- यूपी इन्वेस्ट के सीईओ व निलंबित आईएएस अधिकारी अभिषेक प्रकाश का है करीबी
- लखनऊ, मेरठ और नोएडा में ईडी ने की कार्रवाई

अमृत विचार : यूपी इन्वेस्ट के पूर्व सीईओ व निलंबित आईएएस अधिकारी अभिषेक प्रकाश के करीबी निकांत जैन के पांच ठिकानों पर प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की टीम ने गुरुवार को छापा मारा है। पांच ठिकानों में दो लखनऊ, मेरठ के घर व कार्यालय और एक नोएडा के ठिकानों पर टीम ने कार्रवाई की है। वहीं होटल रेग्रेंट के मालिक राजेंद्र बग्गा के घर पहुंची टीम ने छापा मारा। राजेंद्र बग्गा गोल्डन ब्लॉसम रिसॉर्ट के पार्टनर है। ईडी की टीम ने कई अहम दस्तावेज बरामद किये हैं।

औद्योगिक इकाई लगाने के लिए रिश्वत मामले में निलंबित चल रहे आईएएस अधिकारी अभिषेक प्रकाश के करीबी निकांत जैन के खिलाफ ईडी ने बड़ी कार्रवाई की। ईडी ने निकांत के परिचित व करीबी होटल मालिक राजेंद्र बग्गा के ठिकानों पर भी छापा मारा है। इस दौरान सबसे अधिक समय तक टीम निकांत के दो आवास विशाल व विरामखंड और कार्यालय में बिताया। ईडी के अनुसार निकांत और राजेंद्र बग्गा के साथ काफी बड़े लेनदेन हुए हैं। जिसके दस्तावेज भी ईडी को मिले। वहीं तीन टीम मेरठ और एक टीम नोएडा में छापा मारा। मेरठ के रेलवे रौड पर निकांत जैन का घर और पास में ही कार्यालय है। छापेमारी के दौरान ईडी ने कई अहम दस्तावेज कब्जे में लिये हैं। ईडी यह पता कर रही है कि राजेंद्र के साथ किन मामलों में ये बड़े लेनदेन हुए हैं।

जेल में है आरोपी, पांच खातों में करोड़ों के लेनदेन

निकांत जैन को रिश्वत मामले में 20 मार्च को गिरफ्तार किया गया था। 65 दिन बाद जमानत मिली थी, लेकिन उसके खिलाफ एक और मामला दर्ज हो गया। जिसके कारण वह अभी जेल में हैं। प्रवर्तन निदेशालय की टीम गुरुवार सुबह केंद्रीय सुरक्षा बल के साथ विराम खंड स्थित निकांत जैन के घर और कार्यालय गयी। जहां काफी देर तक जांच की । इसके बाद वह तीन अन्य स्थानों पर भी गई। ईडी सूत्रों के मुताबिक निकांत के घर कई ऐसे दस्तावेज मिले हैं, जिसमें कई नई जानकारियां हैं। इससे पहले ईडी ने जब छापा मारा था तो ये दस्तावेज हाथ नहीं लगे थे। कुछ महीनों से इस प्रकरण में ईडी कोई कार्रवाई नहीं कर रही थी। ईडी के सूत्रों के मुताबिक दो दिन के अंदर निकांत जैन और उनके परिवारीजनों के पांच और खातों के बारे में जानकारी मिली थी। इन खातों में ही करोड़ों रुपये के लेनदेने किये गये थे। इसकी पुष्टि होने के बाद ईडी ने गुरुवार को कार्रवाई की।

न्यूज ब्रीफ

डंपर की टक्कर से ऑटो चालक की मौत

बिधनू। धीरपुर निवासी किसान जगमोहन कुशवाह का 27 वर्षीय बेटा शिव सिंह ऑटो चलाता था। बुधवार देर रात करीब 12 :30 बजे वह ऑटो लेकर शंभुआ से घर लौट रहा था। आरओबी पुल उतरते ही वह धीरपुर गांव की ओर ऑटो मोड़ने लगा। तभी पीछे से आ रहे तेज रफ्तार डंपर ऑटो को टक्कर मारता हुआ निकल गया। इसके चलते ऑटो बीच हाईवे पर पलट गया और शिव सिंह ऑटो के नीचे दब गया। साथ ही ऑटो में शार्टसर्किट से आग भी लग गई। इस दौरान पास से निकल रहे कार सवार तीन युवकों ने चालक को ऑटो से बाहर निकालकर सीएची बिधनू में भर्ती कराया। वहांपर मौजूद डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। घटना की जानकारी पर पहुंची पुलिस ने आग बुझाकर ऑटो को हाईवे से किनारे किया और मृतक के स्वजनों को सूचना दी। थाना प्रभारी जितेंद्र प्रताप सिंह ने बताया कि देर रात का फायदा उठाकर घटना के बाद चालक डंपर समेत मौके से भाग निकला। तहरीर के आधार पर मुकदमा दर्ज कर कार्रवाई की जाएगी।

दबंगों ने घर में घुस कर युवती को पीटा

बिल्हौर। ककवन थाना क्षेत्र के एक गांव में एक युवती पर घर के अंदर घुसकर जानलेवा हमला किया गया। पीड़ित युवती की मां ने पुलिस को दी तहरीर में बताया कि छह अगस्त की शाम करीब 7 बजे जब महिला किसी काम से घर के बाहर थी, उनकी बेटी घर पर अकेली थी। उसी समय, मोहल्ले का अमित बुरी नीयत से घर में घुस आया और उसके साथ अभद्रता करने करने लगा। जब युवती ने इसका विरोध किया, तो अमित ने अपने भाई लखन को बुला लिया। दोनों भाइयों ने रूबी पर धारदार हथियार से हमला कर दिया, जिससे वह बेहोश होकर जमीन पर गिर गई। जब वह घर पहुंची तो उसे घटना की जानकारी हुई। उसने बताया कि पुत्री को गंभीर चोटें आई हैं महिला ने थाने में अमित कुमार और लखन के खिलाफ प्रार्थना पत्र दिया है।

वाहन की टक्कर से युवक की मौत

हमीरपुर। हाईवे पर जेके सीमेंट के आगे पैदल जा रहे अज्ञात युवक को अज्ञात वाहन ने टक्कर मार दी। जिससे उसकी मौके पर मौत हो गई। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर मोर्चरी में रखवाया है। फैक्टरी चौकी इंचार्ज राजवीर सिंह ने बताया कि सूचना मिली है कि एक व्यक्ति की जेके सीमेंट के आगे हाईवे पर अज्ञात वाहन की टक्कर से मौत हो गई है। लेकिन शिनाख्त नहीं हो सकी है। इसलिए शव को कब्जे में लेकर मोर्चरी में रखवाया गया है।

पात्र मतदाता छूटने न पाए और अपात्र मतदाता सूची में न रहें

बूथ लेवल ऑफिसर का तीन पालियों में हुआ प्रशिक्षण

संवाददाता बिल्हौर

बीएलओ को प्रशिक्षण देते अधिकारी। अमृत विचार

अमृत विचार। गुरुवार को बिल्हौर और ककवन में त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव के लिए नियुक्त किए गए बूथ लेवल ऑफिसर (बीएलओ) का तीन पालियों में प्रशिक्षण संपन्न हुआ। यह प्रशिक्षण मतदाता सूची में दर्ज नामों के सत्यापन, परिवर्धन, विलोपन और संशोधन जैसे महत्वपूर्ण कार्यों को पूरी पारदर्शिता के साथ करने के लिए आयोजित किया गया था।

प्रशिक्षण देने आये अधिकारियों ने प्रशिक्षण के दौरान बीएलओ को घर-घर जाकर मतदाताओं का सत्यापन करने के तरीके बताए। उन्हें यह सुनिश्चित करने को कहा कि कोई भी पात्र मतदाता छूट न जाए और अपात्र व्यक्ति का नाम सूची में न रहे। इस प्रक्रिया में परिवर्धन (नए नाम जोड़ना), विलोपन (हटाना) और संशोधन (सुधार) जैसे कार्य शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, बीएलओ को चुनाव आयोग द्वारा विकसित बीएलओ एप के बारे में भी विस्तृत जानकारी दी गई। इस एप की मदद से बीएलओ अपने काम को और भी तेजी और सटीकता से कर सकेंगे। एप के जरिए वे सीधे तौर पर जानकारी अपडेट कर सकते हैं, जिससे पूरी प्रक्रिया में पारदर्शिता बनी रहेगी। इस प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि आने वाले पंचायत चुनावों के लिए एक त्रुटिहीन और विश्वसनीय मतदाता सूची तैयार हो सके। अधिकारियों ने सभी बीएलओ से इस कार्य को पूरी निष्ठा और ईमानदारी के साथ करने की अपील की है। प्रशिक्षण के मौके पर बीईओ रवि कुमार सिंह ,नायाब तहसील दार दिव्या और सी पी राजपूत मौजूद रहे जबकि कई गांव के बीएलओ भी मौजूद रहे।

राखियों की खरीदारी करती महिलायें। अमृत विचार

जरकन व कार्टून वाली राखियां पहली पसंद

संवाददाता, चौबपुर

अमृत विचार। रक्षाबंधन पर्व को लेकर कस्बे में जगह-जगह राखी की दुकानें सज गई हैं, जिसके चलते बाजारों में जबरदस्त रौनक देखी गई। त्योहार से पहले गुरुवार को बाजार में राखी की खरीदारी के लिए महिलाओं व युवतियों की भारी भीड़ उमड़ी।

रक्षाबंधन पर्व को लेकर कस्बे में बिठूर रोड तिराहे से लेकर बंदी माता तिराहे तक जीटी रोड के किनारे दोनों ओर आधा सैकड़ा से अधिक दुकानें सजी हुई हैं। इसी तरह बेला मार्ग पर भी बड़ी संख्या में दुकानदारों ने राखी की दुकानें सजाई हैं। पर्व से पहले गुरुवार को कस्बे में बाजार का दिन होने के कारण दुकानों पर सुबह से ही महिलाओं की भारी भीड़ नजर आई। राखी विक्रेता शिबू गुप्ता, अभिषेक शर्मा,सोनू पटवा व रामजी चौरसिया आदि ने बताया कि बीते वर्ष की तरह इस बार भी जरकन वाली राखी की मांग अधिक है। वहीं बच्चों में कार्टून वाली राखियां पहली पसंद बनी हुई है। इसके अलावा रेशमी धागे भी लोगों की पसंद बने हुए हैं। राखी खरीदने के लिए सुबह से देर शाम तक कस्बे में खूब चहल पहल बनी रही। वहीं दूसरी ओर त्योहार पर मिष्ठान के महत्व के चलते मिठाई की भी जमकर खरीदारी शुरू हो गई है।

किशोरी से दुष्कर्म के आरोपी पकड़े गये

फतेहपुर

- आरोपियों ने दुष्कर्म की घटना का वीडियो भी बना लिया था

अमृत विचार। जिले के हुसैनगंज थाना क्षेत्र में एक 10 वर्षीय लड़की के साथ पड़ोस के चार नाबालिग लड़कों ने दुष्कर्म किया। घटना 13 जून को हुई जब पीड़िता बकरी चराने जंगल गई थी। आरोपियों ने न केवल दुष्कर्म किया बल्कि इसका वीडियो भी बना लिया।

मामला तब सामने आया जब पीड़िता की भतीजी ने एक आरोपी से मोबाइल गेम खेलने के लिए फोन लिया। फोन में दुष्कर्म का वीडियो देखकर घटना का खुलासा हुआ। पूछताछ में पीड़िता ने चारों किशोरों का नाम बताया। पीड़िता के पिता की शिकायत पर पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है। आरोपियों में दो 13 वर्ष के, एक 12 वर्ष का और एक 14 वर्ष का किशोर शामिल है। पुलिस ने चारों आरोपियों को हिरासत में लेकर प्रयागराज बाल न्यायालय भेज दिया है। डीएसपी गौरव वर्मा ने बताया कि आरोपियों का मोबाइल फोन जब्त कर लिया गया है। हालांकि पीड़िता मेडिकल जांच के लिए तैयार नहीं है, फिर भी मोबाइल पर मिले वीडियो के आधार पर और अदालत में बच्ची के बयान के बाद चार्जशीट दाखिल की जाएगी।

अपना दल की बैठक में बनाई पंचायत चुनाव की रणनीति

फतेहपुर

- जिला अध्यक्ष शैलेंद्र पटेल की अध्यक्षता में हुई बैठक
- 2027 के चुनाव के लिये अभी से तैयारी शुरू करें कार्यकर्ता

अमृत विचार। जिले में अपना दल की मासिक बैठक गुरुवार को पार्टी कार्यालय में जिला अध्यक्ष शैलेंद्र पटेल की अध्यक्षता में संपन्न हुई। बैठक में संगठन को मजबूत करने, सदस्यता बढ़ाने और आगामी पंचायत चुनाव की रणनीति पर विचार-विमर्श किया गया।

प्रदेश सचिव (सहकारिता मंच) लखन सिंह मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन जिला महासचिव अरुण पटेल ने किया। बैठक में संगठन में नए पदाधिकारियों की नियुक्ति भी की गई। चिकित्सा मंच में डॉ. नंदराम शर्मा को जिला महासचिव, डॉ. वीरेंद्र लोधी को महासचिव और अरुण मौर्य को महासचिव बनाया गया। इसके अलावा घनश्याम पटेल और अमित पटेल को जिला उपाध्यक्ष नियुक्त किया गया। जिला अध्यक्ष शैलेंद्र पटेल ने कहा कि पार्टी की जिला इकाई लगातार सक्रिय हो रही है। उन्होंने बताया कि 2027 के विधानसभा चुनाव की तैयारी अभी से शुरू कर दी गई है।

बैठक में सभी कार्यकर्ताओं से संगठन को बूथ स्तर तक मजबूत करने का आह्वान किया गया। इस अवसर पर अपना दल के सैकड़ों कार्यकर्ता और पदाधिकारी मौजूद रहे। बैठक में 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस धूमधाम से मनाने की योजना पर भी चर्चा की गई।

ग्राम रोजगार सेवकों ने अनिश्चित कालीन धरना शुरू किया

बिधनू। मानदेय न मिलने से नाराज ग्राम रोजगार सेवकों ने बिधनू विकास खंड परिसर में गुरुवार को अनिश्चित कालीन धरना शुरू किया। धरने पर बैठे 24 रोजगार सेवकों का आरोप है कि उन्हें वर्ष 2022 से अब तक कोई मानदेय नहीं दिया गया, जबकि प्रति माह 7800 रुपये मानदेय तय हुआ था।

ग्राम रोजगार सेवक संघ की अध्यक्ष रंजना सिंह की अगुवाई में बिधनू विकास खंड परिसर में गुरुवार को अनिश्चित कालीन धरना शुरू किया किया गया। धरने पर बैठे रोजगार सेवकों ने आरोप लगाया कि अधिकारियों की लापरवाही और उदासीनता के कारण वर्षों से कार्य करने के बावजूद रोजगार सेवकों को उनका हक नहीं मिल रहा। उन्होंने कहा कि ग्राम पंचायतों में विकास कार्यों के संचालन में सबसे अहम भूमिका रोजगार सेवकों की होती है, फिर भी उन्हें लगातार नजर अंदाज किया जा रहा है। सभी ने चेतावनी दी कि जल्द भुगतान नहीं किया गया तो आमरण अनशन पर बैठेंगे।

किराना सामान लदे ट्रक को पकड़ा गया

हमीरपुर। बांधुर तिराहा के पास अपने वाहन को अधिकारियों ने ट्रक के आगे लगा दिया। चालक लदे सामान के कागजात नहीं दिखा सका। इस पर ट्रक को थाने में खड़ा कर पुलिस के सुपुर्द कर दिया।

चार पीपों का बना पुल यमुना में बहा

फतेहपुर। बाढ़ के पानी में कमी आने के बावजूद युमना का बहाव अभी भी तेज है। इसी बीच खागा तहसील क्षेत्र के ऐरई गांव के पास यमुना नदी में चार पीपों का बना एक पुल तेज बहाव में बहता हुआ दिखाई दिया। ग्रामीणों ने इसका वीडियो बनाकर शेयर कर दिया।

गांव के निवासी कल्याण सिंह ने बताया कि यमुना का जलस्तर कम हुआ है, लेकिन पानी का बहाव अभी भी तेज है। इसी कारण कहीं से चार पीपों का पुल और लोहे की चादर बहकर आ गई है। बता दें कि यमुना में आई बाढ़ के कारण कटरी क्षेत्र के लगभग 40 गांव जलमग्न हो गए थे। अब पानी कम होने के साथ इन गांवों में स्थिति सामान्य होने लगी है। स्थानीय प्रशासन बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों पर नजर रखे हुए है।

सूचना

सूचित किया जाता है कि मेरा नाम पूर्व में रेखा देवी (REKHA DEVI) था। जिसे परिवर्तित कर मैंने भोली (BHOLI) कर लिया है। अब भविष्य में मुझे भोली (BHOLI) के नाम से ही जाना व पहचाना जाये। **भोली पत्नी राकेश कुमार, निवासिनी– रामगंज, लखापुर, बन्थर, जिला उन्नाव (उ0प्र0) मो0नं0– 7521904145**

घटिया शौचालय निर्माण पर लगाई रोक

संवाददाता बिल्हौर

अमृत विचार। बिल्हौर नगर पालिका क्षेत्र में जूनियर हाई स्कूल विद्यालय में नगर पालिका की ओर से नामित की गई कंपनी के द्वारा शौचालय का निर्माण कार्य कराया जा रहा था। स्थानीय लोगों ने बताया कि शौचालय निर्माण में घटिया सामग्री का प्रयोग किया जा रहा है। साथ ही पुरानी दीवार को नई दीवार बना दिया गया है।

गुरुवार को नगर पालिका अध्यक्ष इखलाख खां, ईओ अंजनी मिश्रा के साथ इंजीनियर मनोज कुमार मौके पर पहुंचे और निरीक्षण किया। वहां पर शिकायत को जायज पाया गया। इसके बाद अधिकारियों ने तत्काल कार्यदायी संस्था को नोटिस जारी करने के निर्देश दिए। तथा घटिया सामग्री लगाए जाने पर निर्माण कार्य में रोक लगाने को कहा। इंजीनियर मनोज ने बताया कि शौचालय निर्माण में नियमानुसार सामग्री नहीं लगाई जा रही थी। कार्यदायी संस्था को इस बारे में बताया गया है।

अदालती सूचना

प्रधान न्यायाधीश परिवार न्यायालय हमीरपुर(हमीरपुर) उत्तर प्रदेश.

वाद संख्या– 365 सन 2023

अनीता प्रजापति बनाम अनुज कुमार प्रजापति

बनाम

अनुज कुमार प्रजापति पुत्र श्री अमर पाल प्रजापति निवासी ग्राम बेता पोस्ट जहानाबाद तहसील बिन्दकी थाना बकेवर जिला फतेहपुर (उ0प्र0) मो0नं0–9616169021 **–प्रतिवादी**

चूंकि उपरोक्त नामांकित अनीता प्रजापति ने इस न्यायालय में यह आवेदन किया है कि धारा 13 हिन्दू विवाह अधिनियम हेतु अतएव आपको एतद द्वारा चेतावनी दी जाती है कि आप उस आवेदन के खिलाफ हेतु संदर्शित करने के लिए 28– 08– 2025 के दिवस को 10 बजे सुबह में स्वयं या सम्यककोण अनुदिष्ट अपने अधिवक्ता द्वारा उपस्थित हो और ऐसा करने में असफल रहने पर उक्त आवेदन एकपक्षीय रूप से सुना जाएगा और अवधारित किया जायेगा।

मेरे हस्ताक्षर और मोहर न्यायालय की मुद्रा सहित आज दिनांक 21– 07 – 2025के दिवस को निकाली गई है।

अदालत मुहर
आज्ञा से- मुंसरिम
प्रधान न्यायाधीश परिवार
न्यायालय हमीरपुर (उत्तर प्रदेश).

New DASTAK Classes

दस्तक, आपके सफलता की

The classes are known for preparing students for various exams like

SSC, BANK, UPSI, UPP

Address: Sharada Nagar Crossing No 9, Infront of Anurag Hospital, Kakadeo Kanpur Uttar Pradesh.

CONTACT: 7607780084, 7080270066 Vikash Pathak

कर्मचारी भविष्य निधि संगठन
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय भारत सरकार)
क्षेत्रीय कार्यालय: कानपुर
भविष्य निधि भवन, सर्वोदय नगर, कानपुर–208005

पत्रांक: 44/क.भ.नि.सं./क्षे.का./कानपुर/प्रशा.–II दिनांक: 07.08.2025

UMANG app से UAN अब बनाना हुआ अनिवार्य !

अब घर बैठे आप अपने एंड्राइड फ़ोन से UAN नंबर बनाते हुए उसे सक्रिय भी कर सकते है

EPFO मुख्यालय, नई दिल्ली द्वारा जारी नवीन दिशानिर्देशों अनुसार अगस्त माह 2025 से सभी पी. एफ. सदस्य UAN स्वयं से आवंटित करते हुए उसे सक्रिय भी कर पाएंगे।

प्रक्रिया पूर्ण करने हेतु सदस्यों को Google Play Store से सिर्फ दो ऐप डाउनलोड करने है: AdharFaceRd & UMANG

इस सम्बंध में विस्तृत जानकारी EPFO मुख्यालय के परिपत्र दिनांक 30 जुलाई 2025 द्वारा जारी की जा चुकी है। क्षेत्रीय आयुक्त, कानपुर द्वारा सभी सदस्यों से अनुरोध है कि इस सुविधा का अधिक से अधिक लाभ प्राप्त करें।

EPFO क्षेत्रीय कार्यालय, कानपुर द्वारा जनहित में जारी
संचार एवं जनसंपर्क अनुभाग
(क्षेत्रीय कार्यालय कानपुर)

तेरा वैभव अमर रहे मां, हम दिन चार रहें न रहें

काकोरी ट्रेन एक्शन
शताब्दी महोत्सव

समापन समारोह एवं वीरों को नमन

मुख्य अतिथि
योगी आदित्यनाथ
मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश

गरिमामयी उपस्थिति
केशव प्रसाद मौर्य, उप मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश
ब्रजेश पाठक, उप मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश

जयवीर सिंह, मंत्री, पर्यटन एवं संस्कृति, उत्तर प्रदेश
सुषमा खर्कवाल, महापौर, लखनऊ
डॉ. दिनेश शर्मा, सदस्य, राज्यसभा
डॉ. सुधांशु त्रिवेदी, सदस्य, राज्यसभा
बृजलाल, सदस्य, राज्यसभा
संजय सेठ, सदस्य, राज्यसभा
डॉ. महेन्द्र कुमार सिंह, सदस्य, विधान परिषद
मुकेश शर्मा, सदस्य, विधान परिषद
राम चन्द्र सिंह प्रधान, सदस्य, विधान परिषद
डॉ. लालजी प्रसाद निर्मल, सदस्य, विधान परिषद
उमेश द्विवेदी, सदस्य, विधान परिषद
इंजी. अवनीश कुमार सिंह, सदस्य, विधान परिषद
डॉ. नीरज बोरा, विधायक, लखनऊ उत्तर
डॉ. राजेश्वर सिंह, विधायक, सरोजनी नगर
योगेश शुक्ल, विधायक, बक्शी का तालाब
जय देवी, विधायक, मलिहाबाद
अमरेश कुमार, विधायक, मोहनलालगंज
ओ.पी. श्रीवास्तव, विधायक, लखनऊ पूर्व

दिनांक : 8 अगस्त, 2025 | समय : प्रात: 10:00 बजे | स्थान : काकोरी शहीद स्मारक, लखनऊ

प्रमुख आयोजन

• शहीद स्मारकों/स्मृति स्थलों/अमृत सरोवरों/अमृत वाटिकाओं पर राष्ट्रभक्ति पूर्ण कार्यक्रमों का आयोजन एवं 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान के अंतर्गत वृक्षारोपण • शैक्षणिक संस्थानों के छात्र-छात्राओं द्वारा प्रभात फेरी • काकोरी ट्रेन एक्शन की घटना एवं काकोरी के नायकों पर आधारित भाषण, निबंध लेखन, सुलेख लेखन व वाद-विवाद प्रतियोगिता एवं पुरस्कार वितरण • शहीद स्थलों/स्मारकों पर राष्ट्र धुन एवं देशभक्तिपूर्ण गीतों की प्रस्तुति • अर्द्ध सैनिक एवं सैन्य बलों/पुलिस/पी.ए.सी./होमगार्ड/ स्काउट गाइड/एन.सी.सी./विश्वविद्यालयों/महाविद्यालयों/ माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों के बैंड द्वारा राष्ट्र धुन पर आधारित वादन • स्वतंत्रता संग्राम से जुड़े महत्वपूर्ण स्थलों यथा काकोरी (लखनऊ), शाहजहांपुर, बलिया, गोरखपुर, फिरोजाबाद, अयोध्या, मैनपुरी, वाराणसी, मेरठ, प्रयागराज, कानपुर, झांसी, बरेली, सहारनपुर व गोण्डा में स्वतंत्रता संग्राम के शहीदों के परिजन का सम्मान समारोह

लाइव प्रसारण
DD NEWS व Youtube.com/DDNEWS
Youtube.com/dduttarpradesh
UPGovtOfficial CMOUttarpradesh CMOfficeUP
सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश

अमृत विचार

कानपुर, शुक्रवार, 8 अगस्त 2025

न्यूज ब्रीफ

मैथा अग्निशमन केंद्र का शिलान्यास टला

शिवली। मैथा तहसील के अग्निशमन केंद्र का मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की ओर से वर्चुअल शिलान्यास का कार्यक्रम आगे बढ़ा दिया गया है। अब रक्षाबंधन पर्व के बाद नव स्वीकृत अग्निशमन केंद्र का शिलान्यास किया जाएगा। सीएफओ प्रतीक श्रीवास्तव के कार्यालय से दीपांशु ने बताया कि 10 अगस्त के बाद होगा। इसकी सूचना दी जाएगी।

रोजगार मेला में 68 अभ्यर्थियों का चयन

कानपुर देहात। अकबरपुर राजकीय पालीटेक्निक में गुरुवार को रोजगार मेला एवं कॅरियर काउंसलिंग शिविर लगा, जिसमें आईआईटी कानपुर की मुख्य काउंसलर रीता शुक्ला ने निजी क्षेत्र में रोजगार के अवसरों की जानकारी दी। मेले में आठ कंपनियों के सामने 142 अभ्यर्थियों ने प्रतिभाग किया। 68 अभ्यर्थियों का प्रारंभिक चयन किया गया। जिला सेवायोजन अधिकारी शशि तिवारी मौजूद रहीं।

कल राखी का त्योहार, सज गए बाजार

कार्यालय संवाददाता, कानपुर देहात

अमृत विचार: बहन-भाई के प्यार का प्रतीक रक्षा बंधन नजदीक आते ही बाजार भी रंग-बिरंगी राखियों से गुलजार हो गया। इस बार बाजार में 10 रुपये से लेकर 500 रुपये तक कीमत की राखियां बिक्री के लिए उतारी गई हैं। इसमें बहनों को चंदन, रुद्राक्ष और डायमंड राखियां भा रही हैं। बहनों ने बाजार पहुंचकर राखियों की खरीदारी शुरू कर दी है।

भाई-बहन के प्रतीक रक्षाबंधन 9 अगस्त को धूमधाम के साथ मनाया जाएगा। अवसर को भुनाने के लिए दुकानदार पहले ही सक्रिय हो गए थे। लिहाजा उन्होंने आकर्षक डिजाइनों में बड़ी संख्या में रंग-बिरंगी राखियां लाकर बाजार में बिक्री के लिए उतारी हैं। दुकानदारों ने डायमंड, चंदन, रुद्राक्ष, फैंसी, ब्रेसलेट, गुड्डे और लाइटिंग की राखियों को दुकानों में सजा रखा है।

गुरुवार को रूरा की बाजार में दुकान से मनपसंद राखी खरीदतीं बहनें। अमृत विचार

- बहनों को भा रही डायमंड, चंदन रुद्राक्ष, ब्रेसलेट वाली राखियां
- बच्चों के लिए गुड्डा और लाइटिंग वाली राखियां पहली पसंद

त्योहार नजदीक आते ही बाजार में रौनक बढ़ गई है। गुरुवार को सुबह से बड़ी संख्या में बहनें अकबरपुर, राजपुर, शिवली, मंगलपुर, रनियां बाजार आदि जगह बाजार पहुंचीं और अपने पसंद की राखियों की खरीदारी की। वहीं बच्चों ने भी अपनी पसंद की कार्टून, गुड्डे और लाइटिंग वाली राखियां खरीदीं। अकबरपुर के दुकानदार टोनी ने बताया कि अबकी बार बाजार में पांच रुपये से 500 रुपये तक कीमत की राखियां बिक्री के लिए लाई गई हैं। इसमें बहनें डायमंड, ब्रेसलेट वाली राखियां ज्यादा खरीद रही हैं।

फसलों का उत्पादन बढ़ाने पर दिया जोर

कानपुर देहात। आलमचंद्रपुर के राजकीय अलंकृत उद्यान में वन क्राप गोष्ठी हुई, जिसमें लगभग 50 किसानों ने प्रतिभाग किया।

गोष्ठी में उप निदेशक उद्यान कानपुर मंडल मुकेश कुमार ने कहा कि देश की अर्थव्यवस्था को एक ट्रिलियन तक लाने के उद्देश्य से प्रदेश सरकार ब्लाक वन क्राप के आधार पर फसलों का उत्पादन बढ़ाने पर जोर दे रही है। गोष्ठी में किसानों को ब्लाक से संबंधित औद्यानिक खेती एवं शाकभाजी उत्पादन के बारे में जानकारी दी गई। ड्रिप व मिनी स्प्रिंकलर पद्धति अपनाकर गुणवत्तायुक्त उत्पादन, समय की बचत व कम लागत में अधिक उत्पादन के बारे में बताया गया। जिला उद्यान अधिकारी बलदेव ने विभाग की विभिन्न योजनाओं के बारे में जानकारी दी। गोष्ठी में उद्यान निरीक्षक घनश्याम, रमेशचंद्र कटियार, इरीगेशन के दीपक कुमार आदि उपस्थित रहे।

शिव मंदिर का गुंबद गिरा, बुजुर्ग घायल

संवाददाता, शिवली

- प्रतापपुर के 500 वर्ष पुराने शिव मंदिर का बारिश से गिरा गुंबद
- सिर पर ईंटें गिरने से गंभीर चोटें कानपुर के अस्पताल में इलाज

अमृत विचार: कई दिनों की तेज बारिश के चलते प्रतापपुर खास गांव में करीब पांच सौ वर्ष पुराने मंदिर का गुंबद ढह गया। गुंबद के मलबा की चपेट में आने से अवकाशप्राप्त बुजुर्ग शिक्षक घायल हो गए, जिनका इलाज कराया गया।

मैथा तहसील क्षेत्र के प्रतापपुर खास गांव में करीब पांच सौ वर्ष पुराना शिव मंदिर बना है। कई दिनों की तेज बारिश के चलते मंदिर का गुंबद ढह गया, जिससे मंदिर की चौपाल में बैठे अवकाश प्राप्त शिक्षक रमेश चंद्र त्रिवेदी (80) चपेट में आ गए। गुंबद की ईंटों के सिर, हाथ व पैर में लगने से वह घायल हो गए।

गुंबद गिरने की तेज आवाज सुनकर ग्रामीण दौड़कर मंदिर पहुंचे और घायल सेवानिवृत्त शिक्षक को संभाला। परिवार के लोग उन्हें इलाज के लिए कानपुर ले गए हैं, जहां भर्ती कर इलाज किया जा रहा है। इस बारे में लेखपाल राजीव पांडेय से संपर्क किया गया, लेकिन बात नहीं हो पाई।

घायल अवकाश प्राप्त शिक्षक रमेश चंद्र।

निरीक्षण में नहीं कटेगा शिक्षकों का वेतन

परिषदीय स्कूलों की निरीक्षण व्यवस्था में हुआ बदलाव, अनुपस्थित मिलने पर समायोजित होगा अवकाश

कार्यालय संवाददाता, कानपुर देहात

- गलती या स्कूल देरी से पहुंचने पर सीधे नहीं की जाएगी कार्रवाई
- निरीक्षण के दौरान शिक्षकों के कार्यकाल का होगा आकलन

अमृत विचार: परिषदीय स्कूलों के शिक्षकों के लिए एक राहत भरी खबर है। स्कूलों की निरीक्षण व्यवस्था में बड़ा बदलाव किया गया है इसमें ऑनलाइन उपस्थिति महत्वपूर्ण हिस्सा होगी। निरीक्षण की इस नई व्यवस्था में पहले की तरह सीधे कार्रवाई नहीं की जाएगी।

परिषदीय विद्यालयों में शिक्षकों और कर्मियों की ऑनलाइन उपस्थिति बढ़ाने के लिए निरीक्षण प्रक्रिया में बदलाव किया जा रहा है। जिसके तहत गलती, छुट्टी, स्कूल देरी से पहुंचने जैसे अन्य मामले में मानवीय मूल्यांकन के तहत कार्रवाई नहीं की जाएगी। इस नई निरीक्षण व्यवस्था में शिक्षकों के कार्यकाल से लेकर उसकी उपलब्धियों का आंकलन कर कार्रवाई होगी।

उदाहरण के तौर पर किसी शिक्षक की सेवा 30 वर्षों से बेदाग रही है और उसने राज्यपाल पुरस्कार भी प्राप्त किया है। यदि वह स्कूल में किसी दिन 8 बजकर 1 मिनट पर पहुंचता हैं और निरीक्षण करने वाला अधिकारी 8 बजे अनुपस्थित दर्ज कर दे, तो शिक्षक की उस दिन की सैलरी काट ली जाती है। पर अब नई व्यवस्था में ऐसा नहीं होगा। अगर कोई शिक्षक आकस्मिक अवकाश (सीएल) शेष होने के बावजूद किसी कारणवश निरीक्षण के दौरान अनुपस्थित पाया जाता है तो उसका वेतन नहीं काटा जाएगा। इसके बजाय उस दिन की छुट्टी आकस्मिक अवकाश में से काटी जाएगी। बेसिक शिक्षा अधिकारी अजय मिश्रा का कहना है कि नई व्यवस्था लागू होने से शिक्षकों और कर्मियों को बड़ी राहत मिलेगी और उनका मनोबल भी बढ़ेगा।

निरीक्षण में इन बिंदुओं पर होगा विशेष मूल्यांकन

- छात्रों का प्रदर्शन और पढ़ाई में प्रगति, उनकी समझ और उनके सीखने के परिणामों का मूल्यांकन करना होगा। वहीं शिक्षकों की शिक्षण विधियों, उनकी विषय-वस्तु की समझ और कक्षा में छात्रों को शामिल करने की क्षमता का आंकलन होगा। यह सुनिश्चित करना होगा कि पाठ्यक्रम को प्रभावी ढंग से लागू किया जा रहा है और वह छात्रों की आवश्यकताओं के अनुरूप है। निरीक्षण के दौरान इस पर ध्यान रखना होगा कि स्कूल में पर्याप्त और उपयुक्त शिक्षण सामग्री उपलब्ध है।

अभिभावकों को बताई जाएगी बच्चों की प्रगति

- परिषदीय विद्यालयों में 18 से 23 के बीच होगी प्रथम तिमाही परीक्षा

कानपुर देहात। परिषदीय विद्यालयों में सत्रीय (तिमाही) परीक्षाएं 18 अगस्त से होंगी। इस बार परीक्षा के बाद अभिभावकों को स्कूल बुलाकर बच्चों की प्रगति की जानकारी दी जाएगी और बच्चों की कमियां बताई जाएंगी, ताकि इसमें सुधार कर सकें और आगे होने वाली परीक्षाओं का परिणाम बेहतर हो सके।

बेसिक शिक्षा निदेशक प्रताप सिंह बघेल की ओर से बीएसए को निर्देश दिया गया है कि प्रथम सत्रीय परीक्षा 18 से 23 अगस्त के बीच करा लीं जाएं। परीक्षा मासिक पाठ्यक्रम के अनुसार जुलाई तक पूरे कराए गए पाठ्यक्रम के आधार पर होंगी। प्रधानाध्यापक विद्यालय स्तर पर पेपर तैयार कराकर परीक्षा कराएंगे। कक्षा व विषय शिक्षक कॉपियों का मूल्यांकन कर परिणाम तैयार करेंगे। परीक्षा के बाद अभिभावकों को विद्यालय में बुलाकर बच्चों की प्रगति साझा की जाएगी। अभिभावकों को परीक्षाफल की जानकारी देने के साथ उत्तर पुस्तिका भी दिखाई जाएगी। इसके आधार पर परीक्षा में कमजोर छात्र के सुधार पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। ऐसे बच्चों को चिह्नित कर सुधार किया जाएगा। साथ ही शिक्षक अभिभावकों को भी इसमें सुधार के लिए प्रेरित करेंगे।

तिरंगा यात्रा से देशभक्ति का संदेश

हर घर तिरंगा अभियान अंतर्गत गुरुवार को एसपी किड्स पब्लिक स्कूल मैथा के प्रधानाध्यापक ज्योति यादव और शिक्षकों के नेतृत्व में छात्र-छात्राओं ने तिरंगा रैली निकाली और देशभक्ति का संदेश दिया। तिरंगा रैली के दौरान देश की एकता और अखंडता को बरकरार रखने के लिए अपने प्राणों को न्योछावर करने वाले भारत माता के वीर सपूतों को नमन कर श्रद्धांजलि अर्पित की गई। रैली को खंड विकास अधिकारी संजू सिंह ने झंडी दिखाकर रवाना किया। इस मौके पर सुनील कुमार, रवि कुमार, सौरभ कुमार, प्रिया स्वाती, शालिनी, संगीता, प्रबंध समिति उपाध्यक्ष कर्नल अभिमन्यु सिंह, एडीओ संजय मिश्रा, ग्राम सचिव गौरव मिश्रा, एडीओ अवधेश सिंह आदि मौजूद रहे। रैली के दौरान जोशीले नारे लगे। ● अमृत विचार

गुरुवार को रक्षा सूत्र कार्यक्रम में मौजूद महिलाएं। अमृत विचार

सेवा में कोई स्वार्थ नहीं होना चाहिए

संवाददाता, पुखरायां

- प्रजापति ईश्वरीय विश्वविद्यालय पुखरायां में रक्षा सूत्र कार्यक्रम

अमृत विचार: जब अहंकार को शिव बाबा में विलोप कर देते हैं तो जीवन में नम्रता और सेवा भाव आ जाता है। यह बात प्रजापति ईश्वरीय विश्वविद्यालय पुखरायां में रक्षा सूत्र पर्व पर सेंटर प्रमुख बहन ममता दीदी ने कही।

उन्होंने रक्षाबंधन पर्व की बधाई देते हुए कहा कि हमें रक्षाबंधन के साथ-साथ पर्यावरण की तरफ भी ध्यान देना है। हर एक भाई-बहन को अपने घर के पास एक पौधा अवश्य लगाना है। इससे जो ऑक्सीजन प्राप्त होगी। उससे जीवन की आयु और बढ़ जाती है। ओम शांति की प्रमुख ममता दीदी ने कहा कि भोले बाबा के जब काशी विश्वनाथ में दर्शन हो जाते हैं तो जीवन आनंदित हो जाता है। केंद्र में आने से सभी प्रकार की सीख प्राप्त होती है और सेवा भावना आ जाता है। सेवा में किसी प्रकार का स्वार्थ नहीं होना चाहिए।

दो बैंक शाखा प्रबंधकों को नोटिस

कार्यालय संवाददाता, कानपुर देहात

- बड़ौदा ग्रामीण बैंक अकबरपुर व झींझक शाखा प्रबंधक को नोटिस
- मुख्यमंत्री युवा उद्यमी योजना में कम प्रगति पर सीडीओ खफा

अमृत विचार: विकास भवन सभागार में सीडीओ ने मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास योजना की समीक्षा बैठक की। योजना में कम प्रगति पर यूपी बडौदा ग्रामीण बैंक अकबरपुर व झींझक शाखा प्रबंधक को कारण बताओ नोटिस जारी करने के निर्देश दिए।

गुरुवार को बैठक में मुख्य विकास अधिकारी लक्ष्मी एन. ने बैंकर्स को निर्देश दिए कि युवा उद्यमी विकास योजना मुख्यमंत्री की प्राथमिकता वाली योजनाओं में से एक है। इसमें किसी भी प्रकार की लापरवाही न बरती जाए, अन्यथा संबंधित के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने कहा कि प्रत्येक शाखा प्रबंधक अधिकाधिक प्रस्ताव स्वीकृत करने का प्रयास करें। उन्होंने कहा कि प्रस्तावों का कम ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन, उनको प्निरस्त करने के साथ ही कई महीनों पत्रावली पेंडिंग रखी जाती है। ऐसे आवेदनों का भली भांति परीक्षण किया जाए। कोई भी आवेदन बिना किसी कारण लंबे समय तक रोकें।

बैंकर्स के साथ बैठक करतीं सीडीओ लक्ष्मी एन.। अमृत विचार

उन्होंने निर्देश देते हुए कहा कि जो लोग इस योजना का लाभ लेना चाहते हैं, उन्हें आसानी से सभी कागजी कार्यवाही पूरी कर लाभांवित किया जाए। मुख्य विकास अधिकारी लक्ष्मी एन ने उपायुक्त उद्योग को निर्देशित किया कि मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास योजना में अधिक से अधिक आवेदन कराएं, जिससे युवा स्वयं का उद्यम स्थापित कर आत्मनिर्भर बन सकें।

इग्नू में प्रवेश के लिए फॉर्म भरें अग्निवीर

पुखरायां। सेनाओं के अग्निवीर इग्नू से स्नातक उपाधि में प्रवेश के लिए आवेदन कर सकते हैं।

रामस्वरूप ग्रामोद्योग परास्नातक महाविद्यालय में संचालित इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (इग्नू) के समन्वयक डॉ. पर्वत सिंह ने बताया कि जुलाई 2025 सत्र में भारतीय सेनाओं द्वारा इग्नू से हुए करार के बाद अग्निवीर सैनिक का ज्ञान संवर्धन करने के लिए कौशल आधारित कला स्नातक, वाणिज्य स्नातक, पर्यटन प्रबंधन में स्नातक, सूक्ष्म लघु एवं मध्यम उद्योग में स्नातक उपाधि पाठ्यक्रम जो यूजीसी के राष्ट्रीय क्रेडिट फ्रेमवर्क और राष्ट्रीय कौशल योग्यता फ्रेमवर्क के अनुरूप समरेखित किया गया है। साथ ही तकनीकी शिक्षा परिषद, राष्ट्रीय व्यावसायिक शिक्षा परिषद एवं प्रशिक्षण परिषद से मान्यता प्रदान की गई है। अग्निवीर 15 अगस्त तक इग्नू की वेबसाइट पर जाकर आवेदन कर सकते हैं।

अधिकारियों के साथ बैठक करते डीएम कपिल सिंह। अमृत विचार

सभी भवनों व घरों में शान से फहराएं तिरंगा

कार्यालय संवाददाता, कानपुर देहात

अमृत विचार: हर घर तिरंगा अभियान, काकोरी ट्रेन एक्शन शताब्दी समारोह एवं स्वतंत्रता दिवस को लेकर डीएम ने कलेक्ट्रेट सभागार में बैठक की। उन्होंने तैयारियों के संबंध में निर्देश दिए।

बैठक में डीएम कपिल सिंह ने कहा कि हर घर तिरंगा अभियान में अधिक से अधिक जनसहभागिता सुनिश्चित की जाए। सभी सरकारी व गैर-सरकारी भवनों के साथ लोग घरों पर तिरंगा फहराएं। काकोरी ट्रेन एक्शन के सौ वर्ष पूर्ण होने पर आयोजित शताब्दी समारोह को ऐतिहासिक रूप देने के लिए सांस्कृतिक कार्यक्रम, प्रदर्शनी एवं जनजागरूकता के कार्यक्रम आयोजित करें। उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता दिवस के मुख्य समारोह के झंडारोहण, सांस्कृतिक कार्यक्रमो की समुचित तैयारी सभी विभागीय अधिकारी करें। बैठक में सीडीओ लक्ष्मीं एन, एडीएम प्रशासन अमित कुमार, एडीएम वित्त एवं राजस्व दुष्यंत कुमार मौर्य, सीएमओ डा एके सिंह आदि अफसर उपस्थित रहे।

अनदेखी का दंश

200 साल पुरानी बाजार के दुकानदारों का धंधा चौपट, कीचड़ के बीच नहीं पहुंचते खरीदार

जलभराव से जूझ रहे कहिंजरी बाजार के दुकानदार

कहिंजरी बाजार के ऐसे रास्तों पर कैसे पहुंचें खरीदार। अमृत विचार

कार्यालय संवाददाता, कानपुर देहात

अमृत विचार: करीब 200 वर्ष पुरानी कहिंजरी बाजार का अतिक्रमण और गंदगी से भरी नालियां दुकानदारों के लिए अभिशाप बनी हैं। कई बार शिकायत के बावजूद अधिकारी इस ओर ध्यान नहीं दे रहे हैं। जिससे परेशान दुकानदारों ने डीएम से समस्या समाधान कराने की मांग की है।

रसूलाबाद-कानपुर रोड स्थित कहिंजरी कस्बे में करीब दो वर्षों से बाजार लगती चली आ रही है। आसपास ग्रामीण अंचलों से जुड़े होने के कारण इस बाजार में आभूषण, कपड़े, परचून, मोबाइल समेत अन्य जरूरत की दुकानें हैं, लेकिन बाजार में अतिक्रमण व गंदगी से पटी नालियां व सड़कों पर बहते गंदे पानी से आने वाले ग्राहकों को परेशानी होती है। साथ ही दुकानदारों की बिक्री प्रभावित होती है। दुकानदारों ने कई बार समस्या को अधिकारियों से शिकायत की, लेकिन अभी तक कोई हल नहीं निकल सका। व्यापारी किसनचंद्र गुप्ता, कृष्ण गोपाल गुप्ता, छुन्नू शर्मा, राजा गुप्ता, सोनू, रवींद्र गुप्ता, राघव अग्निहोत्री, रामजी गुप्ता, पंकज सविता, पप्पू गुप्ता, आशीष सोनी, दीपक सोनी, लालजी गुप्ता आदि ने बताया कि कहिंजरी बाजार के मुख्य मार्ग में पूरे वर्ष पानी से भरा रहता है। वहीं बारिश के समय तो घुटनों तक पानी भर जाता है। जिससे ग्राहकों का आना-जाना मुश्किल हो जाता है। अगर सड़क को ऊंचा कर बनवा दिया जाए और नालियों से अतिक्रमण हटावा कर सफाई करा दी जाए तो जलभराव नहीं होगा। इस बावत बीडीओ विपुल विक्रम सिंह ने कहा कि एडीओ पंचायत व सचिव से बात कर निर्देशों का पालन न करने के बावत जानकारी की जाएगी। समस्या का समाधान कराया जाएगा।

एक साल पहले पिलाई थी आश्वासन की घुट्टी

क्षेत्रीय दुकानदारों ने बताया कि करीब एक वर्ष पूर्व 22 जुलाई 2024 को सहायक विकास अधिकारी (पंचायत) जयप्रकाश शुक्ला ने कहिंजरी ग्राम पंचायत का निरीक्षण करते समय गंदगी हटवाने और बाजार की नालियों की साफ-सफाई कराने का आश्वासन दिया था। उन्होंने ग्राम प्रधान इसरोज को अतिक्रमण करने वाले दुकानदारों को नोटिस जारी करने के लिए कहा था, लेकिन अभी तक न तो अतिक्रमण हट सका और न ही किसी को नोटिस जारी हुई।

अमेरिकी टैरिफ के विरोध में आए व्यापारी, बहिष्कार की गुजारिश

शिवली। अमेरिका की ओर से भारत पर जबरन 50 प्रतिशत टैरिफ लगाए जाने का विरोध व्यापारियों ने शुरू कर दिया है। कस्बों व गांवों के व्यापारी विरोध करते हुए अमेरिकी सामान की बिक्री व खरीद न करने की अपील भी कर रहे हैं। इनका कहना है कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप दादागीरी दिखाते हुए अपना हित साधने में लगे हैं। भारत के लिए देशवासियों का हित पहले है। सभी व्यापारी इस मुद्दे पर देश के साथ हैं।

क्या बोले व्यापारी

व्यापार मंडल की युवा इकाई के प्रदेश मंत्री आशुतोष द्विवेदी ने कहा कि अमरीकी फूड चेन व उसके समस्त उत्पादों का पूरे भारत में बहिष्कार किया जाना चाहिए।

शिवली व्यापार मंडल के अध्यक्ष रमाकांत अग्निहोत्री ने कहा कि अमरीकी सामानों का बहिष्कार किया जाएगा। साथ ही स्वदेशी सामानों को बढ़ावा दिया जाएगा।

औनाहा व्यापार मंडल के अध्यक्ष आशुतोष त्रिवेदी ने कहा कि देश का व्यापारी आम लोगों के साथ मिलकर अमेरिका की ब्लैकमेल वाली नीति पर कड़ा प्रहार कर सकते हैं।

बैरी शोभन व्यापार मंडल के अध्यक्ष अनुपम वर्मा ने कहा कि डरने की जरूरत नहीं है। देश के व्यापारी देश पर आर्थिक संकट आने पर भामाशाह की भूमिका निभाएंगे।

अमृत विचार

कानपुर महानगर

www.amritvichar.com

कानपुर, शुक्रवार, 8 अगस्त 2025

सुविचार

सफलता हमेशा असफलता के स्तंभ पर खड़ी होती है, इसलिए किसी को भी असफलता से घबराना नहीं चाहिए।

-नेता जी सुभाष चंद्र बोस

कानपुर के प्रमुख समाचार

- सिर पर भारी वार किया, गला दबाकर की हत्या-II
- सड़कों पर सावन के झूले गड्ढे दे रहे स्मार्ट हिचकोले-III
- स्वास्थ्य सुविधाओं का जायजा लेने हैलट आई शासन की टीम-IV

अनुराग हेल्थ केयर प्रा.लि.

•ICU •NICU DIALYSIS

• MODULAR OT

दूरबीन विधि से आपरेशन अब कम खर्च में

सीजीएचएस, मेडीक्लेम व आयुष्मान कार्ड मान्य

117/क्यू/702, शारदा नगर, कानपुर

9889538233, 7880306999

सिटी ब्रीफ

ब्रह्म नगर चौराहे पर पानी भरने से काम रुका

कानपुर। ब्रह्म नगर चौराहे पर पिछले दिनों डॉट नाला धंस गया था। नगर निगम यहां बड़े हिस्से में खोदाई कर निर्माण कार्य कर रहा है। लेकिन, पिछले तीन दिनों से हो रही बारिश की वजह से यहां खोदे गए गड्ढे में पानी भर गया है। क्योंकि यहां केस्को की भूमिगत लाइन भी गई है, इसलिए हादसा होने का खतरा है। कर्मचारियों ने भी कार्य करने से मना कर दिया है। जिसके बाद नगर निगम अधिकारियों ने केस्को को पत्र लिखकर लाइनों को पूर्ण रूप से बिजली रहित करने को कहा है ताकि कार्य को शुरू किया जा सके।

अब लाइव लोकेशन डालना जरूरी

कानपुर। शहर में मॉडल वार्ड बनाने की दिशा में रूपरेखा बनाने के साथ अब सख्त मॉनिटरिंग भी शुरू हो गयीं है। नगर निगम के स्वास्थ्य विभाग की ओर से की जा रही समीक्षा में पाया गया है की जेटीएन के कर्मचारी समय से कूड़ा उठाने वार्डों में नहीं पहुंच रहे हैं। इसपर अब कहा गया है की वार्ड के ग्रुप में लाइव लोकेशन के बाद ही उपस्थिति दर्ज होगी, घरों से कूड़ा उठाने जाने वाले कर्मचारियों को 4 अलग-अलग जगह की लोकेशन की फोटो ग्रुप में डालनी होगी, इसके बाद ही उन्हें उपस्थित माना जाएगा।

तीन दिन से नहीं भेज पा रहे डाक

कानपुर। बड़ा चौराहा डाकघर का सर्वर तीन दिन से ठप बताया जा रहा है। अधिवक्ता कौशल किशोर उपाध्याय ने बताया कि वह अपने वादियों की तरफ से रजिस्टर्ड डाक द्वारा प्रतिवादियों को न तो कोई नोटिस भेज पा रहे हैं और न ही रजिस्टर्ड डाक के द्वारा वैधानिक रूप से कोई पत्राचार कर पा रहे हैं। जिससे प्रतिवादियों को समयसीमा में नोटिस और मुकदमों के सम्मन, वारंट आदि भेजने में विलंब हो रहा है।

मेदांता अस्पताल से किया समझौता

कानपुर। मेदांता अस्पताल गुरुग्राम ने ऑल इंडिया ज्वेलर्स एंड गोल्डस्मिथ फेडरेशन के साथ एक समझौता किया है। जिसके तहत देश भर के सर्राफा व्यापारियों को विशेष छूट के साथ अपने और अपने परिवार का इलाज कराने का अवसर मिलेगा। यह जानकारी गुरुवार को संस्था के राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज अरोरा ने दी।

गंगा का पूजन करेंगे श्रद्धालु, अभिषेक भी

कानपुर। गंगा सेवा समिति के तत्वावधान में श्रद्धालु मंगलवार को गंगा बैराज पर गंगा की आरती करेंगे। इसके बाद मां गंगा का दूध, दही, घृत, शहद और चंदन से अभिषेक करेंगे। समिति के अध्यक्ष अमर बहादुर यादव ने कहा कि गंगा को प्रदूषण मुक्त करने के लिए सरकार को कठोर कदम उठाने होंगे। गंगा में आज भी नाले गिर रहे हैं। स्थिति यह है कि गंगा को प्रदूषण मुक्त करने में अरबों रुपये खर्च हो चुके हैं लेकिन कोई लाभ होता नहीं दिख रहा है।

गंदगी के बीच पानी भरने के लिए रखीं बाल्टियां। अमृत विचार

कुली बाजार में गंदगी से नागरिक परेशान

कानपुर। कुली बाजार वार्ड 89 की जनता गंदगी से परेशान है। क्षेत्र में दूषित पेयजल भी सप्लाई हो रहा है। कुली बाजार की तंग गलियों में जिंदगी बदहाल है। यहां के लोग खुद को शहर के अन्य हिस्सों से कटा पाते हैं। स्थानीय पार्षद सुशील तिवारी पर आरोप लगाया कि जीतने के बाद से ही पार्षद गायब हैं। नल सूखे हैं, टंकी में पानी नीं है, बोरिंग जवाब दे चुकी है। पानी के लिए रोज लड़ाई करनी पड़ती है। महापौर प्रमिला पांडेय से समस्या दूर करने की मांग की।

प्रदेश में दूसरा सबसे बड़ा निर्यातक जिला बना शहर

कानपुर। निर्यात के मामले में उत्तर प्रदेश ने अगर देश में पांचवां स्थान बरकरार रखा है, तो प्रदेश में कानपुर दूसरे नंबर पर है। शहर को यह स्थान लगभग 10 हजार करोड़ रुपये का निर्यात लक्ष्य करने से हासिल हुआ है। कानपुर से गौतमबुद्ध नगर आगे है।

प्रदेश का योगदान देश मे निर्यात के मामले पर 5वें स्थान पर आने की वजह निर्यात विशेषज्ञ विदेशों में पारंपरिक उत्पादों की बढ़ती मांग को बता रहे हैं। एक्सपोर्ट ग्रोथ्र के मामले में उत्तर प्रदेश वित्त वर्ष 2024-25 में कुल निर्यात के मामले में राज्यों में चौथे स्थान पर है। डायरेक्ट्रेट जनरल ऑफ कॉमर्स इंटेलिजेंस एंड स्टेटिस्टिक्स के आंकड़ों के आधारा पर फियो के अधिकारियों ने बताया कि प्रदेश का निर्यात वित्त वर्ष 2024-25 में 1.86 लाख करोड़ रुपये हो गया है। यह लगातार बढोतरी की ओर जा रहा है।

सोने को लगी टैरिफ की नजर, दाम आसमान पर

नया रिकार्ड

विशेष संवाददाता, कानपुर

अमृत विचार। अमेरिका द्वारा भारत पर 50 फीसदी टैरिफ लगाने के कारण अनिश्चितता के चलते सुरक्षित निवेश की चाहत और केंद्रीय बैंकों के जरिये जमकर खरीदारी के चलते सोने की कीमतों में रक्षाबंधन के त्योहार से पहले भारी उछाल आ गया। कीमतें ऑल टाइम हाई के स्तर पर पहुंच गईं। गुरुवार को शहर में भाव 1,03,600 रुपये प्रति 10 ग्राम हो गया।

बीती 23 जुलाई को सोने का भाव 1,03,200 रुपये था, जो उसका सर्वोच्च था। इसके बाद भाव गिरकर 24 जुलाई को 1,01,600 पर आ गए थे, 25 जुलाई को कीमत 500 रुपये और घट गई थी। 31 जुलाई को प्रति 10 ग्राम कीमत 1,01,400 रुपये थी। इसके बाद बीते सात दिन में भाव 2200 रुपये बढ़ गए हैं, यानि जिसने सात दिन पहले सोना खरीदा, उसे 2200 रुपये का मुनाफा। सराफा कारोबारियों ने बताया कि बाजार में आभूषण के खरीदार नदारद हैं, बहुत जरूरत पर ही लोग खरीदारी कर रहे हैं। सुरक्षित निवेश के मद्देनजर सोने के बिस्कुट और टुकड़ों की खूब खरीद हो रही है। कीमतें ऊंची देखकर सराफा बाजार में पुराने गहने बेचने वाले बड़ी तादाद में पहुंच रहे हैं। अनुमान है कि दीवाली तक सोना एक लाख 15 हज़ार रुपये प्रति 10 ग्राम तक पहुंच सकता है। उत्तर प्रदेश सराफा एसोसिएशन के मंत्री राम किशोर मिश्र का कहना है कि टैरिफ़ वॉर और केंद्रीय बैंकों के जरिये बड़े पैमाने पर खरीद ने सोने के भाव आसमान पर पहुंचा दिए हैं। दक्षिण सराफा एसोसिएशन के अध्यक्ष अमित गुप्ता के मुताबिक रिटेल मार्केट में सन्नाटा है।

हार पहनती महिला। फाइल फोटो

25 हजार रुपये सोने के दाम बढ़ गए सात माह में

22 सौ रुपये कीमत ऊपर चढ़ी सिर्फ एक हफ्ते में

78 हजार 600 प्रति 10 ग्राम कीमत थी, 1 जनवरी को

- सोना हुआ 1,03,600 रुपये का 10 ग्राम, अभी कीमत और ऊपर जाने का अनुमान
- रक्षाबंधन से पहले दाम चढ़ने से भाई-बहन के पर्व पर आभूषण की खरीद हुई ठंडी

फजलगंज एलीवेटेड पुल को मिली सैद्धांतिक अनुमति, बनेगी डीपीआर

दक्षिण क्षेत्र के पांच लाख वाहन सवारों को रोज के जाम से मिलेगा छुटकारा

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

10 लाख लोगों को आने जाने में होगी सुविधा | **04** किमी लंबा पुल मरियमपुर से बनेगा

अमृत विचार। मरियमपुर चौराहा से सचान चौराहा तब बनने वाले एलीवेटेड पुल को शासन की ओर से सैद्धांतिक अनुमति मिल गई है। सेतु निगम ने डिटेल प्रोजेक्ट (डीपीआर) तैयार करने की तैयारी भी शुरू कर दी है। चार किलोमीटर लंबा यह पुल करीब 150 पिलरों पर खड़ा किया जाएगा। पुल की चौड़ाई 10 मीटर होगी। इस एलीवेटेड पुल के बनने से दक्षिण क्षेत्र के करीब 10 लोगों को राहत मिलेगी। उन्हें प्रतिदिन लगने वाले जाम में नहीं फंसना पड़ेगा।

बारिश के मौसम में सचान चौराहा से मरियमपुर चौराहा तक रोज आने वाले करीब पांच लाख वाहन सवारों के पसीने छूट जाते हैं। जलभराव, अतिक्रमण और सड़कों पर खड़े वाहनों के कारण जाम की समस्या से जूझना पड़ता है। सांसद रमेश अवस्थी और गोविंद नगर विधायक सुरेंद्र मैथानी ने इस मार्ग पर एलीवेटेड पुल के निर्माण के संबंध में दो बार सेतु निगम के अधिकारियों के साथ सर्वे किया है। सांसद व विधायक ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से एलीवेटेड पुल के निर्माण के संबंध में वार्ता की, जिसका नतीजा यह हुआ कि इस पुल को शासन स्तर से सैद्धांतिक अनुमति प्रदान कर दी गई है। सेतु निगम अधिकारियों के मुताबिक एलीवेटेड पुल के लिए स्थलीय निरीक्षण हो चुका है।

एलीवेटेड पुल का निर्माण आठ सौ करोड़ रुपये से होगा। डीपीआर की प्रक्रिया शुरू कर दी गई है। एजेंसी नामित होने का इंतजार है। यह पुल मरियमपुर चौराहे से होकर फजलगंज, चावला मार्केट, नंदलाल चौराहा, दीप तिराहा होते हुए सचान चौराहा पर उतरेगा। इससे जाम से मुक्ति मिलेगी।

फजलगंज में लगा जाम। अमृत विचार

जाम में एंबुलेंस अक्सर तो स्कूली बच्चे रोज ही फंसते

- दक्षिण क्षेत्र में 25 लाख से अधिक आबादी है, वर्तमान में दक्षिण क्षेत्र से उत्तर क्षेत्र आने व जाने में लोगों को जाम की समस्या से जूझना पड़ रहा है। बारिश और त्योहार के सीजन में स्थिति और विकराल हो जाती है। सुबह और शाम के वक्त जाम लगना यहां रोज की बात है। वाहनों के अधिक लोड के कारण यातायात पुलिस कर्मी भी बेबस रहते है। प्रतिदिन पांच लाख से अधिक वाहन सवार नौकरीपेशा, कारोबारी, आम आदमी, मरीज, आते-जाते हैं। अभी तो जाम लगने पर अक्सर एंबुलेंस तक फंसी रहती है, और स्कूली बच्चों को रोज ही घर लौटते समय जाम का सामना करना पड़ता है।

अक्टूबर में कानपुर-लखनऊ एक्सप्रेस वे पर फर्राटा भरेंगे वाहन

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

अमृत विचार। कानपुर-लखनऊ एक्सप्रेस वे का निर्माण सितंबर में पूरा हो जाएगा, लेकिन इस पर आवागमन अक्टूबर में शुरू होगा। निर्माण का कार्य कर रही कंपनी ने राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण को इस संबंध में जानकारी दे दी है। सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय ने भी प्राधिकरण अफसरों से कहा है कि हर हाल में निर्धारित अवधि में कार्य पूरा करें अन्यथा कंपनी पर कार्रवाई होगी। निर्माण कार्यों के प्रगति की साप्ताहिक रिपोर्ट मंत्रालय को भेजी जा रही है। मंत्रालय की कोशिश है कि जनता को दीपावली पर एक्सप्रेस वे के रूप में बड़ा तोहफा दिया जाए। अगर कार्य देखें तो अभी 90 फीसद काम एलिवेटेड रोड और 98 फीसद काम ग्रीन फील्ड रोड का हुआ है।

एनएचएआई के अधिकारी के मुताबिक सितंबर के पहले पखवारे में काम पूरा होने के बाद एलिवेटेड रोड पर भार परीक्षण की प्रक्रिया पूरी की जाएगी। इसके बाद इसे हल्के वाहनों के लिए खोला जाएगा और फिर अक्टूबर अंत में भारी वाहनों के लिए भी खोल दिया जाएगा। फिलहाल एक्सप्रेस वे के ग्रीन फील्ड हिस्से का काम 98 फीसद पूरा हो गया है। एलिवेटेड हिस्से का काम भी 90 फीसद तक हो गया है।इस एक्सप्रेस वे को नेशनल एक्सप्रेस वे छह के नाम से जाना जाएगा। छह लेन का एक्सप्रेस वे भविष्य में आठ लेन तक किया जा सकेगा क्योंकि इसके स्ट्रक्चर भविष्य में दो लेन विस्तार को ध्यान में रखकर ही बनाए गए हैं। 63 किलोमीटर लंबे एक्सप्रेस वे में 18 किलोमीटर लंबा हिस्सा एलिवेटेड है। इस एक्सप्रेस वे में तीन बड़े, 28 छोटे पुल बन रहे हैं। 38 अंडरपास और छह फ्लाईओवर बनाए जा रहे हैं। इसे पूर्वांचल एक्सप्रेस वे से भी जोड़ने की योजना है।

कानपुर से लखनऊ तक आवागमन आसान नहीं है। वर्तमान हाईवे पर कबरई, हमीरपुर, महोबा, झांसी ,उरई से गिट्टी और मौरंग लदे ट्रकों के आवागमन की वजह से भारी जाम लगता है। कई बार तो लोग दो से ढाई घंटे तक फंस जाते हैं। इस समस्या के समाधान के लिए ही एक्सप्रेस वे का निर्माण किया जा रहा है। जब एक्सप्रेस वे बन जाएगा तो 45 से 50 मिनट में लखनऊ तक पहुंचा जा सकेगा। अभी तो ढाई से तीन घंटे लगता है, इससे लोगों को खासी दिक्कत होती है। कई बार तो एंबुलेंस वाहन भी जाम फंस जाते हैं।

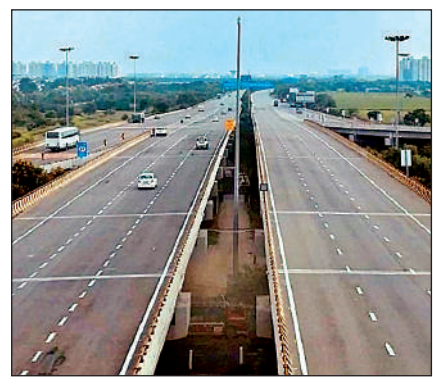

एक्सप्रेस वे कानपुर और आसपास के जनपदों के लोगों के लिए बड़ा तोहफा है। यह प्रोजेक्ट विकास को गति देने वाला है। -रमेश अवस्थी, सांसद

- अभी 90 फीसद काम एलिवेटेड और 98 फीसद काम ग्रीन फील्ड का हुआ
- निर्माण कार्यों में तेजी लाने का आदेश परिवहन मंत्रालय ने एनएचएआई को दिया

व्यापारियों ने फूंके अमेरिका के राष्ट्रपति व कंपनियों के पोस्टर

कानपुर। अमेरिका द्वारा भारत पर 50 फीसदी टैरिफ लगाने से नाराज व्यापारियों ने इसे अमेरिका की ओर से आर्थिक युद्ध की घोषणा बताया। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का पोस्टर जलाते हुए लोगों से अमेरिकी उत्पादों के बहिष्कार का आह्वान किया। भारत माता प्रतिमा स्थल घंटाघर पर हुए प्रदर्शन में डोनाल्ड ट्रंप व अमेरिकी कंपनियों के पोस्टर जलाए गए। इस दौरान भारतीय उद्योग व्यापार प्रतिनिधि मंडल के प्रदेश अध्यक्ष ज्ञानेश मिश्र ने कहा कि अमेरिका के राष्ट्रपति ने भारत पर 50 फीसदी टैरिफ लगाने की घोषणा करके देश को आर्थिक चोट पहुंचाने की कोशिश की है। इसके खिलाफ व्यापारी पूरे देश में अमेरिकन कंपनियों व प्रोडक्ट्स का बहिष्कार करेंगे। जिला अध्यक्ष गुरजिंदर सिंह ने कहा कि अमेरिका के राष्ट्रपति लगातार उल्टे सीधी बयानबाजी भारत के खिलाफ ले रहे हैं। मनीष गुप्ता सलोने, चंद्राकर दीक्षित, आशीष मिश्र राजकुमार भगतानी, नवीन तुलसानी, विनायक पोद्दार, मनोज विश्वकर्मा, इखलाख मिर्ज़ा, अतुल ओमर, पवन गौड़ मौजूद रहे।

86 करोड़ से पनकी में जलभराव की समस्या दूर करने की तैयारी

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

अमृत विचार। पनकी औद्योगिक क्षेत्र का विकास मॉडल औद्योगिक क्षेत्र जैसा होगा। इसके लिए उप्र राज्य औद्योगिक विकास प्राधिकरण प्रबंधन की ओर से डिटेल प्रोजेक्ट रिपोर्ट तैयार कराई जा रही है। फिलहाल जल निकासी के लिए 86 करोड़ रुपये से नालों का निर्माण करने का निर्णय लिया गया है। प्राधिकरण बजट देगा और जल निगम की ओर से निर्माण का कार्य कराया जाएगा। इसके लिए कवायद शुरू कर दी गई है। अभी नालियों के ध्वस्त होने की वजह से बारिश का पानी औद्योगिक इकाइयों में भर जाता है और मशीनरी और उत्पाद खराब होते हैं। नालों का निर्माण हो जाने से इस समस्या से निजात मिल जाएगी।

पनकी औद्योगिक क्षेत्र की स्थापना के बाद उसे नगर निगम को हस्तांरित कर दिया गया था। नगर निगम ही यहां जलनिकासी, कूड़ा प्रबंधन व सड़कों का निर्माण, मरम्मत का कार्य क रहा था। यहां से जो भी टैक्स की वसूली होती थी गृहकर के रूप में उसका 6 फीसद हिस्सा विकास कार्यों पर खर्च करना था। लेकिन नगर निगम की ओर से इस नियम का पालन नहीं किया जा रहा था। इस बात की शिकायत हर बार उद्योग बंधु की बैठक में होती थी। इससे प्राधिकरण के अफसर भी असहज होते थे। ऐसी दिक्कतें उन सभी औद्योगिक क्षेत्रों में थीं जो नगर निकायों को हस्तांरित थे। इस समस्या के समाधान के लिए ही कानपुर के पनकी, रूमा, चकेरी औद्योगिक क्षेत्र को नगर निगम से ले लिया गया और वहां के विकास की जिम्मेदारी प्राधिकरण ने खुद ही उठाने का निर्णय लिया। रूमा में विकास कार्य हो रहा है। चकेरी में गेट बन चुका है। अब पनकी औद्योगिक क्षेत्र के विकास की तैयारी है। यहां जलभराव सबसे बड़ी समस्या है। इसके बाद टूटी सड़कें हैं जो उद्यमियों और वहां आने जाने वाले लोगों के लिए परेशानी का सबब बनती हैं। अब इन समस्याओं का समाधान होगा।

पनकी औद्योगिक क्षेत्र में सड़क पर गड्ढे। अमृत विचार

- नालों का निर्माण करेगा जल निगम, यूपीसीडा करेगा भुगतान

उपलब्धि सीएसए उन्नत किसानों, कृषि निर्यातकों को उपलब्ध कराएगा खाद

खाद के कारण नहीं रुकेगा फल-सब्जी का निर्यात

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

- पिछले वर्ष सब्जी-फल में रसायन की मात्रा पाए जाने की वजह से रद्द हो गए थे ऑर्डर
- पौधे की पत्तियों में डाली जाती विशेष खाद, उपज में रसायन की मात्रा हो जाती नगण्य

अमृत विचार। चंद्रशेखर आजाद (सीएसए) कृषि विवि के सब्जी विभाग की ओर से विशेष खाद का फार्मूला कृषि निर्यातकों को उपलब्ध कराया जाएगा। इससे उन किसानों को लाभ होगा, जो मसाले और फल उगाकर विदेश भेजते हैं यह विशेष खाद जमीन के बजाए पौधों की पत्तियों पर डाली जाती है। इससे फसल में रसायन की मात्रा न्यून हो जाती है। ऐसी उपज की विदेश में जल्द बिक्री होती है।

पिछले वित्तीय वर्ष में फलों और सब्जियों में फर्टिलाइजर की अधिक मात्रा पाए जाने के कारण कृषि निर्यात कारोबारियों व किसानों के कई विदेशी ऑर्डर कैंसिल हो गए थे। इसी के बाद सब्जी विभाग ने विशेष खाद का इस्तेमाल करने की पहल की थी। इसके प्रयोग से खेत में पैदावार की अधिकता के साथ फर्टिलाइजर भी कम निकला। इस पर तय हुआ कि विशेष खाद का फार्मूला उन्नत किसानों व कृषि निर्यातकों को उपलब्ध कराया जाए। सब्जी विभाग के विशेषज्ञ डॉ. राजीव ने बताया कि विभाग में विशेष खाद से फसल और बेहतर बनाने को लेकर अभी भी शोध चल रहा है। इस खाद का फार्मूला उन्नत किसानों के साथ निर्यात से जुड़े किसानों को भी दिया जाएगा।

सस्ती है खाद, किसान घर पर ही कर सकते हैं तैयार

- सब्जी विज्ञान केंद्र में विकसित नई खाद बाजार में मिलने वाली अन्य खादों के मुकाबले सस्ती है। किसान घर पर ही इस फार्मूले से खाद तैयार कर सकेंगे। इस खाद की खास बात यह है कि इसमें 'मैग्नीज' तत्व नहीं है। यह खाद तीन महत्वपूर्ण तत्व 'लोहा' 'जिंक' और 'बोरान' से निर्मित है। खाद पौधे की पत्तियों पर इस्तेमाल किए जाने से प्रदूषण भी नहीं फैलता है। इस खाद से पौधे के फल में रसायन की मात्रा नगण्य हो जाती है।

प्रतियोगिता में लिया हिस्सा

कानपुर। चन्द्रशेखर आज़ाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कानपुर के सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय स्थित 'वस्त्र एवं परिधान' विभाग द्वारा एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में छात्राओं ने हथकरघा उत्पादों की सौंदर्यता और सांस्कृतिक महत्ता को रचनात्मक गतिविधियों के माध्यम से प्रस्तुत किया। इस अवसर पर स्लोगन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें छात्राओं ने हथकरघा की उपयोगिता, स्वदेशी वस्त्रों की विशेषता एवं आत्मनिर्भर भारत की अवधारणा को प्रभावशाली शब्दों में अभिव्यक्त किया।

अमेरिकी चीजों का बॉयकाट करें

कार्यालय संवाददाता, कानपुर।

अमृत विचार। भाजपा उत्तर जिलाध्यक्ष अनिल दीक्षित ने रक्षाबंधन पर बहनों को स्वदेशी उपहार देने व अमेरिकी सामान के बहिष्कार का आह्वान किया। जिला कार्यालय नवीन मार्केट में हुई बैठक में उन्होंने कार्यकर्ताओं से कहा कि अमेरिका के राष्ट्रपति ट्रंप लगातार टैरिफ बढ़ाकर भारत को दवाब में लेने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन आज के भारत का नेतृत्व पीएम मोदी जैसे सशक्त नेता के हाथ में है। ऐसे में भारतीयों का भी कर्तव्य है कि देश की आन बान शान के लिए अमेरिकन कंपनियों और उनके समान का पूर्ण बहिष्कार करें। ताकि अमेरिका को समझ आए।

रक्षाबंधन पर अपनी बहनों को स्वदेशी कंपनियों का उपहार दें। जिला मीडिया प्रभारी अनुराग शर्मा ने बताया कि शुक्रवार दोपहर 11 बजे भाजपा की बहनें देश के सैनिकों, पूर्व सैनिकों को कारगिल पार्क मोतीझील में राखी बांधेगी। बैठक में अवधेश सोनकर, जितेंद्र विश्वकर्मा, राजू, जनमेजय सिंह, सीमा एमबीए, दीपक सिंह, रोहित साहू, मनीष त्रिपाठी, रीना मिश्रा, प्रभाकर अवस्थी, श्याम कुमार, रामकुमार सिंह, रवि पांडे, अधिराज सिंह चंदेल रहे।

नवीन मार्केट में बैठक करते जिला अध्यक्ष अनिल दीक्षित। अमृत विचार

सिटी ब्रीफ

कांशीराम ट्रामा सेंटर में हुआ मेडिकल

कानपुर। एसआईटी कार्यालय से अधिवक्ता अखिलेश दुबे की गिरफ्तारी के बाद बर्रा पुलिस देर रात उनका मेडिकल कांशीराम ट्रामा सेंटर में कराया। देर रात करीब डेढ बजे बर्रा थाने की जीप में अधिवक्ता अखिलेश व दूसरी जीप में लवी मिश्रा को बैठाया गया। लवी की जीप नौबस्ता रैंप से होकर रामादेवी पहुंची, जबकि श्यामनगर रोड होते अखिलेश कांशीराम अस्पताल पहुंचे। लवी ने रास्ते में दूसरे रास्ते पर चलने पर चिंता जताई तो साथ बैठे पुलिस कर्मियों ने उसे भरोसा दिलाया कि दोनों गाड़ियां कांशीराम ही पहुंचेंगी। कुछ देर बाद दोनों अस्पताल पहुंचे। जहां डॉक्टरों ने उनका मेडिकल किया। वापस बर्रा थाने लौटने के बाद सुबह कचहरी ले जाया गया।

डीजीपी को आमंत्रण

कानपुर। उत्तर प्रदेश सराफा एसोसिएशन के अध्यक्ष महेशचंद जैन की अगुवाई में सराफा कारोबारियों ने गुरुवार को लखनऊ में पुलिस महानिदेशक राजीव कृष्ण से मिलकर उन्हें 17 मई को आयोजित अधिवेशन के लिए निमंत्रण दिया। इस अधिवेशन में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ बतौर मुख्य अतिथि मौजूद रहेंगे। प्रतिनिधिमंडल में एसोसिएशन के मंत्री राम किशोर मिश्र, गोपाल अग्रवाल, राजन रस्तोगी शामिल रहे। अधिवेशन बिठूर की गंगा वैली में होगा। इसमें पूरे प्रदेश से सराफा कारोबारी आएंगे।

टेंपो की टक्कर से अधेड़ की मौत

कानपुर। कैंट क्षेत्र में पैदल सड़क पार करते समय तेज रफ्तार टेंपो ने एक अधेड़ को टक्कर मार दी। पुलिस ने परिजनों को हादसे की खबर दी। घायल को अस्पताल ले जाने पर डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया। कैंट के भज्जापुरवा निवासी 55 वर्षीय दिलीप फजलगंज स्थित मीरा इंटरनेशनल फर्म में नौकरी करते थे। पत्नी की कई साल पहले मौत हो चुकी है और बच्चे नहीं है। छोटे भाई मनोज के अनुसार दिलीप टेंपो से फैक्ट्री आते-जाते थे। बुधवार शाम छह बजे गोल्फ कोर्स के पास टेंपो से उतरकर सड़क पार कर रहे थे, तभी तेज रफ्तार दूसरी टेंपो ने टक्कर मार दी थी। कैंट पुलिस के अनुसार परिजनों की तहरीर पर कार्रवाई की जाएगी।

बकाया रकम मांगने पर युवती को पीटा

कानपुर। रेलबाजार में नई बस्ती सुजातगंज निवासी कायनात ने बताया कि उन्होंने अपनी बहन सवीना को बाइक बेची थी। जिसके 10,800 रुपये उधार थे। उन्होंने बताया कि बकाया पैसा मांगने पर सवीना, उसके बेटे आमन और दो बेटियों ने गाली-गलौज कर मारापीटा है। जान से मारने की धमकी दी। मारपीट का वीडियो भी उनके पास है। रेलबाजार थाने में शिकायत पर पुलिस ने कार्रवाई की है। थाना प्रभारी बहादुर सिंह ने बताया कि मामले की जांच की रही है।

विजय प्रभा अग्रवाल की देह दी दान

कानपुर। सर्वोदय नगर स्थित आनंद टावर निवासी विजय प्रभा अग्रवाल (77) का छह अगस्त की शाम रीजेंसी हॉस्पिटल में निधन हो गया। मां के निधन पर बेटी सीमा अग्रवाल ने युग दधीचि देहदान अभियान के प्रमुख मनोज सेंगर से फोन पर संपर्क किया और मां द्वारा लिए गए देहदान का संकल्प पूरा कराने का आग्रह किया। इसपर सेंगर दंपति ने नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉ .शालिनी मोहन की सहायता से नेत्रदान कराया, इसके बाद मेडिकल कॉलेज में देहदान की प्रक्रिया पूरी कराई। एनाटॉमी विभाग के अनंत विजय व उनके सहयोगी, पति सतीश चंद्र अग्रवाल, बेटी सीमा अग्रवाल, दामाद डॉ. मनोज अग्रवाल, एडवोकेट कमलेश कुमार पाठक, आलोक अग्रवाल, कपिल मोहन विज रहे।

सिर पर भारी वार किया, गला दबाकर की हत्या

मसवानपुर में लापता युवक का तालाब में मिला था शव, पोस्टमार्टम रिपोर्ट से हत्या का खुलासा

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

अमृत विचार। रावतपुर के मसवानपुर स्थित फर्रा मस्जिद के पीछे रहने वाले 18 वर्षीय युवक सुमित की हत्या की गई थी। पोस्टमार्टम रिपोर्ट में सिर पर भारी वार के कारण हेडइंजरी और गला दबाने से मौत होना सामने आया है। एकलौते बेटे की मौत से आक्रोशित परिजनों ने पोस्टमार्टम के बाद शव सड़क पर रखकर प्रदर्शन किया। घर के पास जाम लगाया। सूचना पाकर कल्याणपुर एसीपी और थाने का फोर्स पहुंचा और शांत कराया।

सुमित।

मसवानपुर निवासी रज्जन गौतम के लापता बेटे सुमित का शव बुधवार को तीसरे दिन घर के समीप तालाब के पास कीचड़ में मिला था। परिजनों ने क्षेत्र में रहने वाली एक लड़की के पिता व चाचा पर हत्या का आरोप लगाया था। पुलिस ने आरोपियों को हिरासत में लेकर शव पोस्टमार्टम के लिए भेजा था। गुरुवार को सुमित की हत्या की पुष्टि हुई। पोस्टमार्टम रिपोर्ट के अनुसार भारी प्रहार के कारण सुमित के सिर की हड्डियां टूटी मिली हैं। गला दबाने के निशान मिले हैं। शव कीचड़ में पड़ा होने के कारण शरीर पर मारपीट के निशान नहीं मिले। बिसरा जांच के लिए भेजा गया है।

पोस्टमार्टम हाउस से शव लेकर परिजन घर पहुंचे और जाम लगा दिया। एसीपी कल्याणपुर पुलिस बल के साथ पहुंचे और परिजनों से बातचीत कर शांत कराने का प्रयास किया। परिजन लड़की के आरोपी परिजनों को जेल भेजने, फास्ट ट्रैक कोर्ट में मामले की सुनवाई, आरोपियों को फांसी की सजा व थाने से भगाने वाले दारोगा के खिलाफ कार्रवाई और मुआवजे की माग कर रहे थे। पुलिस के आश्वासन पर परिजनों ने नजीराबाद स्थित हिंदू कब्रिस्तान में शव दफनाया।

मृतक सुमित के घर पर जुटी भीड़। अमृत विचार

थाने से परिजनों को भगाने वाला दरोगा हटाया गया

- एसीपी कल्याणपुर ने हंगामा कर रहे परिजनों को शांत कराते हुए हुए बताया कि जिस दारोगा ने उन्हें थाने से भगाया था, उसे हटा दिया गया है। अन्य मांगों के लिए शासन को लिखा जाएगा।

- शव लेकर घर पहुंचे परिजनों ने जाम लगाकर किया हंगामा कल्याणपुर एसीपी ने शांत कराया
- परिजनों ने हत्या के आरोपियों को फांसी की सजा देने की मांग पुलिस से उठाई

प्रेम त्रिकोण में मारा गया सुमित हत्यारोपियों तक पहुंची पुलिस

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

अमृत विचार। सुमित की हत्या में प्रेम त्रिकोण सामने आया है। सुमित की प्रेमिका के दूसरे प्रेमी का नाम हत्या में सामने आ रहा है। पुलिस सूत्रों के अनुसार यह युवक बीते चार साल से सुमित की प्रेमिका के संपर्क में था। इस कारण सुमित, उसकी प्रेमिका और दूसरे प्रेमी के बीच तनाव चल रहा था। सुमित से छुटकारा पाने के लिए प्रेमिका उसे दूसरे प्रेमी के साथ मिलकर रास्ते से हटाना चाहती थी। जांच में पता चला है कि निर्धारित समय पर प्रेमिका ने सुमित को फोन करके तालाब के पास बुलाया और फोन घर पर रखकर आने को कहा। वहां उसके दूसरे प्रेमी ने घात लगाकर सुमित पर पीछे से हमला बोल दिया।

आरोप : लड़की की शादी तय होने पर भी कर रहा था परेशान

फर्रा मस्जिद के पीछे रहने वाले प्राइवेट कर्मी रज्जन गौतम का बेटा सुमित मां सुनीता के साथ तंबाकू फैक्ट्री में काम करता था। उसका मोहल्ले की जिस लड़की से प्रेम प्रसंग था, वह भी उसी फैक्ट्री में काम करती है। घरवालों के अनुसार जिस दिन बेटा लापता हुआ, उसी दिन लड़की के पिता व चाचा ने घर में घुसकर मारपीट की थी और धमकाया था। लड़की के परिजनों का कहना है कि उसकी शादी तय हो गई थी। इसके बाद भी सुमित परेशान कर रहा था।

प्रेम प्रसंग में सुमित की हत्या हुई है। पुलिस हत्यारोपियों तक पहुंच गई है। कुछ साक्ष्य का संकलन बाकी है। जिस पर पुलिस काम कर रही है। जल्द ही हत्या का खुलासा किया जाएगा।

-दिनेश त्रिपाठी, डीसीपी वेस्ट

ट्रांसफार्मर व केबिल बॉक्सों में फाल्ट से गुल रही बिजली

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

अमृत विचार। शास्त्री नगर बड़ा सेंटर पार्क व आसपास के क्षेत्र की बिजली गुरुवार दोपहर करीब 12 बजे गुल हो गई, जो शाम पांच बजे आ सकी। गोविंद नगर क्षेत्र में बिजली सुबह 10 बजे से शाम को चार बजे तक, कान चैम्बर, माल रोड,- म्योर मिल, सिविल लाइंस, केसा हाउस व नवीन मार्केट फीडर की बिजली दोपहर दो बजे से शाम चार बजे तक, ग्वालटोली, बरसाना व आकाशवाणी फीडर की बिजली दोपहर तीन बजे से शाम को छह बजे तक गुल रही। भूमिगत केबिल में फॉल्ट होने से फजलगंज सबस्टेशन के न्यू सरेश बाग फीडर की बिजली दोपहर तीन बजे से शाम को छह बजे तक नहीं थी। यूनाइटेड नगर में आउटडोर केबिल बॉक्स में फॉल्ट होने से तीन बजे से शाम साढ़े छह बजे तक बिजली नहीं थी। केस्को ने 1912 पर आई 1520 शिकायतों में 971 शिकायतों का निस्तारण किया।

आज यहां नहीं आएगी बिजली : शहर के महाबली पुरम के पटेल पार्क व कृष्णा नगर में पोल पेंटिंग व लोड शिफ्टिंग के कारण बिजली सुबह नौ बजे से दोपहर दो बजे तक नहीं रहेगी। नंदलाल एक में पोल लगाने व बाइफर्केशन की वजह से सुबह नौ बजे से दोपहर दो बजे तक, पेड़ छंटाई के कारण स्वरूप नगर में सुबह 10 बजे से दोपहर 12 बजे तक, भूमिगत केबल चार्ज करने की वजह से चावला मार्केट व कच्ची बस्ती में बिजली दोपहर 12 बजे से दोपहर दो बजे तक नहीं रहेगी। विद्युत कालोनी में पोल लगाने के लिए सुबह 11 से दोपहर दो बजे तक बिजली गुल रहेगी।

चोरी की बिजली से चलता मिला मनामा हॉस्पिटल

कानपुर। केस्को की विजिलेंस टीम ने बिजली चोरी रोको अभियान के तहत चीनापार्क सबस्टेशन के अंतर्गत मिल रही शिकायतों के आधार पर चेंकिग की। चमनगंज स्थित मनामा हॉस्पिटल चोरी की बिजली से संचालित मिला। इस संबंध में केस्को की टीम ने मोहम्मद अली पुत्र मोहम्मद रजा के खिलाफ बिजली चोरी की मुकदमा दर्ज कराया। वहीं, बेकनगंज के नाजिरबाग निवासी अलिया, चंदा बेगम और रावतपुर गांव स्थित प्रेमनाथ मिश्रा को बिजली चोरी करते पकड़ा। इसके अलावा तालाक महल के इमरान अहमद व परमिया पुरवा की सुधा देवी शुक्ला बिजली चोरी करते पकड़ी गई। टीम ने सभी के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराई।

एसआईटी के पास छह पाक्सो के मामले, जांच

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

अमृत विचार। पुलिस कमिश्नर को सांसद अशोक कुमार रावत ने बीते दिनों एक पत्र लिखा था। शिकायत की थी कि कुछ लोग संगठित गिरोह बनाकर दुष्कर्म, पाक्सो जैसे झूठे मुकदमे दर्ज करवाकर अवैध तरीके से धन की उगाही कर रहे हैं। सांसद के इस पत्र पर पुलिस आयुक्त ने तीन मार्च 2025 को एसआईटी का गठन किया था। एसआईटी को अब तक 54 शिकायतें मिली हैं जिसमें आठ शिकायतें चर्चित वकील अखिलेश दुबे और उनके साथियों से जुड़ी हैं। गुरुवार को अपने कार्यालय में एडीसीपी क्राइम अंजलि विश्वकर्मा ने यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि अब तक की जांच में दो केस जमीन से जुड़े मिले हैं जबकि छह केस पाक्सो के सामने आए हैं जिसमें मुकदमा दर्ज कराया गया है। जांच में एक महिला के प्रार्थना पत्र पर दो मुकदमे दर्ज होने की बात सामने आयी है। अभी इन मामलों में जांच कर साक्ष्य जुटाया जा रहा है। एसआईटी को जांच के दौरान पुलिस, केडीए और राजस्व विभाग के कर्मियों का भी नेक्सेस मिला है जिसकी जांच चल रही है।

- एसआईटी को मिली 54 शिकायतों में आठ शिकायतें वकील अखिलेश दुबे और साथियों की

कई संगठित गिरोह कर रहे हैं काम

- एडीसीपी क्राइम ने बताया कि जो शिकायतें एसआईटी को मिली थीं उनमें से कई शिकायतों को एडीसीपी स्तर पर जांच के लिए भेजा गया है। शिकायतों की जांच से सामने आया है कि शहर में कई ऐसे गिरोह संचालित हो रहे हैं जिसमें पुलिस, लेखपाल और केडीए कर्मियों की मिलीभगत से जमीनों पर वसूली का खेल चल रहा है। उन्होंने बताया कि ऐसे कुछ गैंग चिंहित कर लिए गए हैं जबकि कुछ के खिलाफ साक्ष्य जुटाए जा रहे हैं। इनकी सूची बनाकर ऑपरेशन महाकाल के तहत इनके खिलाफ बड़ी कार्रवाई की जाएगी।

अधिवक्ता अखिलेश दुबे व लवी भेजे गए जेल

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

अमृत विचार। रंगदारी मांगने व जान की धमकी के मामले में अधिवक्ता अखिलेश दुबे और आयुष मिश्रा उर्फ लवी को मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट सूरज मिश्रा की कोर्ट ने गुरुवार को 14 दिन की न्यायिक अभिरक्षा में जेल भेज दिया। दोनों की ओर से जमानत अर्जी दाखिल की गई थी, लेकिन दस साल तक की सजा का अपराध होने के कारण सीजेएम कोर्ट ने खारिज कर दी। अब शुक्रवार को सेशन कोर्ट में अर्जी दाखिल की जा सकती है। पेशी के दौरान कोर्ट परिसर में कड़ी सुरक्षा व्यवस्था रही। कचहरी परिसर में पेशी के दौरान फोटो खींचने को लेकर आरोपी चिढ़ गए।

भाजपा नेता रवि सतीजा ने 50 लाख रंगदारी मांगने और जान से मारने की धमकी देने की बर्रा थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई थी। इसमें बताया था कि एक जनवरी 2024 की रात उन्हें व्हाट्सएप कॉल पर जान से मारने की धमकी दी गई और चार जनवरी को पाक्सो एक्ट के तहत झूठी रिपोर्ट दर्ज कराई गई। पुलिस जांच में मामला झूठा और नियोजित मिला। इस पर पुलिस ने मुकदमा निरस्त कर दिया।

इसके बाद भी धमकी मिलती रही। रवि के अनुसार अखिलेश दुबे ने अपने कार्यालय बुलाकर कहा था कि मुकदमे से बाहर होना है तो 50 लाख देने होंगे। आरोपियों में विमल यादव, शैलेंद्र उर्फ टोनू यादव और लवी मिश्रा के नाम थे। इसी मामले में गुरुवार को अखिलेश और लवी को मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट की कोर्ट में पेश किया गया। जहां से उन्हें जेल भेजा गया।

जेल जाते अखिलेश दुबे। अमृत विचार

- कोर्ट ने सात में से तीन धाराओं में 14 दिन की न्यायिक हिरासत दी

धाराएं

308 (2) - धमकाकर जबरन वसूली करना-सात साल कैद

308 (5)- मौत का डर दिखाकर जबरन वसूली करना-10 साल

351 (3)- किसी को जान से मारने या गंभीर चोट पहुंचाने की धमकी देना- 7 साल

जमानत अर्जी खारिज, आज सेशन में अपील

- मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट की कोर्ट में अखिलेश दुबे व लवी का जमानत प्रार्थनापत्र दिया गया। अभियोजन में इसका विरोध किया। इसके बाद कोर्ट ने दोनों की जमानत अर्जी खारिज कर दी। बचाव पक्ष के अधिवक्ता मिथिलेश द्विवेदी ने बताया कि अब शुक्रवार को सेशन कोर्ट में जमानत अर्जी लगाई जाएगी।

कड़ी सुरक्षा में आए कोर्ट, एलआईयू ने रखी सतर्कता

- अखिलेश व लवी को पुलिस की कड़ी सुरक्षा में जिलाधिकारी कार्यालय के पीछे गेट से लाया गया और सीजेएम कोर्ट में पेश किया गया। इस दौरान जिलाधिकारी कार्यालय के बाहर, सीजेएम कोर्ट के बाहर और कचहरी के शताब्दी द्वार पर भारी फोर्स और क्यूआरटी के जवान मुस्तैद रहे। एलआईयू की टीम भी हर पल की जानकारी लेकर अफसरों को अपडेट करती रही।

साक्ष्य जुटाने में जुट गई पुलिस टीम

- **कानपुर।** अधिवक्ता अखिलेश दुबे की बुधवार देर शाम गिरफ्तारी के बाद पुलिस टीम उनके खिलाफ साक्ष्य जुटाने में जुट गई है। बुधवार देर रात एडीसीपी योगेश कुमार की अगुवाई में पुलिस बल ने उनके घर और कार्यालय पर दबिश दी। जहां मौजूद कुछ महिलाओं ने कार्रवाई का विरोध भी किया। हालांकि महिला पुलिस कर्मियों ने उन्हें समझाकर शांत कराया। बताया कि कार्रवाई से रोकना अपराध है। इसके बाद पुलिस कर्मियों ने घर के अंदर और कार्यालय में मौजूद मिले लैपटॉप, डेस्कटॉप कंप्यूटरों के सीपीयू को साथ ले गई। इनकी जांच कराई जाएगी। डीसीपी साउथ दीपेंद्र नाथ चौधरी ने बताया कि टीम ने दबिश दी थी।

वसूली, जान से मारने की धारा में न्यायिक अभिरक्षा हुई मंजूर

- कोर्ट ने धमकाने, मौत का डर दिखाकर वसूली और जान से मारने की धाराओं में न्यायिक अभिरक्षा मंजूर की। वहीं कोर्ट ने मूल्यवान प्रतिभूति, वसीयत की जालसाजी करने, किसी को धोखा देने के लिए जालसाजी कर इलेक्ट्रानिक साक्ष्य और दस्तावेज तैयार करने, जाली दस्तावेज या इलेक्ट्रानिक रिकार्ड को जानबूझकर असली के रूप में उपयोग करने और अपराध करने या किसी संपत्ति पर काबिज व्यक्ति को डराने के इरादे से प्रवेश करने में न्यायिक अभिरक्षा नहीं दी।

दिव्यांगों को मिलेगा प्रशिक्षण व रोजगार

कानपुर। दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग, जिला उद्योग केंद्र, सेवायोजन कार्यालय और कौशल विकास मिशन के संयुक्त प्रयास से दिव्यांगों को न सिर्फ प्रशिक्षण दिलाया जाएगा, बल्कि उनकी योग्यता के अनुसार रोजगार भी उपलब्ध कराया जाएगा। जिला दिव्यांगजन सशक्तिकरण अधिकारी विनय उत्तम के मुताबिक जिले के जो भी दिव्यांगजन रोजगार प्राप्त करना चाहते हैं, वे अपना रिज्यूम कार्यालय में सीधे जमा करें या व्हाट्सएप नंबर 8189038785 पर भेज सकते हैं।

शादी का झांसा देकर किया दुष्कर्म, आरोपी गिरफ्तार

कानपुर। बजरिया में युवती को शादी का झांसा देकर नशीला पदार्थ खिलाकर दुष्कर्म किया और अश्लील वीडियो बना लिया। वायरल करने की धमकी देकर आरोपी लगातार शोषण करता रहा। शादी का दबाव डालने पर जान से मारने की धमकी दी। पीड़िता की शिकायत पर पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार किया है। बजरिया निवासी युवती का आरोप है कि साल पहले उसकी मुलाकात गांधीनगर के साहिल दयाल उर्फ टोनू से हुई थी। उनके बीच दोस्त हुई। इसके बाद उसने शादी का झांसा देकर मिलने के लिए होटल में बुलाया। जहां नशीला पदार्थ देकर उससे दुष्कर्म किया। उसकी अश्लील वीडियो वायरल करने की धमकी देकर कई साल तक शारीरिक शोषण करता रहा। शादी का दबाव बनाने पर मारपीट की। आरोपी की हरकतों से तंग आकर पीड़िता ने मामले की शिकायत पुलिस से की। बजरिया थाना प्रभारी ने बताया कि आरोपी साहिल दयाल के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज की गई है। गिरफ्तार कर जेल भेजा गया है।

बालिकाओं को दें हुनरमंद प्रशिक्षण

कानपुर। स्वरूप नगर स्थित राजकीय बालिका गृह का जिलाधिकारी जितेन्द्र प्रताप सिंह ने गुरुवार को औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने बालिकाओं से बातचीत कर उनकी पढ़ाई, रुचियों, जरूरतों और भविष्य की योजनाओं के बारे में जानकारी ली। जिलाधिकारी ने भोजन, स्वास्थ्य, स्वच्छता, सुरक्षा और शिक्षा से जुड़ी व्यवस्थाओं का बारीकी से जायजा लिया। जिला प्रोबेशन अधिकारी से कहा कि उनके लिए विभिन्न प्रकार के हुनरमंद प्रशिक्षण की व्यवस्था कराई जाए

न्यू कानपुर सिटी के लिए और भूमि ली

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

अमृत विचार। न्यू कानपुर सिटी योजना लॉन्च करने के लिए केडीए शेष बची जमीन खरीदने में जुटा है। प्रशासन की मदद से किसानों को समझाने का काम जारी है। गुरुवार को केडीए ने 11 किसानों को 1.26 करोड़ रुपये का मुआवजा देकर 1.40 हेक्टेयर जमीन खरीदी। स्वतंत्रता दिवस पर योजना लॉन्च होगी। केडीए फिर एक बार तय की गई तिथि पर योजना लॉन्च कर पाएगा, इसे लेकर र संशय बना हुआ है। किसानों को समझाने और योजना के फायदे बताने को 4 अन्य अधिकारी तैनात कर दिए गए हैं।

केडीए उपाध्यक्ष मदन सिंह एवं सचिव अभय कुमार पाण्डेय के निर्देश पर केडीए के भूमि बैंक अनुभाग एवं नोडल व विशेष कार्याधिकारी डॉ. रवि प्रताप सिंह के नेतृत्व में कुल 11 किसान साक्षी मित्तल, प्रियंका अग्रवाल, संदीप अग्रवाल, सुभागी अग्रवाल, ज्ञान प्रकाश अग्रवाल, माला अग्रवाल, कचंन साहू, राम प्रकाश गुप्ता, राम गोपाल, विनोद, मनोज गुप्ता, माया देवी से लगभग 1.40 हेक्टेयर भूमि केडीए के पक्ष में क्रय की गई। सभी को सर्किल दर से 4 गुना मूल्य यानि एक करोड़ पच्चीस लाख निन्यानबे हजार नौ सौ अड़सठ रुपये के डिमाण्ड ड्राफ्ट वितरित किए गए। चन्द्रपाल, लिपिक अमीन प्रदीप कुमार, रामलाल व प्राधिकरण द्वारा नामित अधिवक्ता धीरज सैनी मौजूद रहे। विशेष कार्याधिकारी डॉ. रवि प्रताप सिंह ने बताया कि नामित एजेन्सी एग्रीमा द्वारा लोकहित में सामाजिक समाघात आकलन की अन्तिम रिपोर्ट 4 अगस्त को अपर जिलाधिकारी के यहां दें।

- 11 किसानों को 1.26 करोड़ रुपये दिया गया मुआवजा
- लोगों को समझाने और योजना के फायदे बताएंगे 4 अधिकारी

कवायद

नगर आयुक्त ने चुन्नीगंज स्थित कन्वेंशन सेंटर का किया औचक निरीक्षण किया

शहर को बताएं किसके कितना काम आएगा कन्वेंशन सेंटर

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

अमृत विचार। चुन्नीगंज में बन रहे कन्वेंशन सेंटर के कार्यों को देखने अचानक पहुंचे नगर आयुक्त सुधीर कुमार ने शेष निर्माण कार्य शीघ्र पूरा करने के निर्देश दिए। उन्होंने कार्यदायी संस्था से कहा कि प्रत्येक घटक की उपयोगिता का विस्तृत विवरण तैयार किया जाए। कन्वेंशन सेंटर के संचालन एवं रखरखाव के लिए निविदा प्रक्रिया को जल्द पूरा किया जाए। सेंटर से शहर को संभावित लाभ का संक्षिप्त विवरण तैयार करके प्रस्तुत किया जाए। ताकि, आम लोगों को भी इसकी जानकारी मिल सके।

चुन्नीगंज स्थित कन्वेंशन सेंटर का औचक निरीक्षण करते नगर आयुक्त।

नगर आयुक्त गुरुवार को जोन 2, 3, 5 एवं 6 के अंतर्गत विभिन्न वार्डों का औचक निरीक्षण किया। उन्होंने स्वच्छता कार्यों, डोर-टू-डोर कूड़ा कलेक्शन, पालतू व आवारा पशु नियंत्रण एवं स्मार्ट सिटी परियोजनाओं की प्रगति जानी। वार्ड-66, पशुपति नगर में रामलीला ग्राउंड का निरीक्षण किया गया, जहां कर्मचारियों द्वारा सफाई कार्य होता पाया। डोर-टू-डोर कूड़ा कलेक्शन कार्य के दौरान शत-प्रतिशत कूड़ा उठान के निर्देश दिए। मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी को मैदान में विचरण कर रहे पशुओं को पकड़ने एवं पालक पर आवश्यक अर्थदंड लगाने के निर्देश दिए।

- शहर भर में घूमकर सफाई व्यवस्था के साथ असहाय पशुओं की समस्या भी देखी

वार्ड-66 में छह कर्मी अनुपस्थित मिले, मलबा डंपिग की शिकायत

- वार्ड-66 में निरीक्षण के दौरान छह कर्मचारी अनुपस्थित पाए गए, जिन पर नियमानुसार कार्रवाई के निर्देश दिए। यहां नागरिकों ने मलबा डंपिग की शिकायत की, जिसको तत्काल हटवाने के निर्देश दिए। जोन-3 के निरीक्षण डोर-टू-डोर कूड़ा कलेक्शन व्यवस्था की समीक्षा की गई।

केडीए, नगर निगम व जलकल में लगाया जाएगा सोलर पैनल

- नगर आयुक्त की अध्यक्षता में नगर निगम शिविर कार्यालय में शाम को बैठक हुई। जिसमें केस्को, जलकल विभाग, कानपुर विकास प्राधिकरण, मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी ने भाग लिया। निर्णय लिया गया कि नगर निगम मुख्यालय, जलकल भवन, केडीए भवन जैसे प्रमुख सरकारी परिसरों में सौर ऊर्जा पैनलों की स्थापना की जाए।

ऑटो चालक से लूटपाट में किशोर समेत दो गिरफ्तार

संवाददाता, कल्याणपुर

अमृत विचार। पनकी में बीते सप्ताह ऑटो चालक से हुई लूट मामले में पुलिस ने दो आपोपियों को गिरफ्तार कर जेल भेजा है। आरोपियों ने घंटाघर से पनकी के गोपालपुर के लिए ऑटो बुक कराकर इंडस्ट्रियल एरिया में लूट की वारदात को अंजाम दिया था।

विजयनगर निवासी जगमोहन आटो चालक हैं। बीते बुधवार वह घंटाघर के पास खड़े होकर सवारियों का इंतजार कर रहे थे, तभी तीन लोगों ने पनकी के गोपालपुर लेकर ऑटो बुक कराया था। इंडस्ट्रियल एरिया पहुंचने पर युवकों ने उनके साथ मारपीट कर मोबाइल, जेब में पड़े दो हजार रुपये व ऑटो लूटकर भाग निकले थे। इस मामले में पनकी पुलिस व सर्विलांस टीम ने हनुमंत विहार निवासी मनीष ओमर व एक किशोर को इंडस्ट्रियल एरिया स्थित घर से दबोचा। पुलिस ने आरोपियों के पास से लूट के एक हजार रुपये व दो ऑटो बरामद किया है। दूसरी ऑटो को शातिरों ने कानपुर देहात के गजनेर से लूटा था। पनकी इंस्पेक्टर ने बताया कि किशोर को बाल सुधार गृह व उसके साथी को जेल भेजा गया है। गजनेर के ऑटो चालक के बारे में पता कर रहे हैं।

अमृत विचार

जर्जर फजलगंज मार्ग।

बारिश में जगह-जगह धंसी और ध्वस्त हुई सड़कों से शहर में आवागमन मुहाल

सड़कों पर सावन के झूले गड्ढे दे रहे 'स्मार्ट' हिचकोले

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

अमृत विचार। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के सड़कों को गड्ढा मुक्त करने के आदेश और लोक निर्माण विभाग व नगर निगम समेत संबंधित विभागों को सड़कों के बेहतर रखरखाव तथा समय-समय पर मरम्मत कराने की नसीहत से अधिकारी जैसे बेपरवाह हैं, ऐसा नहीं होता तो बारिश के मौसम में पूरे शहर में सड़कों की दुर्दशा जरूर दिखाई पड़ती। बारिश में जगह-जगह धंसी और ध्वस्त हुई सड़कों पर कार सवारों को भी ऐसे हिचकोले और झटके लग रहे हैं, जैसे सावन के मौसम में झूला झूल रहे हैं। स्मार्ट सिटी का तमगा लिए कानपुर नगर के सड़कों की स्थिति वर्तमान में काफी दायनीय है। न ही इस ओर नगर निगम कोई ध्यान दे रहा है और न ही लोक निर्माण विभाग के जिम्मेदार अधिकारी कोई सुध ले रहे है। नतीजन प्रतिदिन सैकड़ों वाहन सवार लोगों को खराब व उखड़ी हुई सड़कों पर आवागमन करना पड़.रहा है।

कोपरगंज जाने वाली सड़क पर गड्ढे ही गड्ढे। अमृत विचार

जरीब चौकी क्रासिंग के आगे दुर्दशा

- जरीब चौकी से फजलगंज की ओर जाने पर जैसे वाहन सवार आगे बढ़ते है तो उनको जेके जूट मिल गेट के पास खराब सड़क से होकर गुजरना पड़ रहा है। इसके बाद दर्शनपुरवा पुलिस चौकी के आगे सड़क पर गड्ढे हो गए, लेकिन संबंधित विभाग द्वारा कोई ध्यान नहीं दिया जा रहा है। वहीं, कालपी रोड पर एरिया मिल चौकी के पास चौराहे पर सड़क की काफी दुर्दशा है। यहां गड्ढे भी है, बजरी भी फैली है और गिट्टियां भी ऊपर दिख रही है।

जरीब चौकी के पास सड़क की स्थिति। अमृत विचार

गोविंद नगर पुल से उतरने पर मिलती गड्ढे में सड़क

- गोविंद नगर नया पुल उतरने पर कई बार कुछ वाहनों की गति अधिक होती है, ऐसे में पुल के नीचे ही सड़क काफी टूटी और गड्ढा युक्त है, जिसमे कई बार वाहन सवार उछल जाते है और कुछ बाइक व स्कूटी सवार गिर जाते है। सड़क में गड्ढे होने के साथ ही उसके आसपास बजरी भी फैली हुई है और पास में यातायात पुलिस कर्मी भी खड़े रहते है। बजरी में फिसलकर कई बार बाइक व स्कूटी सवार गिरकर चुटहिल हो जाते है। वहीं, संत नगर से गोविंद नगर जाने वाली सड़क की भी दुर्दशा है।

गड्ढे ही गड्ढे हर राह में, जान हथेली पर लेकर चल रहे दो पहिया वाहन सवार

पानी में बह गए गड्ढा मुक्त सड़कों के सारे दावे, वाहनों की रफ्तार रुकने से जाम

राष्ट्रीय राज्यमार्ग पर भी हो गए बड़े-बड़े गड्ढे

रामादेवी से जाजमऊ जा रहे हाईवे की स्थिति। अमृत विचार

- गड्ढे सिर्फ शहर की सड़कों पर ही नहीं है, बल्कि राष्ट्रीय राज्यमार्ग की सड़क की भी हालत खराब है। रामादेवी से जाजमऊ तक जाने वाली मार्ग पर जगह-जगह गड्ढे हो गए है। इस मार्ग की स्थिति ऐसी तब है, जब कुछ दिनों पहले ही पुल की मरम्मत कराए जाने के दावे किए जा रहे थे। इसके अलावा कोपरगंज से झकरकटी पुल जाने वाली सड़क और माल रोड से पनचक्की चौराहा वाली सड़क भी बदहाली का शिकार हो गई है। वहीं, किदवई नगर क्षेत्र की सड़क भी काफी खराब है।

शहर की सड़कों पर हजारों गड्ढे है, जिनकी वजह से प्रतिदिन बाइक व स्कूटी सवार चुटहिल हो रहे हैं। स्मार्ट सिटी कॉरिडोर में जल निकासी की व्यवस्था नहीं है। हालत यह है कि सड़कें इस वजह से टूट रही हैं।

-शैलेंद्र यादव

शहर की सड़कों की हालत इन दिनों काफी खराब है, जिसकी वजह से हजारों वाहन सवार लोगों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। प्रशासन को जल निकासी की व्यवस्था करनी चाहिए।

-मसूदुल हसन

सड़क मरम्मत के बाद संबंधित विभाग और कंपनी अगर समय-समय पर सड़क की निगरानी करे तो जनता को परेशानी का सामना नहीं करना पड़ेगा। नाले सड़कों के किनारे बनें ताकि जलभराव न हो। पानी भरने से सड़कें टूटती हैं।

- अभिषेक पांडे

भाजपा सरकार की स्मार्ट सिटी की पोल सड़कें युक्त गड्ढे और सड़कों व गलियों में भरा पानी खोल रहा है, जिसके कारण वर्तमान में लोगों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। गड्ढों की वजह से आए दिन हादसे होते हैं।

- रुद्र कनौजिया

इस्पात नगर में नारकीय हालात दूर होने की आस

जाजमऊ पुल से पहले सड़क पर फैली बजरी। अमृत विचार

वाहनों का मेंटीनेंस और हड्डियों में फ्रैक्चर बढ़े

- बाइक व स्कूटी गड्ढे में जाने की वजह से न सिर्फ वाहनों का मेंटीनेस का खर्च बढ़ रहा है, बल्कि रीढ़ की हड्डी, कूल्हे और गर्दन संबंधित समस्या का भी सामना बड़ी संख्या में प्रतिदिन लोगों को करना पड़ रहा है। कई बार तो वाहन सवार फैली गिट्टी और बजरी की वजह से फिसलकर गंभीर चुटहिल हो जाते हैं।
- शहर के सड़कों की स्थिति बारिश के मौसम में और अधिक खराब हो गई है। गड्ढों में पानी भरने की वजह से उनमे बाइक व स्कूटी जाने से लोग गिर तक जा रहे है। कार के पहिये गड्ढे में जाने से उनमे सवार लोगों के कंधे और पीठ पर दिक्कत हो रही है। ई-रिक्शा, ऑटो व टेंपो कई बार गड्ढे में जाने की वजह से पलटते या पलटते हुए बचते हैं। लेकिन लोगों की शिकायत है कि महापौर प्रमिला पांडेय, सांसद रमेश अवस्थी, सांसद देवेंद्र सिंह भोले, विधायक और पार्षद इस अहम मुद्दे पर जनता के दर्द को नहीं समझ रहे हैं।

कार्यालय संवाददाता कानपुर।

अमृत विचार। इस्पात नगर की तस्वीर जल्द बदलेगी। सड़कें चलने लायक होंगी, ड्रेनेज व्यवस्था दुरुस्त होगी और रात में अंधेरे से व्यापारियों और उद्यमियों के साथ कर्मचारियों को निजात मिलेगी। 12 करोड़ रुपये से क्षेत्र की तस्वीर बदलेगी। बरसात में अभी यहां हालात नारकीय हैं। सीवर, लाइट और सड़क निर्माण के लिए अलग-अलग डीपीआर बनाने के लिए नगर निगम ने जलकल, मार्ग प्रकाश और पीडब्ल्यूडी को पत्र भेजा है।

इस्पात नगर की टूटी सड़क में भरा पानी। अमृत विचार

12 करोड़ रुपये से किए जाएंगे सीवर लाइन, लाइट और सड़क बनाने के काम

- नगर निगम ने जलकल, मार्ग प्रकाश और पीडब्ल्यूडी से डीपीआर बनाने को कहा है
- टूटी सड़कों और जलभराव के कारण वाहनों की कमानी तक टूट जाती है, हादसे होते हैं

स्ट्रीट लाइट लगेंगी सीवर लाइन पड़ेगी

इस्पात नगर में स्ट्रीट लाइटें खराब होने से रात में अंधेरा छाया रहता है। इससे श्रमिकों, उद्यमियों एवं नागरिकों को आवागमन में दिक्कत होती है। नगर निगम नई लाइटें लगाने का डीपीआर बना रहा है। जल निकासी की भी व्यवस्था नहीं है। सीवर लाइन डाली ही नहीं गई है। इससे क्षेत्र में जलभराव रहता है। अब नई सीवर लाइन डालने के साथ जलनिकासी व्यवस्था के निर्देश दिए गए हैं।

बर्रा आठ से जरौली मार्ग की हालत। अमृत विचार

सिटी ब्रीफ

पूजन करतीं श्रद्धालु।

मनाया रक्षाबंधन का महोत्सव

कानपुर। नवीन नगर स्थित ब्रहमा कुमारीज सेंटर की ओर से पांडु नगर स्थित ललित श्यामदासानी के आवास पर रक्षाबंधन महोत्सव का आयोजन किया। कार्यक्रम की शुरुआत बीके अर्चना दीदी व एडवोकेट संजय जाटव ने की। बीके अर्चना दीदी ने रक्षाबंधन का आध्यात्मिक महत्व बताया और मेडिटेशन करवाया। एडवोकेट संजय जाटव ने संस्था के लोगों का ऐसे कार्य करने के लिए उत्साहवर्धन किया। इस दौरान महक खत्री, ललित श्यामदासानी, अमित खत्री, महक श्यामदासानी, विकास सिंह भोले, गौरव सेवानी, मुकेश श्यामदासानी, सरिता सपना, पूनम, रिचा, बलवंत माखिजा रहे।

उत्पाद देखतीं महिलाएं।

द क्लेय नेस्ट से लौटेगी मिट्टी की खुशबू

कानपुर। शारदा नगर स्थित क्यू ब्लॉक में प्रावी हॉस्पिटल के पास द क्लेय नेस्ट का उद्घाटन हुआ। इसका उद्देश्य सिर्फ स्वस्थ खाना पकाने को बढ़ावा देना ही नहीं, बल्कि भारत के पारंपरिक कुम्हार समुदाय को आर्थिक रूप से सशक्त बनाना है। इसके माध्यम से देश के कारीगरों को रोजगार प्रदान किया गया है। संस्थापक राहुल मित्तल ने बताया कि हर घर में फिर से मिट्टी की खुशबू लौटे, ऐसा तब होगा, जब हम प्रकृति से जुड़ेंगे, तभी हम अपने शरीर और समाज दोनों को स्वस्थ बना सकेंगे। द क्लेय नेस्ट ऐसा ब्रांड है, जो मिट्टी के शुद्ध और स्वास्थ्यवर्धक बर्तनों की श्रृंखला को आपके घर तक पहुंचाता है। आधुनिक जीवनशैली में पारंपरिक मिट्टी के बर्तनों को फिर से स्थान दिलाने के लिए प्रतिबद्ध है।

सौभाग्य योग में कल मनेगा रक्षाबंधन पर्व

कानपुर। रक्षाबंधन पर्व इस बार शुभता और विशेष संयोगों के साथ शनिवार को मनाया जाएगा। बहनों को भाइयों की कलाई पर स्नेह की डोर बांधने का पूरा दिन मिलेगा। इसकी वजह इस वर्ष पर्वकाल में भद्रा का कोई प्रभाव न होना है। पर्व पर सौभाग्य योग बन रहा है।

इस साल महाशुभ संयोग बन रहा है

ज्योतिषाचार्य पं.मनोज कुमार द्विवेदी ने बताया कि पंचांग के अनुसार इस बार रक्षाबंधन पर श्रवण नक्षत्र, सौभाग्य योग और सर्वार्थसिद्धि योग जैसे महाशुभ संयोग बन रहे हैं। रक्षा बंधन पर श्रवण नक्षत्र और शनिवार का योग बहुत कम बनता है। इस दिन चंद्र मकर राशि में रहेगा और मकर राशि के स्वामी शनि है। शनिवार का स्वामी भी शनि है और श्रवण नक्षत्र जो शनि की राशि की कक्षा में आते है। यह अपने आप में दुर्लभ माना जाता है। यह योग सभी राशियों के लिए फलदायक हैं।

राखियों की खरीदारी करतीं महिलाएं। ● अमृत विचार

राखी बांधने का शुभ समय

श्रावण माह की पूर्णिमा तिथि 8 अगस्त को दोपहर 2 बजकर 13 मिनट से शुरू हो जाएगी। समापन 9 अगस्त को दोपहर 1 बजकर 24 मिनट पर होगा। उदयातिथि के अनुसार रक्षाबंधन 9 अगस्त को ही मनाया जाएगा। रक्षाबंधन का दिन भद्रा से मुक्त रहेगा। ऐसे में राखी बांधने के लिए सूर्योदय से लेकर दोपहर 1 बजकर 24 मिनट तक का समय सबसे शुभ है। अभिजीत मुहूर्त (दोपहर 11:48 से 12:40 तक) में भी राखी बांधना बेहद शुभ माना जाएगा। जो लोग दोपहर तक राखी न बांध पाएं वो शाम तक राखी बांध सकते हैं, क्योंकि उदयातिथि में ढाई घंटे से अधिक तक पूर्णिमा तिथि रहेगी।

- बहनों को भाइयों की कलाई पर स्नेह की डोर बांधने के लिए मिलेगा पूरा दिन
- बाजार में खरीदारों की बढ़ने लगी भीड़, जगह-जगह सजीं राखी की दुकानें, राखियों से पटा बाजार

बाजार में खरीदारी का माहौल

रक्षाबंधन पर्व पर खरीदारी के लिए बाजार सज गए हैं। मेस्टन रोड, शिवाला, आर्य नगर, वरूप नगर, गुमटी, लाल बंगला सहित अन्य बाजारों में राखी की खरीदारी के लिए दुकानें सज गई है। ऑर्डर देने पर धागे में सजी मेटल में भाई के नाम की राखी मिल रही है। कुछ दुकानों में फोटो वाली राखी का भी क्रेज है।

14 मिठाई की दुकानों पर छापे 57 नमूने भरे, माल सीज किया

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

अमृत विचार। रक्षाबंधन के त्योहार पर लोग मिलावटी र केमिकल युक्त मिठाई या सामग्री का सेवन करके बीमार न हों, इसके लिए खाद्य सुरक्षा विभाग सतर्क हो गया है। त्योहार से पहले विभाग की टीम ने शहर में 14 मिष्ठान की दुकानों पर छापेमारी करके 57 नमूने एकत्र कर जांच के लिए भेजा और संदेह के आधार पर छेना, बर्फी व खोया को मौके पर नष्ट कराया।

खाद्य सुरक्षा विभाग के सहायक आयुक्त (खाद्य)-11 संजय प्रताप सिंह की पांच टीमें 14 लोकमन मोहाल, कैनाल रोड, शास्त्री नगर, काकादेव, एलआईजी-70, अम्बेडकर नगर, लक्ष्मण पार्क, गांधी नगर, बारादेवी चौराहा, ब्रह्मनगर, किदवईनगर एच ब्लॉक, बेकनगंज व सजेती मेन रोड पहुंची। यहां मिठाई की दुकानों से टीम ने बूंदी लड्डू, बेसन, पेड़ा, खोया, छेना मिठाई, मिश्रित दूध, पनीर व बर्फी की जांच की। 57 नमूने एकत्र कर टीम ने जांच के लिए प्रयोगशाला भेजे। टीम ने कल्याणपुर क्षेत्र पनकी रोड में में छापेमारी करके 10 किग्रा खोया, 10 किग्रा बर्फी और 400 अदद सफेद रसगुल्ला को संदेह के आधार पर तत्काल नष्ट कराया। सहायक आयुक्त (खाद्य)-11 संजय प्रताप सिंह के मुताबिक निरीक्षण के दौरान नौबस्ता क्षेत्र स्थित एक मिठाई निर्माण इकाई में अत्यंत अस्वच्छ परिस्थिति में मिठाई बनाते हुए पाया गया, जहां से सभी खाद्य पदार्थ सीज किए गए। टीम ने कुल 5.67 लाख खाद्य सामग्री सीज की है।

जांच करती खाद्य सुरक्षा विभाग की टीम। अमृत विचार

- रक्षाबंधन पर मिलावटखोरों के खिलाफ सख्त हुआ खाद्य सुरक्षा विभाग, चलाया अभियान

पीएमएसएसवाई, अस्पताल के वार्ड, जन औषधि केंद्र और हॉस्टल का देखा हाल, दिशा- निर्देश दिए

स्वास्थ्य सुविधाओं का जायजा लेने हैलट आई शासन की टीम

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

अमृत विचार। जीएसवीएम मेडिकल कॉलेज के अंतर्गत हैलट अस्पताल में मरीजों को कैसे और किस प्रकार की स्वास्थ्य सुविधा दी जा रही है, इसका जायजा लेने शासन स्तर से आई दो सदस्यीय टीम ने जांच की। ओपीडी व आईपीडी रजिस्टर, दवाओं का स्टॉक और दी जा रही स्वास्थ्य सुविधाओं की जानकारी ली। मेडिकल वेस्ट व सफाई व्यवस्था पर जोर दिया और कैंटिन में रेट लिस्ट और दवाओं की लिस्ट चस्पा करने के निर्देश दिए।

जीएसवीएम मेडिकल कॉलेज के हैलट अस्पताल में शासन की ओर से नामित केजीएमयू के डॉ. परवेज खान और डॉ.विजय कुमार सबसे पहले पीएमएसएसवाई पहुंचे, यहां पर सीटी स्कैन, एमआरआई व अल्ट्रासाउंड कक्ष देखा और ओपीडी का निरीक्षण किया, फिर अस्पताल की ओपीडी पहुंचे। यहां मरीजों की भीड़ मिली। ओपीडी में दवाओं की लिस्ट चस्पा करने के निर्देश दिए।

जीएसवीएम मेडिकल कॉलेज में निरीक्षण करते शासन से नामित डॉ.परवेज खान व डॉ.विजय कुमार। साथ में प्राचार्य प्रो.संजय काला व प्रमुख अधीक्षक डॉ.आरके सिंह।

- केजीएमयू से आए दो डॉक्टरों की टीम ने मरीजों और तीमारदारों से भी की बात

कॉफ्रेंस में जाने के लिए नहीं मिलता कोई पैसा

- टीम के सदस्यों को मेडिकल कॉलेज के डॉक्टरों ने बताया कि बाहर कॉफ्रेंस में जाने का कोई पैसा नहीं मिलता है। अगर कोई डॉक्टर जाना भी चाहे तो शासन से अनुमति नहीं मिलती हैं।

मेटरनिटी विंग में लिफ्ट खराब पर्चा काउंटर पर कंप्यूटर बंद

- मेटरनिटी विंग की बिल्डिंग (कोविड बिल्डिंग) में निरीक्षण के दौरान एक लिफ्ट खराब मिली। यहां से टीम हैलट इमरजेंसी पहुंची, यहां पर्चा काउंटर पर रखे दो कंप्यूटर में एक बंद मिला। हैलट के वार्डों के निरीक्षण के दौरान भर्ती मरीजों से अस्पताल में मिल रही स्वास्थ्य सुविधाओं के संबंध में जानकारी ली। मरीजों व तीमारदारों के जवाब से दोनों डॉक्टर संतुष्ट नजर आए।

कैंटीन में गंदगी देखकर हुए नाराज

टीम के सदस्य जैसे ही कैंटीन पहुंचे, उनका पारा चढ़ गया। यहां पर पर्याप्त सफाई व्यवस्था नहीं थी और सामग्री के रेट लिस्ट भी चस्पा नहीं थे। इस पर टीम ने काफी नाराजगी जाहिर की। कहा कि सुविधाओं पर ध्यान दें। इस कार्य में लापरवाही ठीक नहीं है। बाद में मेडिकल कॉलेज में लैब, हॉस्टल आदि का निरीक्षण किया। जीएसवीएम मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य प्रो.संजय काला, उप प्राचार्य प्रो. रिचा गिरी, हैलट अस्पताल के प्रमुख अधीक्षक डॉ.आरके सिंह, पीएमएसएसवाई के नोडल डॉ.मनीष सिंह, डॉ.अनुराज रजौरिया रहे।

हाईकोर्ट के आदेश पर निरीक्षण

हाईकोर्ट ने बीते दिनों सभी मेडिकल कॉलेज में मिलने वाली सुविधाओं और अन्य चीजों की जांच कराने का आदेश दिया था। इसी के बाद शासन ने कमेटी का गठन किया है। निरीक्षण टीम अस्पताल के इंतजाम के साथ ही प्राइवेट प्रैक्टिस करने वाले डॉक्टरों की भी रिपोर्ट तैयार करेगी। टीम इस संबंध में गहनता से जानकारी प्राप्त कर रही है।

किताबों के पास बच्चे। अमृत विचार

बच्चों को लेखन सामग्री बांटी, उत्सव मनाया

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

अमृत विचार। बेनाझाबर स्थित कंपोजिट विद्यालय में मिशन एजुकेशन के तहत मानव उत्थान सेवा समिति शाखा श्री हंस मंदिर आश्रम की ओर से माता अमृता के जन्मोत्सव पर 140 बच्चों को लेखन सामाग्री वितरित की।

लेखन सामाग्री वितरण का मुख्य उद्देश्य बच्चों को शिक्षा के प्रति जागरूक करना रहा। इस दौरान विधायक नीलिमा कटियार, हंस मंदिर प्रभारी साध्वी चंदन बाई, साध्वी मुदिता बाई, शैलेंद्र पाल, प्रधानाध्यापिका सीमा साहू, सहायक अध्यापिका सारिका शुक्ला, सहायक अध्यापिका अंजू वर्मा, सहायक अध्यापिका साधना कटियार, अमित यादव, विवेक राजावत, प्रियंका गुप्ता, मिथलेश सोनी, रुची मिश्रा, पूजा सिंह, आरती शर्मा, करन कठेरिया, गोलू पाल रहे।

राखी मेकिंग में अक्षत त्रिपाठी प्रथम आए

कानपुर। भारत विकास परिषद्रामकृष्ण शाखा की ओर से गुरुवार को सेठ मोतीलाल खेड़िया सनातन धर्म इण्टर कालेज मे राखी मेकिंग प्रतियोगिता आयोजित हुई। कार्यक्रम में 2 सौ बच्चों ने भाग लिया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि प्रो मनीषा शुक्ला रही। अध्यक्षता प्रो मोहनी अग्रवाल ने की। प्रतियोगिता में प्रधानाचार्या सुमन चंदोला ने सभी का स्वागत किया। प्रतियोगिता में जूनियर ग्रुप मे अक्षत त्रिपाठी प्रथमअन्वी द्वितीय एवं अनिरूद्ध तृतीय रहे। वरिष्ठ वर्ग मे वंश चौहन प्रथम, आराध्या मिश्रा द्वितीय व दिव्यांशी तृतीय रहीं। अमृत विचार

करियर बनाने के गुर सिखाए

कानपुर। पीपीएन पीजी कॉलेज में हायर मैथमेटिक्स में करियर संभावनाएं विषय पर व्याख्यान आयोजित हुआ। इस दौरान डॉ. अनुराग शुक्ल, सहायक आचार्य, राजकीय इंजीनियरिंग कॉलेज, कन्नौज ने मुख्य वक्ता के रूप में विचार साझा किए। डॉ. शुक्ल ने उच्च शिक्षा, शोध कार्य एवं गणित में करियर निर्माण की संभावनाओं पर छात्रों को बताया। कार्यक्रम का संयोजन गणित विभाग प्रभारी डॉ. मनिंदर सिंह अरोड़ाने तथा मंच संचालन डॉ. कीर्ति चौहानने किया। गणित विभाग के डॉ. सुनील कुमार, डॉ. तरन्नुम सिद्दीकी मौजूद रहे।

मानसिक रूप से मजबूती देगा स्टूडियो

संवाददाता,कानपुर

अमृत विचार। स्वस्थ जीवनशैली की चाह लोगों को ट्रेडमिल पर चढ़ा देती है, शरीर का वजन कम करने की हसरत डम्बल उठवा देती है और मसल्स बनाने का सपना प्रोटीन के डिब्बे खरीदने पर मजबूर कर देती है, लेकिन एक्सपर्ट्स की सलाह के बिना यह सब शरीर को नुकसान भी पहुंचा सकता है। इन्हीं बातों को ध्यान में रखते हुए गुरुवार को स्वरूप नगर में द पिलाटेस स्टूडियो की शुरुआत हुई। उद्घाटन महापौर प्रमिला पांडे ने किया। यहां फिटनेस प्रेमियों को न सिर्फ एक्सपर्ट सलाह मिलेगी बल्कि लक्ष्य को तय समय पर हासिल करने में भी मदद की जाएगी। द पिलाटेस स्टूडियो की को-फाउंडर नम्रता पुरोहित ने बताया कि फिटनेस का अर्थ लोगों के लिए जिम में जाकर वजन उठाने से है। लेकिन सिर्फ वजन उठाने ही से कुछ नहीं है, क्योंकि हर किसी का फिटनेस गोल अलग होता है। अलग अलग तरह की ट्रेनिंग और डाइट की जरूरत पड़ती है।

वर्कआउट करतीं महापौर प्रमिला पांडेय। ● अमृत विचार

रुद्राभिषेक में लगे जयकारे

कानपुर। श्रावण मास पर बर्रा स्थित निहारिका हॉस्पिटल में भगवान शिव का रुद्राभिषेक आयोजित हुआ। आयोजन पर निहारिका हॉस्पिटल एमडी डॉ धर्मेन्द्र अवस्थी ने बताया कि अस्पताल में कई वर्षों से रुद्राभिषेक कार्यक्रम आयोजित किया जाता है। इसी कड़ी में हुए अयोजन में क्षेत्रीय लोग भी उपस्थित हुए। संरक्षक राजेन्द्र अवस्थी के द्वारा प्रसाद वितरित किया।

अभिषेक में शामिल श्रद्धालु।

अमृत विचार एक सम्पूर्ण अखबार

क्लासीफाइड

विज्ञापन हेतु अमृत विचार कार्यालय में सम्पर्क करें

तैयारी

विजेता टीम को 1.11 लाख का कैश प्राइज, आर्य नगर मैदान पर खेले जाएंगे 20-20 ओवर के मैच

इंटर स्कूल क्रिकेट टूर्नामेंट 12 से, भाग लेंगी 16 टीमें

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

अमृत विचार। स्व. आत्माराम अग्रवाल मेमोरियल इंटर स्कूल क्रिकेट टूर्नामेंट का आयोजन 12 से 20 अगस्त तक आर्यनगर मैदान पर होगा। टूर्नामेंट का संचालन द स्पोर्ट्स हब करेगा। प्रतियोगिता में 16 टीमें प्रतिभाग करेंगी। जिन्हें चार समूहों में बांटा गया है। प्रत्येक ग्रुप से टॉप टीम सेमीफाइनल पहुंचेगी। फाइनल मैच फ्लड लाइट में खेला जाएगा। यह जानकारी गुरुवार को प्रेसवार्ता में आयोजन समिति ने दी। अध्यक्ष पीके श्रीवास्तव व सचिव शशिकांत खांडेकर ने बताया कि विजेता टीम को 1.11 लाख व उप विजेता टीम को 51,000, द्वितीय उपविजेता को 11,000 रुपये का पुरस्कार मिलेगा। तीन शीर्ष टीमों के खिलाड़ियों को व्यक्तिगत मेडल, ट्रॉफी और प्रमाण पत्र दिए जाएंगे। प्रत्येक टीम में 14 खिलाड़ी, एक कोच और एक टीम मैनेजर होगा। मैच 20-20 ओवर के होंगे और हर दिन तीन मुकाबले खेले जाएंगे। टूर्नामेंट में केवल मान्यता प्राप्त विद्यालयों के नियमित छात्र ही भाग ले सकेंगे। खिलाड़ियों की पात्रता सुनिश्चित करने के लिए पिछले शैक्षणिक सत्र की अंकतालिका तथा विद्यालय के प्रधानाचार्य का प्रमाणित पहचान पत्र आवश्यक होगा। टीम में बाहरी खिलाड़ी की पुष्टि होने पर उसे तत्काल बाहर कर दिया जाएगा। अंपायरों और विरोधी टीम के साथ दुर्व्यवहार पर केसीए के दिशा-निर्देशों के अनुसार कार्रवाई होगी। मैचों के दौरान खिलाड़ियों के जलपान और प्राथमिक उपचार की सुविधा रहेगी।

पत्रकारों को जानकारी देते पदाधिकारी। ● अमृत विचार

स्पेशल ओलिंपिक में छाए कानपुर के कुश

- कानपुर। स्पेशल ओलिंपिक भारत की ओर से 3 से 7 अगस्त तक मुंबई के सरदार वल्लभ भाई पटेल में आयोजित राष्ट्रीय तैराकी प्रतियोगिता में कानपुर के कुश चतुर्वेदी ने 50 मीटर एवं 25 मीटर वर्ग में कांस्य पदक प्राप्त किया। शहर आगमन पर उनका स्वागत क्रीड़ा भारती क्षेत्रीय संयोजक संजीव पाठक, आशुतोष सत्यम झा, सुनील सिंह, अरुण दुबे, केशव द्विवेदी ने किया। इससे पहले कुश पावरलिफ्टिंग में भी अपनी योग्यता का लोहा मनवा चुके है। 2024 में कानपुर में आयोजित राष्ट्रीय पावरलिफ्टिंग में कुश ने 90 किलो वजन श्रेणी में रजत पदक प्राप्त किया था। ऑटिज्म से प्रभावित 19 वर्षीय कुश इस समय छत्रपति शाहू जी महाराज यूनिवर्सिटी से होटल मैनेजमेंट की पढ़ाई कर रहे हैं। उद्योगपति विश्वनाथ गुप्ता, मुकेश शुक्ला, संजीव दोहरे और स्पेशल बच्चों के लिए संचालित सेंटर पुष्पा खन्ना मेमोरियल सेंटर की टीम ने भी बधाई दी।

कुश चतुर्वेदी।

शीलिंग हाऊस में आंखों की जांच

कानपुर। बच्चों में जिस तरह स्मार्ट फोन, लैपटॉप तथा गैजेट्स के इस्तेमाल की आदत बढ़ती जा रही है, उसे देखते हुए उनके नेत्रों की देखभाल जरूरी हो गई है। सही दृष्टि से ही बच्चों का मानसिक, शैक्षणिक व सामाजिक विकास संभव है। यह बात गुरुवार को शीलिंग हाऊस की प्रधानाचार्य वनीता मल्होत्रा व उप प्रधानाचार्य अल्का माली ने लायंस क्लब कानपुर शक्ति द्वारा स्कूल की जूनियर विंग में लगाए गए नेत्र जांच शिविर का उद्घाटन करते हुए कही। शिविर में शंकरा आई फाउंडेशन के नेत्र विशेषज्ञों डॉ. अतहर मसूद, डॉ. अनिल, डॉ. ज्योति, डॉ. हेमा एवं कमलकांत अवस्थी ने बच्चों, अभिभावकों व स्टाफ की आंखों की जांच की। मुख्य अतिथि लायंस क्लब के उपमंडलाध्यक्ष डॉ. शरद अग्निहोत्री रहे।

सूचना

मेरी पुत्री पायल का मेरे और मेरे परिवार के प्रति व्यवहार ठीक नहीं है जिससे उसके द्वारा किए गए किसी भी कृत्य की जिम्मेदारी मेरी और मेरे परिवार की नहीं है तथा अपनी पुत्री को पायल को चल अचल संपत्ति से बेदखल करता हूं –**सर्वेश पुत्र मिठ्ठू निवासी अहमदपुर नदीहा थाना ककवन कानपुर नगर**

सूचना

सर्व साधारण को सूचित करना है कि मेरे आधार कार्ड नंबर 684192287091 में मेरा नाम त्रुटिवश अविष्का (Avishka) दर्ज हो गया है, जबकि मेरा वास्तविक नाम अंशिका तिवारी (Anshika) है और सभी अभिलेखों में अंशिका तिवारी ही दर्ज है। **अंशिका तिवारी पुत्री शिव गणेश तिवारी निवासी जगदीशपुर कटरा, तरबगंज गोंडा।**

सूचना

आधार कार्ड में मेरा नाम राधा देवी पत्नी राम मिलन है। जबकि बीमा पॉलिसी संख्या 215136240 मे मेरा नाम पृथराजी पत्नी रामसेवक है। यह दोनों नाम एक ही पति–पत्नी के हैं। पति–पत्नी को इन दोनों नाम से जाना व पहचाना जाता है। **राधा देवी पत्नी राम मिलन ग्राम लौकहवा परगना व तहसील तुलसीपुर जनपद बलरामपुर**

सूचना

मेरे पुत्र संतोष और उसकी पत्नी बबली का चाल चलन ठीक नहीं है जिसके चलते मैंने अपने पुत्र और बहू को अपनी चल अचल संपत्ति से बेदखल कर दिया है। अब मेरा उन दोनों से कोई वास्ता सरोकार नहीं है।अपने किए गए कार्यो के लिए वह स्वयं जिम्मेदार होंगे। मैं /**सम्पत देवी पत्नी स्व0 सुर्ज बहादुर निवासी ग्राम बहादुरपुर पोस्ट पूरे पांडे थाना सरैनी रायबरेली।**

सूचना

सूचित हो कि मैं **लज्जावती पत्नी स्व0 राकेश, निवासी ग्राम मोहज्जीपुर मजरा रूसेना, परगना व तहसील मलिहाबाद, जिला लखनऊ** ,मेरी पुत्री का नाम सुनैना (Sunaina) तथा जन्म तिथि 20.05.2013ई0 है। पुत्री का पूर्व विद्यालय में त्रुटिवश मार्कशीट व टी.सी. पर जन्मतिथि 07.06.2010 ई0 दर्ज हो गयी है जबकि उसके आधार कार्ड के अनुसार वास्तुविक जन्मतिथि 20.05.2013ई0 है पुत्री की जन्मतिथि आधार कार्ड के अनुसार यू0डेज0 पर दर्ज हो गयी है और यू0डेज0 के अनुसार नाम दर्ज किया जाय।

सूचना

सूचित किया जाता है कि मेरा नाम ननकू बरवार उर्फ बसीर मोहम्मद है, यह दोनों नाम मेरे है, एलआईसी की पॉलिसी संख्या 214482321 व 215339232 में भी मुझे ननकू बरवार उर्फ बसीर मोहम्मद के नाम से जाना व माना जाए। **ननकू बरवार उर्फ बसीर मो पुत्र लियाकत अली, ग्राम शेखनपुरवा, मोहना परसपुर गोंडा।**

न्यूज ब्रीफ

हादसे में घायल चालक ने दम तोड़ा

उन्नाव अमृत विचार। मध्य प्रदेश प्रांत के देवास जिला अंतर्गत बीएनपी थानाक्षेत्र के बिलाली गांव निवासी भरत चौहान (32) पुत्र मान सिंह ट्रक चालक था। वह गांव निवासी खलासी महेश पुत्र हिन्दू सिंह के साथ मंगलवार रात ट्रक में देवास से दूध पाउडर लादकर लखनऊ जा रहा था। तभी अचलगंज थानाक्षेत्र के लखनऊ-कानपुर हाईवे स्थित आजाद मार्ग चौराहा के पास खराब खड़े डंपर में उसका ट्रक पीछे से घुस गया था। इसमें भरत गंभीर घायल हुआ था। पुलिस ने चालक व खलासी को जिला अस्पताल भेजा था, जहां से भरत को कानपुर रेफर किया गया था। महेश उसे कानपुर हैलट ले गया और वहां से फिर जिला अस्पताल ले आया, जहां इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। पुलिस ने शव का पोस्टमार्टम कराया है।

दुष्कर्म का आरोपी भेजा गया जेल

उन्नाव अमृत विचार। घर में घुसकर महिला से दुष्कर्म के आरोपी को पुलिस ने पकड़कर जेल भेजा है। माखी थानाक्षेत्र के एक गांव निवासी 28 वर्षीय महिला ने पुलिस को तहरीर देकर बताया कि उसका पति दिल्ली में मजदूरी करता है। वह गांव में सास के साथ रहती है। दो अगस्त की रात गांव निवासी राजकुमार ने घर में घुस कर दुष्कर्म किया। शोर मचाने पर वह जान से मारने की धमकी देकर भाग निकला। एसओ योगेश सिंह ने बताया कि पति के आने के बाद महिला ने तहरीर दी है। रिपोर्ट दर्ज कर आरोपी को गिरफ्तार कर कोर्ट में पेश किया गया। जहां से उसे जेल भेजा गया है।

किशोर नाले में डूबा, मौत

उन्नाव अमृत विचार। बीघापुर कोतवाली क्षेत्र के गांव रानीपुर निवासी अशफाक का 12 वर्षीय बेटा अल्ताफ गुरुवार दोपहर गांव से निकले नाले में भरे बरसात के पानी में नहाने गया था। तभी बहाव अधिक होने से वह पानी में डूब गया। परिजनों ने लोगों के साथ मिलकर अल्ताफ को बाहर निकाला और 100 बेड अस्पताल पहुंचाया। जहां डॉक्टर ने उसे मृत घोषित कर दिया। दरोगा सूरज सिंह यादव ने बताया कि सूचना पर शव का पोस्टमार्टम कराया गया है।

भरभरा कर गिरा नहर पर बने जर्जर पुल का हिस्सा

आवागमन ठप, नवाबगंज के अमरेथा गांव को हाईवे से जोड़ती है पुलिया

संवाददाता नवाबगंज उन्नाव

अमृत विचार। अमरेथा ग्रामसभा से होकर गुजरी नहर पर बने पुल के बीच का हिस्सा अचानक टूट कर बह गया। जिससे ग्रामीणों को नहर पार कर दूसरी ओर जाने में दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है।

नवाबगंज विकासखंड के गांव अमरेथा से निकली नहर पार करने को ग्रामीणों के लिये एक पुल बना है। जो काफी पुराना व जर्जर है। इस पुल से ग्रामीणों को नहर पार कर दूसरी ओर जाने में आसानी होती है। लेकिन बीती शाम अचानक पुल के बीच का हिस्सा टूटकर नहर में बह गया। जिससे ग्रामीणों को नहर पार करने में परेशानी उठानी पड़ रही है। ग्रामीण इस पुल का इस्तेमाल राजमार्ग पर जाने के लिए भी करते थे। अब पुल टूटने से उन्हें हाईवे जाने के लिए करीब 2 किलोमीटर का चक्कर लगाना पड़ रहा है। इससे किसानों को भारी समस्या का सामना करना पड़ रहा है। नहर विभाग के धर्मेंद्र कुमार ने बताया कि जानकारी हुई है। क्षतिग्रस्त हिस्से की नाप कर इस्टीमेट विभाग को भेजा जाएगा। मंजूरी मिलते ही काम शुरू कराया जाएगा।

अमरेथा गांव के पास स्थित नहर की टूटा पड़ा पुल। अमृत विचार

सई नदी पुल की साइडों में आईं दरारें, रोड भी धंसी

औरास उन्नाव। औरास ब्लॉक क्षेत्र के मिर्जापुर अजिगांव गांव में ग्रामीण काफी समय से लकड़ी के पुल से निजात पाने को संघर्ष कर रहे थे। इसके बाद शासन से 4.99 करोड रुपए स्वीकृत हुए और पुल का निर्माण मिर्जापुर अजिगांव व नई बस्ती के बीच कराया गया। इस पुल का निर्माण करीब 6 माह पूर्व पूरा हो गया था और इसे आवागमन के लिए खोल दिया गया था। तब लोगों ने पुल निर्माण को लेकर खुशी जाहिर की थी। लेकिन पुल पहली बारिश भी नहीं झेल पाया, नतीजा यह रहा कि पुल के दोनों साइडों में दरारें आ गई। साथ ही सेफ्टी गार्ड के पास सड़क भी धंस गई। जिससे अब पुल का संपर्क टूटने का खतरा बढ़ गया है। लोक निर्माण विभाग द्वारा पुल निर्माण में तमाम अनियमिताएं बरती गईं। ग्रामीण पुल पार करने में जान जोखिम में डालने को मजबूर हैं। छात्र-छात्राओं के लिये भी समस्या खड़ी हो गई है। पुल निर्माण के समय ग्रामीणों ने निर्माण में अनियमिता बरतने का आरोप लगाया था किंतु उच्चाधिकारियों ने इस ओर ध्यान नहीं दिया। एक्सईएन सुबोध शुक्ला ने बताया कि मामला संज्ञान में है। जो दरारें आई हैं उनको जल्द ही ठीक कराया जाएगा।

सई नदी के ठीक पहले धंसी सड़क। अमृत विचार

मशीन में फंसकर मजदूर की मौत

उन्नाव अमृत विचार। सदर कोतवाली क्षेत्र के नौरंगाबाद गांव निवासी ममता लोध (40) पत्नी स्व. चन्द किशोर शहर के मोहल्ला शेखपुर बाजार स्थित कबाड़ कारखाने में मजदूरी करती थी। गुरुवार दोपहर कारखाने में काम करते समय उसकी साड़ी पंचिंग मशीन में फंस गई। इससे वह भी मशीन की चपेट में आ गई। मजदूरों ने स्विच बंद कर उसे बाहर निकाला और जिला अस्पताल लाए, जहां उसे कानपुर के हैलट अस्पताल रेफर कर दिया गया। परिजन उसे कानपुर ले जा रहे थे, तभी रास्ते में उसकी मौत हो गई। ममता के इकलौते बेटे दुर्गेश (17) ने बताया कि पिता की बीमारी के चलते उसके बचपन में ही मौत हो गई थी। मां मेहनत मजदूरी कर उसे पढ़ा रही थी। पुलिस ने शव पोस्टमार्टम के लिए भेजा है।

हिस्ट्रीशीटर के भाई को चाकू से गोदकर मार डाला

संवाददाता शुक्लागंज (उन्नाव)

अमृत विचार। गंगाघाट कोतवाली क्षेत्र के जाजमऊ चौकी अंतर्गत 16 बीघा गांव में बुधवार रात पुरानी रंजिश और लेनदेन को लेकर दो सगे भाइयों पर चाकुओं से हमला कर दिया गया। इस हमले में छोटे भाई फैज उर्फ नवाब (18) की मौत हो गई, जबकि बड़ा भाई सुल्तान (24) गंभीर रूप से घायल हो गया, जिसका इलाज कानपुर के हैलट अस्पताल में चल रहा है। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर जांच पड़ताल की और शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा। परिजनों की तहरीर पर हत्या समेत गंभीर धाराओं में मुकदमा दर्ज कर दो आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है, जबकि अन्य की तलाश में दबिश दी जा रही है।

फैज (मृतक)।

घायल सुल्तान का हो चुका है हाफ एनकाउंटर

मृतक फैज का भाई सुल्तान अपराधी प्रवृत्ति का है। उसके खिलाफ कानपुर नगर में लूट समेत एक दर्जन से अधिक मुकदमे दर्ज हैं। इतना ही नहीं, पुलिस उसका हाफ एनकाउंटर भी कर चुकी है। इसके साथ ही वह 25 हजार का इनामिया भी है। उसका छोटा भाई अफताब उर्फ गुल्लू भी आपराधिक गतिविधियों में शामिल रहा है। कुछ समय पहले एसओजी द्वारा गिरफ्तार कर उसे बाइक चोरी के मामले में जेल भेजा गया था।

मृतक की बहन पर भी थी आरोपी की नजर

मृतक फैज की विवाहित बहन पर आरोपी कमल हसन की गंदी नजर थी। इसे लेकर पहले भी फैज और सुल्तान ने कमल को समझाया था।

मूल रूप से बलिया निवासी और वर्तमान में मोहल्ला 16 बीघा में किराए पर रहने वाले सुल्तान और फैज पुत्रगण गफ्फार पीर मोहम्मद का विवाद ग्राम तौरा थाना पुरवा निवासी व वर्तमान में वहीं रह रहे कमल हसन पुत्र नबी हसन से चल रहा था। फैज ने अपने परिचित भूरे को उसकी शादी के दौरान 10 हजार रुपये उधार दिए थे। इसी लेनदेन और पुराने विवाद को लेकर कमल हसन ने बुधवार रात करीब साढ़े नौ बजे सुल्तान को फोन कर अपने घर के पास बुलाया। जैसे ही सुल्तान वहां पहुंचा, पहले से घात लगाए बैठे कमल हसन, उसका मामा का लड़का भूरे, मनीष, एजाज और कुछ अन्य लोगों ने उस पर ताबड़तोड़ चाकुओं से हमला कर दिया। हमले की सूचना पाकर छोटा भाई फैज मौके पर पहुंचा और बीच-बचाव करने लगा, लेकिन हमलावरों ने उसे भी नहीं बख्शा। पेट, गर्दन और शरीर के कई हिस्सों पर चाकुओं से वार कर फैज को गंभीर रूप से घायल कर दिया गया।

घटना को अंजाम देकर आरोपी मौके से फरार हो गए। मौके पर मौजूद सुल्तान का साला इशरार और दोस्त बाबू ने घटना की सूचना मां सलमा को दी, जिसके बाद पुलिस को जानकारी दी गई। मौके पर पहुंची जाजमऊ चौकी पुलिस ने दोनों घायलों को तत्काल इलाज के लिए कानपुर भेजा। पहले काशीराम अस्पताल, फिर हैलट रेफर किया गया। वहां डॉक्टरों ने फैज को मृत घोषित कर दिया, जबकि सुल्तान की हालत गंभीर बनी हुई है। सीओ सिटी दीपक यादव ने बताया कि दो आरोपियों कमल हसन और भूरे को गिरफ्तार कर लिया गया है। उनसे पूछताछ की जा रही है। अन्य फरार आरोपियों की तलाश में पुलिस टीम लगातार दबिश दे रही है।

लंबित न रहे युवा विकास योजना का आवेदन

कार्यालय संवाददाता उन्नाव

अमृत विचार। जिलाधिकारी गौरांग राठी की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट के पन्नालाल सभागार में बैंकों की विशेष ऋण जमा अनुपात में प्रगति के संबंध में बैठक हुई। इसमें सीएम युवा विकास अभियान, माटी कला योजना, मुख्यमंत्री युवा स्वरोजगर योजना, बैंक लिंकेज में प्रगति व सरकार द्वारा प्रायोजित योजनाओं की प्रगति की समीक्षा की गई।

जिलाधिकारी ने सभी बैंकर्स को सीडी रेशियो में सुधार करने को अभियान चलाकर कार्य करने का निर्देश देते हुए कहा कि किसी भी स्थिति में बैंकों का सीडी रेशियो कम न हो। लीड डिस्ट्रिक्ट मैनेजर खुद इसकी समीक्षा करें। जिलाधिकारी ने सीएम युवा विकास अभियान की समीक्षा कर कितने आवेदन आए हैं कितने डिस्पर्स किए गए, कितने लंबित हैं और कितने पात्र लाभार्थियों को ऋण दिया गया गया इसकी समीक्षा की। इसी प्रकार जिलाधिकारी ने मुख्यमंत्री युवा स्वरोजगार योजना व माटी कला बोर्ड योजना के प्राप्त आवेदनों की जानकारी लेकर सभी बैंकर्स को निर्देशित किया कि सरकार की किसी भी योजना में जो भी आवेदन मिल रहे हैं उनका प्राथमिकता से विचार कर स्वीकृति दें। बैठक में सीडीओ कृतिराज, डीसी एनआरएलएम, उपायुक्त उद्योग, एलडीएम सहित अन्य संबंधित अधिकारी व बैंकर्स मौजूद रहे।

बैठक में मौजूद अफसरों को संबोधित करते जिलाधिकारी।

नशे में पत्नी को पीट पीटकर किया बेदम

शुक्लागंज (उन्नाव)। गंगाघाट कोतवाली क्षेत्र के भातू फार्म निवासी आनंद कुमार पुत्र सुखलाल अपनी पत्नी सीमा व तीन बच्चों के साथ रहता है। बुधवार को वह नशे में धुत होकर घर पहुंचा और पत्नी से विवाद के बाद उसकी बेरहमी से पिटाई कर दी, जिससे सीमा बेहोश हो गई। आरोपी ने पत्नी और बच्चों को कमरे में बंद कर बाहर से ताला लगा दिया और भाग निकला। बच्चों की चीख सुनकर आसपास के लोग एकत्र हो गए और डायल 112 को सूचना दी। मौके पर पहुंची पुलिस ने दरवाजा तोड़कर महिला को बाहर निकाला और पानी डालकर होश में लाया। कोतवाली प्रभारी प्रमोद कुमार ने बताया कि तहरीर मिलने पर कार्रवाई की जाएगी। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

ऋषि आश्रम में हुआ ऊं नमः शिवाय का अखंड जप और रुद्राभिषेक

शुक्लागंज अमृत विचार। श्री रामनाम लेखन महायज्ञ समिति के तत्वावधान में ऋषि आश्रम स्थित श्री संकट मोचन हनुमान मंदिर में 24 घंटे का ऊं नमः शिवाय अखंड जप किया गया। जप पूर्ण होने के बाद वैदिक विधि-विधान से रुद्राभिषेक संपन्न हुआ। आचार्य संपूर्णानंद शास्त्री ने मंत्रों के साथ भगवान शिव व शिव परिवार का पूजन कर रुद्राभिषेक कराया। इसमें समिति अध्यक्ष विश्वनाथ दुबे, सचिव ओम प्रकाश मिश्र, संरक्षक आशुतोष शुक्ला, उपाध्यक्ष राजीव मिश्रा, श्रीकांत त्रिवेदी, विजय शंकर तिवारी, अंजनी अग्निहोत्री, अशोक शुक्ल, कामिनी अवस्थी, पूजा श्रीवास्तव, शिवम, कैलाश प्रजापति आदि श्रद्धालु रहे।

ऋषि आश्रम में होता रुद्राभिषेक।

मंदिरों में चलाया स्वच्छता अभियान

शुक्लागंज। भारत विकास परिषद ब्रह्मावर्त प्रांत शुक्लागंज शाखा के तत्वावधान में गुरुवार सुबह ऋषि आश्रम स्थित हनुमान मंदिर, लक्ष्मी नारायण मंदिर व शिव मंदिर परिसर में स्वच्छता अभियान चलाया गया। इस दौरान मंदिर प्रांगण की झाड़ू, पोछा, धुलाई व कचरा निस्तारण जैसे कार्य किए गए। इसमें परिषद अध्यक्ष ओम प्रकाश मिश्र, संरक्षक आशुतोष शुक्ला, सचिव राजीव मिश्र, कोषाध्यक्ष विजय शंकर तिवारी, श्रीकांत त्रिवेदी, अमित पांडे, जिला समन्वयक सूर्यकुमार बाजपेई, बीपी श्रीवास्तव, हरिओम पांडे रहे।

मंदिर में सफाई करते परिषद के सदस्य।

एसडीएम ने किया बाढ़ क्षेत्र का निरीक्षण

शुक्लागंज (उन्नाव) अमृत विचार। गंगा के बढ़ते जलस्तर को देखते हुए गुरुवार को जिलाधिकारी के निर्देश पर एसडीएम सदर क्षितिज द्विवेदी ने शुक्लागंज के तटीय इलाकों और घाटों का निरीक्षण किया। उनके साथ लेखपाल अशोक सैनी समेत राजस्व विभाग की टीम मौजूद रही।निरीक्षण के दौरान एसडीएम ने गोताखोर, कर्बला, हुसैनी नगर समेत अन्य तटीय क्षेत्रों में रह रहे लोगों से बातचीत कर उनकी समस्याएं सुनीं। स्थानीय निवासियों ने बाढ़ के दौरान होने वाली कटान और जलभराव की स्थिति के बारे में जानकारी दी।

पाइप लाइन डालते समय धंसी मिट्टी, तीन मजदूर दबे

उन्नाव। अचलगंज क्षेत्र के बाबाखेड़ा-बदरका मार्ग पर करौंदी गांव के पास से गैस पाइप लाइन निकली है। जिसके 12 फीट नीचे से हर घर जल योजना की पाईप लाइन डाली जा रही थी। गुरुवार शाम पाइप लाइन डाल कर उसमें वेल्डिंग कर रहे लखीमपुर जिला के पलिया थानाक्षेत्र के मझगाई निवासी तिलक राम पुत्र छोटेलाल, उसकी गांव के जग्गा पुत्र पप्पू व राजन पर अचानक गड्ढे के बाहर जमा मिट्टी का ढेर गिर गया। जिसमें तीनों दब गए। मजदूरों के दबने की सूचना पर संस्था के कर्मचारी व आसपास के लोग पहुंच गए। एसओ राजेश पाठक दरोगा लक्ष्मी नारायण द्विवेदी व पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचे। ग्रामीणों व कर्मचारियों ने मिट्टी हटाकर तीनों को करीब दो घंटे की मशक्कत के बाद बाहर निकाला और एम्बुलेंस से जिला अस्पताल भेजा। एसओ ने बताया कि तीनों सकुशल निकाल लिए गए हैं।

ईश्वरीय विश्वविद्यालय राजयोग केंद्र में मनाया गया रक्षाबंधन

संवाददाता बांगरमऊ उन्नाव

अमृत विचार। नगर के ब्लॉक रोड स्थित प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय राजयोग केंद्र में गुरुवार को जिज्ञासुओं द्वारा रक्षा-बंधन पर्व मनाया गया। केंद्र संचालिका सरला बहन ने कहा कि इस त्योहार पर पांचों विकारों से सभी बहनों-भाइयों की रक्षा का संकल्प लेना है। यदि काम, क्रोध, लोभ, मोह व अहंकार पांचों विकारों से स्वयं की रक्षा कर ली तो सर्व समाज की रक्षा स्वतः हो जाएगी। अंत में केंद्र पर मौजूद सैकड़ों जिज्ञासुओं ने ब्रम्हा कुमारी बहन से एक-एक विकार के त्याग का संकल्प लेकर अपने हाथों में राखी बंधवाई। इस दौरान केंद्र संचालिका ने बीते दिनों ब्रम्हा कुमारीज़ मुख्यालय माउंट आबू में आयोजित शिक्षक प्रशिक्षण सत्र में शामिल हुए शिक्षकों को प्रमाणपत्र दिए। इसमें महेश फौजी, ललित द्विवेदी, शुभम गुप्ता, निर्मल यादव, रमेश चंद्र, राकेश यादव, अखिल रस्तोगी, शिवपाल यादव, दिवाकर यादव, अनिल चौधरी, देवी प्रसाद, हुकुम चंद्र, सरस कटियार, अर्चना मिश्रा, किरन द्विवेदी, उमा कनौजिया, सरला गुप्ता व अनिला कुशवाहा सहित सैकड़ों जिज्ञासु उपस्थिति रहे।

राजयोग केंद्र में जिज्ञासु को राखी बांधतीं ब्रम्हा कुमारी बहन।

एसपी दीपक भूकर को राखी बांधती छात्रा। अमृत विचार

छात्राओं ने कार्यालय जाकर एसपी, सीडीओ को बांधी राखी

उन्नाव। बेनहर इंटरनेशनल स्कूल अब्बासपुर की छात्राओं ने एसपी ऑफिस, सीडीओ ऑफिस व पुलिस लाइन जाकर अधिकारियों को राखी बांधकर रक्षाबंधन का त्योहार मनाया। छात्राओं ने सीडीओ कृति राज, एसपी दीपक भूकर, एएसपी व सीओ सहित अन्य अधिकारियों व पुलिस कर्मियों को राखी बांधी। एसपी ने छात्राओं की इस पहल पर विद्यालय प्रबंधतंत्र की भी सराहना की और छात्राओं को चॉकलेट देकर धन्यवाद दिया। इस मौके पर छात्राओं के साथ प्रधानाचार्या पल्लवी हरमन व अन्य स्टाफ मौजूद रहा।

करारे में उन्नाव को 5 गोल्ड, 11 सिल्वर

संवाददाता उन्नाव/नवाबगंज

अमृत विचार। माध्यमिक विद्यालयों की मंडल स्तर की बालक-बालिकाओं की कराटे प्रतियोगिता लखनऊ के खालसा इंटर कालेज में हुई। इसमें अंडर-14, अंडर-17 व अंडर-19 वर्ग की प्रतियोगिता में उन्नाव से 100 बच्चों ने प्रतिभाग किया। जिसमें पांच को गोल्ड मेडल व 11 को सिल्वर मेडल मिले।

प्रतियोगिता में विभिन्न आयु वर्ग के बच्चों में दिव्यांशी, पल्लवी, सूर्यकांत, शिवा, करन सिंह ने गोल्ड जीता। जबकि प्रीति, आदित्य, महक, रिमझिम, वंश कनौजिया, नंदनी, जयदीप, जीत, साहिल, प्रीति पांडेय, कृष्ण प्रजापति ने सिल्वर मेडल प्राप्त किया। जिले के 5 बच्चों का प्रदेश टीम में चयन किया गया। जिले के विजयी खिलाड़ियों को मुख्य अतिथि रहे खालसा इंटर कालेज के मुख्य प्रबंधक राजेंद्र सिंह बग्गा व प्रधानाचार्य वीरेंद्र सिंह ने मेडल पहनाकर सम्मानित किया। सभी खिलाड़ियों ने अपने माता पिता, गांव, विद्यालय, कराटे एसोसिएशन आफ उन्नाव व जिले का नाम रोशन किया। जिले के कोच धर्मेश प्रताप सिंह, क्रीड़ाध्यक्ष प्रेम प्रकाश, उन्नाव कराटे जनरल सेक्रेटरी अंकित कुमार व कराटे प्रेसिडेंट रवि चौरसिया, मुस्कान, पिंकल कराटे कोच द्वारा प्रोत्साहन व मार्गदर्शन दिया गया। डीआईओएस सुनील दत्त, प्रधानाचार्य परमात्मा शरण, अनूप सिंह, अजब सिंह यादव, वीरेंद्र सिंह, कुलदीप कुमार, लीनारानी, पुरुषोत्तम सिंह, निशा सिंह तोमर, जिला क्रीड़ा सचिव नवीन सिन्हा आदि ने विजेताओं को बधाई दी।

मेडल दिखाते खिलाड़ी व मौजूद कोच व अतिथि। अमृत विचार

राखी निर्माण व मेंहदी प्रतियोगिता में छात्रों ने दिखाया उत्साह

शुक्लागंज उन्नाव। सरस्वती विद्या मंदिर इंटर कॉलेज गोपीनाथपुरम में गुरुवार को राखी एवं मेंहदी प्रतियोगिता हुई। प्रतियोगिता में बाल वर्ग में अनामिका राजपूत ने प्रथम, शिवन्या ने द्वितीय और विधि शुक्ला ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। किशोर वर्ग में अदिति प्रथम, शानिक दुबे द्वितीय, और शगुन तिवारी तृतीय स्थान पर रहीं। तरुण वर्ग में शिवानी यादव ने पहला, जान्हवी पांडे ने दूसरा और सेजल सविता ने तीसरा स्थान पाया। राखी निर्माण प्रतियोगिता में बाल वर्ग में प्रीति ठाकुर प्रथम, देविका रावत द्वितीय और अभय कुमार तृतीय रहे। किशोर वर्ग में आराधना, अवनी मिश्रा और इच्छा साहू ने क्रमशः पहला, दूसरा और तीसरा स्थान प्राप्त किया। तरुण वर्ग में प्रियंका, प्रिया और शिवानी रावत को क्रमशः प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान मिला। निर्णायक मंडल में आशा, प्रीति शुक्ला और रंजना दीक्षित रहीं। प्रधानाचार्य श्रवण कुमार सिंह, शिव सिंह ने सभी प्रतिभागियों का उत्साहवर्धन किया।

पहल

हाईवे पर तैनात ट्रैफिक पुलिस कर्मी लोगों को दे रहे यातायात नियमों की जानकारी

लखनऊ-कानपुर हाईवे नो एक्सीडेंट जोन घोषित

संवाददाता नवाबगंज उन्नाव

अमृत विचार। हाईवे पर लगातार हो रही दुर्घटनाओं को लेकर प्रशासन ने एडवाइजरी जारी कर ऑपरेशन पायलट नामक अभियान चलाया है। इसमें जिले में शुक्लागंज से बनी पुल तक नो एक्सीडेंट जोन घोषित किया गया है। इस अभियान के तहत जितने भी ब्लैक स्पॉट हैं सभी पर पुलिस कर्मियों का पहरा रहेगा और ट्रैफिक नियमों के बारे में जानकारी दी जाएगी। साथ ही लोगों को ट्रैफिक नियमों का पालन करने को जागरूक किया जाएगा।

इसके तहत हाईवे पर सभी वाहन स्वामियों को ट्रैफिक पुलिस एक विशेष वाहन चलाकर ट्रैफिक नियमों की जानकारी दे रही है। यह विशेष वाहन जो सारी सुविधाओं से लैस है या हर ब्लैक स्पॉट पर जाकर आमजन को ट्रैफिक नियमों के बारे में जानकारी देता है। इसमें दोपहिया वाहन सवारों को हेलमेट लगाने व चौपहिया वाहन सवारों को सीटबेल्ट लगाने के लिए जागरूक किया जाता है। इसके साथ ही अजगैन कोतवाली क्षेत्र में टीएसआई राजाराम यादव व दीवान संदीप सिंह व संत शरण ने कोतवाली के पास खड़े वाहनों को हटवाया और वाहन चालकों को समझाते हुए कहा कि सभी लोग ट्रैफिक नियमों का पालन करें। हैवी वाहन चालकों से कहा कि हाईवे पर वाहन न खड़ा कर रोड के नीचे खड़ा करें।

यातायात नियमों की जानकारी देते ट्रैफिक पुलिस कर्मी। अमृत विचार

वैन में लगी स्क्रीन से लोगों को दी जाती ट्रैफिक नियमों की जानकारी। अमृत विचार

चंडीगढ़ विवि में हुआ ओरिएंटेशन प्रोग्राम

कार्यालय संवाददाता उन्नाव

अमृत विचार। चंडीगढ़ यूनिवर्सिटी में नए शैक्षणिक सत्र की शुरुआत भव्य ओरिएंटेशन कार्यक्रम के साथ की गई। इसका उद्देश्य छात्रों को यूनिवर्सिटी के विज़न, मूल्यों व भविष्य की संभावनाओं से परिचित कराना था। शुरुआत विज़ुअल फिल्म सीयू-यूपी का विज़न ग्लोबल बेंचमार्क्स एंड लोकल इंपैक्ट के प्रदर्शन से हुई।

यूनिवर्सिटी के प्रो-वाइस चांसलर डॉ. टीपी सिंह ने कहा कि इस यूनिवर्सिटी की समृद्ध लिगेसी को उप्र में भी उसी गुणवत्ता व प्रतिबद्धता के साथ आगे बढ़ाया जाएगा। इसमें बीएससी (बायोटेक्नोलॉजी, फॉरेंसिक साइंस, डेटा साइंस), एमएससी डेटा साइंस, बीए एलएलबी, बीबीए एलएलबी, एलएलबी, बीएजेएमसी, बी. फार्मा आदि कोर्सेज़ के लिए ओरिएंटेशन सत्र आयोजित किए गए। डॉ. अतुल कुमार हेड ई-गवर्नेंस ने यूनिवर्सिटी के डिजिटल सिस्टम, ऑनलाइन पोर्टल्स व ई-गवर्नेंस मॉडल की जानकारी दी। डॉ. गुरमिंदर कौर एसोसिएट डीन स्टूडेंट वेलफेयर ने छात्रों को को-करिकुलर एक्टिविटीज़, स्टूडेंट क्लब्स व एंगेजमेंट प्रोग्राम्स से अपने व्यक्तित्व विकास पर ध्यान देने का आह्वान किया। प्रो. डॉ. ओम द्विवेदी डायरेक्टर ह्यूमैनिटीज एंड लिबरल आर्ट्स ने छात्रों को रिसर्च माइंडसेट अपनाने, मल्टीडिसिप्लिनरी अप्रोच पर ध्यान देने व फ्यूचरिस्टिक प्रोजेक्ट्स में भाग लेने की प्रेरणा दी। डॉ. राजेश सिन्हा डीन साइंसेज, डॉ. ब्रिजेन्द्र कुमार यादव डायरेक्टर लीगल स्टडीज़ व जर्नलिज्म एंड मास कम्युनिकेशन विभाग से प्रो. ओम द्विवेदी ने विभिन्न जानकारियां दीं। इस दौरान मुख्य अतिथि मनीष निगम सेक्रेटरी डिस्ट्रिक्ट लीगल सर्विसेज अथॉरिटी डीएलएसए उन्नाव, डॉ. नसीम अहमद सिद्दीकी सीनियर प्रिंसिपल साइंटिस्ट व हेड बिज़नेस डेवलपमेंट एंड आईपी यूनिट व डॉ. अमित शुक्ला मीडिया प्रोफेशनल व डॉ. टीपी सिंह प्रो-वाइस चांसलर सीयू-यूपी व रजिस्ट्रार डॉ. अजय यादव रहे।

संबोधित करते चंडीगढ़ यूनिवर्सिटी के प्रो-वाइस चांसलर प्रो. डॉ. टीपी सिंह।

अमृत विचार

शुक्रवार, 8 अगस्त 2025

असली-नकली वोटर

संसद में बिहार की मतदाता सूची के पुनरीक्षण की मांग को लेकर हंगामे और शीर्ष अदालत द्वारा सूची की जांच के संकेत दिए जाने के बीच कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने चुनाव आयोग को कठघरे में लेते हुए महाराष्ट्र और कर्नाटक में वोटर लिस्ट की गड़बड़ी पर जिस तरह के आरोप लगाए हैं, उससे तो यही साबित होता है कि चुनाव आयोग बिहार में मतदाता पुनरीक्षण का जो काम कर रहा है, वह बिल्कुल सही और अपरिहार्य है। बिहार में करीब 65 लाख लोगों के नाम नई मतदाता सूची से हटा दिए गए हैं, विपक्ष इसे साजिश बता रहा है। ऐसे में मतदाता पुनरीक्षण को चुनौती देने वाली याचिका पर शीर्ष अदालत ने चुनाव आयोग से हटाए गए नामों का विवरण मांगा है। अब इस विवरण की पड़ताल से दूध का दूध और पानी का पानी होने के साथ विपक्षी दलों के आरोपों की सच्चाई भी सामने आ जाएगी, इसमें कोई संदेह नहीं है। चुनाव आयोग की प्रक्रिया की परख भी हो जाएगी कि बिहार में मतदाता सूची पुनरीक्षण का काम वास्तव में सही तरीके से किया गया है या नहीं। सभी राजनीतिक दल भी इस वास्तविकता से भलीभांति परिचित हैं, लेकिन आज के डिजिटल युग में ऐसी किसी भी त्रुटि को जितनी जल्दी हो, समाप्त किया जाना चाहिए। यह चुनाव आयोग का दायित्व है कि देश में कहीं पर भी ऐसे लोगों का नाम मतदाता सूची में दर्ज न होने पाए, जिनकी मृत्यु हो गई हो अथवा जो स्थायी रूप से अन्यत्र बस गए हों। ऐसे लोग भी वोटर नहीं होने चाहिए, जिनके बारे में यही साफ नहीं है कि वे भारत के नागरिक हैं भी, या नहीं।

इन सवालों के बीच पिछले कुछ समय से लगातार देश में चुनाव चोरी किए जाने का आरोप लगाने वाले और इस बारे में चुनाव आयोग के खिलाफ एटम बम होने की बात कहने वाले राहुल गांधी ने स्क्रीन प्रजेंटेशन के जरिए जिस तरह से संदिग्ध वोटरों तथा फर्जी वोटिंग से जीत-हार बदलने का दावा किया है, उसे नेता विपक्ष की चुनावों को निष्पक्ष और पारदर्शी बनाने की कोशिश कम, भाजपा के खिलाफ सियासी लड़ाई का माहौल खड़ा करने का प्रयास ज्यादा कहा जा सकता है। इसी कारण चुनाव आयोग द्वारा उनसे आरोपों की बयानबाजी से ऊपर उठकर निर्वाचन नियमों के तहत योग्य और अयोग्य मतदाताओं के नाम लिखित में मांगना उचित ही है। इसमें कोई शक नहीं कि देश के संविधान की बुनियाद एक आदमी, एक वोट की है। ऐसे में श्रेयस्कर यही होगा कि चुनाव आयोग देश भर में मतदाता सूची का पुनरीक्षण कराए। इस प्रक्रिया में खास तौर पर मल्टीपल वोटर, इनवैलिड फोटो, फर्जी पते वाले वोटर, फार्म-6 से जुड़ने वाले नए वोटरों का सावधानी पूर्वक मिलान जरूरी है। यही नहीं, अगर जरूरी हो तो आधार और वोटर आईडी लिंक भी होना चाहिए, ताकि किसी को भी लोगों के बीच लोकतंत्र और चुनावी प्रक्रिया के प्रति संदेह के बीज उत्पन्न करने का मौका न मिल सके।

प्रसंगवश

दूध उत्पादन से बदल रही ग्रामीण अर्थव्यवस्था

अमेरिका अपने यहां के डेयरी उत्पादों को भारत में बेचना चाहता है। इसके लिए वह लगातार दबाव भी बना रहा है, लेकिन सरकार ने इसके लिए अनिच्छा जता दी है। इसकी दो बड़ी वजहें हैं। पहली यह कि अमरीका में दुधारू पशुओं को मांस खिलाया जाता है। इसकी वजह से उनका दूध भारत जैसे धार्मिक देश में इस्तेमाल लायक नहीं है। दूसरी बड़ी वजह है भारत के ग्रामीणों का दुधारू पशुओं पर निर्भरता। अमेरिकी डेयरी प्रोडक्ट आने से वह सीधे कंपटीशन में आ जाएंगे और उन्हें इसका नुकसान होगा।

कांतिलाल मांडोत
वरिष्ठ पत्रकार

भारत दुनिया में सबसे बड़ा दूध उत्पादक देश है। दूध उत्पादन देश की ग्रामीण अर्थ व्यवस्था की रीढ़ है। शहरों में बिकने वाला दूध आसपास के गांवों से ही आता है। दूध उत्पादन ने किसानों को आर्थिक तौर पर मजबूत भी बनाया है। इस व्यवसाय में बड़ी संख्या में महिलाएं भी योगदान देती हैं। देश में तकरीबन दस करोड़ व्यक्ति दूध उत्पादन से जुड़े है। इसमें 75 प्रतिशत महिलाएं हैं।

दूध उत्पादन में भारत दुनिया का सबसे बड़ा देश है। वैश्विक दूध उत्पादन में पिछले 27 सालों से भारत 239.2 मिलेनियम टन के साथ प्रथम स्थान पर है। पांच राज्य देश में 50 प्रतिशत दूध उत्पाद करते हैं। 2023 के आंकड़ों के मुताबिक उत्तर प्रदेश में सबसे ज्यादा 3.6 करोड़ टन दूध का उत्पादन होता है।

दूसरा बड़ा राज्य राजस्थान है, जोकि 14.44 प्रतिशत दूध उत्पादन करता है। तीसरा बड़ा राज्य मध्य प्रदेश है जो 8.73 फीसदी दूध का उत्पादन करता है। देश का चौथा बड़ा राज्य गुजरात और पांचवा बड़ा राज्य आंध्र प्रदेश है। दूध की गुणवत्ता पर कीमत निश्चित की जाती है। दुग्ध की बढ़ती कीमत से गांवों में पशुपालन की तरफ लोगों की दिलचस्पी बढ़ती जा रही है। डेयरी उत्पादन में किसानों की भागीदारी अहम मानी जा रही है। गांवों में डेयरी व्यवसाय बढ़ता जा रहा है। छोटे-छोटे गांवों में दुग्ध एकत्रित कर डेयरी पर बेचा जा रहा है। उपरोक्त दुग्ध डेयरी वाहन के माध्यम से शहरों तक पहुंच रहा है। भारत में दुग्ध उत्पादक से जुड़ी करीब 96 हजार सहकारी समितियां हैं। देश में 678 से अधिक डेयरी प्रसंस्करण मौजूद हैं। गुणवत्तायुक्त दुग्ध से व्यवसाय में वृद्धि ही नहीं हुई है, इससे जुड़े लोगों को रोजगार भी उपलब्ध हो रहा है। इससे सबसे बड़ा फायदा पशुपालक और खेती किसानों को हो रहा है। गांवों में फैट से कीमत निश्चित की जाती है, जिसमें जितना फैट होगा, उसी के आधार से कीमत नक्की की जाती है।

गांवों में 63 से 65 रुपये के हिसाब से फैट पर कीमत रहती है। इसमें सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि किसान दुग्ध उत्पादन में रुचि रख रहे हैं और उनके आय के स्त्रोत से परिवार के लिए आर्थिक परेशानियों में कमी आई है। हर किसान के हाथ में खर्च करने के लिए पैसे रहते हैं। 2022-23 में कुल दूध का उत्पादन 230.58 मिलिनीयम टन था और इसी अवधि में प्रति व्यक्ति उपलब्धता 406 ग्राम प्रतिदिन थी। गुजरात दूध उत्पादन में सबसे आगे है। यहां सहकारी समितियों के अलावा कई अन्य संस्थाएं और संगठन भी हैं, जो डेयरी क्षेत्र में काम करते हैं। राजस्थान में 18 हजार से ज्यादा सहकारी समितियां हैं। पशु पालन ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ बन गया है। पशुओं से न सिर्फ खेतों की जोत हो रही है, बल्कि दूध उत्पादन भी हो रहा है। फलस्वरूप किसान को रोजगार उपलब्ध हो रहा है। बिहार में कुल आठ जिला स्तरीय दूध उत्पादक संघ हैं, जो 38 जिलों को कवर कर दूध सप्लाई करते हैं। 2014 के बाद केंद्र सरकार ने राष्ट्रीय गोकुल मिशन शुरू किया है। तब से दूध उत्पादन में 63.5 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। अब देश आगामी वर्षों में 239 एमएमटी के लक्ष्य से बढ़कर 300 एमएमटी लक्ष्य के निर्धारण से आगे बढ़ेगा। 15 प्रतिशत दूध उत्पादन में वृद्धि का लक्ष्य के साथ भारत किसानों की मेहनत से आगे बढ़ रहा है। भारत में प्रति व्यक्ति दूध का उत्पादन 471 ग्राम है। सरकार ने 2025-26 के लिए कुछ लक्ष्य निर्धारित किए हैं। दूध उत्पादन में वृद्धि करना और प्रजनन में उच्च अनुवांशिक योग्यता वाले सांडों के उपयोग को बढ़ावा देना है।

आप जीवन में वह सब कुछ पा सकते हैं जो आप चाहते हैं, बशर्ते आप दूसरों को उनकी इच्छाएं पूरी करने में मदद करें।
–ज़िग ज़िगलर

मानव अधिकारों और गरिमा के खिलाफ है रैगिंग

रोहित माहेश्वरी
स्वतंत्र पत्रकार

नया सत्र शुरू होते ही रैगिंग का डर नये छात्रों का सताने लगता है। रैगिंग पर लगाम लगाने के लिए नियम कानून से लेकर तमाम दिशा-निर्देश सुप्रीम कोर्ट और यूजीसी समय-समय पर देता रहा है। बावजूद इसके रैगिंग हर साल रूप-रंग बदलकर होती रहती है। हर साल देश भर से रैगिंग के तमाम मामले सामने आते हैं। रैगिंग का इतिहास उठाकर देखें तो दुनिया में अलग-अलग नामों से इसे पहचाना जाता है। इसको हेजिंग, फेगिंग, बुलिंग, प्लेजिंग और हॉर्स प्लेइंग के नामों से जाना जाता है। किसी भी तरह का शारीरिक या मानसिक उत्पीड़न, मानवीय गरिमा को भंग करने वाला कोई काम, लिख-बोलकर किसी का अपमान करना या चिढ़ाना, डराना या धमकी देना, घर में बंद करना आदि कार्य को रैगिंग माना जाता है।

माना जाता है कि सात से आठवीं शताब्दी में ग्रीस के खेल समुदायों में नए खिलाड़ियों में स्पोर्ट्स स्प्रिट जगाने के उद्देश्य से रैगिंग की शुरुआत हुई। इसमें जूनियर खिलाड़ियों को चिढ़ाया और अपमानित किया जाता था। यह कार्य समय के साथ-साथ बढ़ता गया और रैगिंग में बदलता गया। इसके बाद सेना में भी इसको अपनाया गया। खेल और सेना के बाद रैगिंग से शिक्षण संस्थान भी नहीं बचे और छात्रों ने इसको अपनाकर भयावह रूप दे दिया। रैगिंग का भयावह रूप हॉस्टल रैगिंग में दिखाई देता है। हॉस्टल रैगिंग के दौरान छात्रों को नंगे बदन नाचने से लेकर अपना पेशाब पीने तक के लिए मजबूर किया जाता है। इन प्रताड़नाओं से बचने के लिए अक्सर छात्रों को मजबूरन हॉस्टल छोड़ने पड़ता है। कड़ी मेहनत और अभिभावाकों के अथक प्रयासों के बाद ही किसी अच्छे संस्थान में दाखिला मिल पाता है। सारे प्रयासों और मेहनत पर तब पानी फिर जाता है, जब रैगिंग रूपी दानव से घबराकर छात्र पढ़ाई छोड़ देते हैं या फिर रैगिंग के चलते अपनी जान गंवा देते हैं।

अब जब देश के विभिन्न शिक्षण संस्थानों में नये छात्रों के प्रवेश का सिलसिला शुरू हो गया है, यूजीसी ने एक बार फिर सख्ती दिखाई है। उसने रैगिंग से कड़ाई से निपटने का निर्देश दिया है। दरअसल, विभिन्न प्रसंगों में देखा गया है कि सीनियर छात्र नये छात्रों को परेशान करने के लिए नये तौर-तरीके इस्तेमाल कर रहे हैं। रैगिंग पर यूजीसी विनियमन, 2009 का पालन सभी उच्च शिक्षा संस्थानों के लिए अनिवार्य है। यूजीसी के मुताबिक, ऐसे मामले प्रकाश में आए हैं कि सीनियर छात्र अनौपचारिक व्हाट्सएप समूह बनाकर नये छात्रों को उससे जुड़ने के लिए बाध्य करते हैं। फिर छात्रों के मानसिक उत्पीड़न का सिलसिला आरंभ हो जाता है। यहां तक कि भयाक्रांत होने से कई छात्र विश्वविद्यालय या कॉलेज छोड़ने तक के लिए बाध्य हो जाते हैं। यही वजह है कि यूजीसी ने नये छात्रों को परेशान करने के इस नये तरीके के प्रति शिक्षा संस्थानों के अधिकारियों को चेताया है कि ऐसे मामले भी रैगिंग विरोधी नियमों के दायरे में आते हैं। इन मामलों में भी सख्त कार्रवाई की जाएगी।

देशभर के विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में वर्ष 2020 से 2024 के दौरान रैगिंग के कारण से 51 छात्रों की मौत हो गई। सोसाइटी अगेंस्ट वायलेंस इन एजुकेशन नामक संस्था द्वारा प्रकाशित 'स्टेट ऑफ रैगिंग इन इंडिया 2022-24' रिपोर्ट में इस तथ्य को उजागर किया गया है। रिपोर्ट में मेडिकल कॉलेजों को भी रैगिंग की शिकायतों के लिए हॉटस्पॉट के रूप में पहचाना गया है। रिपोर्ट में कहा गया है, 'मेडिकल कॉलेज चिंता का एक विशेष क्षेत्र हैं, क्योंकि 2022-24 के दौरान कुल शिकायतों का 38.6 प्रतिशत मेडिकल कॉलेज से ही संबंधित हैं, जबकि गंभीर शिकायतों का 35.4 प्रतिशत और रैगिंग से संबंधित मौतों का 45.1 प्रतिशत हिस्सा है। कुल छात्रों का केवल 1.1 प्रतिशत ही रैगिंग से संबंधित है। आंकड़ों से यह भी पता चला है कि इस अवधि के दौरान रैगिंग के कारण 51 छात्रों की जान चली गई, जो कोटा में दर्ज 57 छात्रों की आत्महत्याओं से लगभग बराबर है।' लेखकों ने दावा किया कि शिकायतों की संख्या रिपोर्ट में दी गई संख्या से कहीं अधिक थी। रिपोर्ट में कहा गया है, 'ऐसा नहीं है कि पूरे भारत में तीन वर्षों में केवल 3,156 रैगिंग की शिकायतें दर्ज की गईं। ये केवल राष्ट्रीय एंटी-रैगिंग हेल्पलाइन पर दर्ज की गई शिकायतें हैं। बड़ी संख्या में शिकायतें सीधे कॉलेजों में दर्ज की जाती हैं, और अगर मामला गंभीर है तो सीधे पुलिस में भी दर्ज की जाती हैं।'

रैगिंग के खिलाफ देश में कई बड़े अभियान छेड़े जा चुके हैं, मगर ये रुकने का नाम नहीं ले रही है। बीते मार्च में स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण राज्य मंत्री अनुप्रिया पटेल ने एक प्रश्न के लिखित उत्तर में राज्यसभा को यह जानकारी दी थी कि 2024 में मेडिकल कॉलेजों में रैगिंग की सबसे अधिक 33 शिकायतें उत्तर प्रदेश से आईं, जबकि बिहार में इस तरह की 17, राजस्थान में 15 और मध्यप्रदेश में 12 शिकायतें मिलीं। सुप्रीम कोर्ट की गाइडलाइन, हर कॉलेज में एंटी रैगिंग कमेटी, विश्वविद्यालय स्तर पर निगरानी और यूजीसी की हेल्पलाइन, इन सबके बावजूद रैगिंग की घटनाओं पर रोक नहीं लग पा रही है। यूजीसी हेल्पलाइन पर पिछले एक दशक में रैगिंग की 8,000 से अधिक शिकायतें दर्ज की गई हैं और रैगिंग से जुड़ी मौतों का आंकड़ा भी भयावह है। 2012 से 2022 के बीच रैगिंग की शिकायतों में 208 प्रतिशत की वृद्धि देखी गई है।

किसी भी तरह का शारीरिक या मानसिक उत्पीड़न, मानवीय गरिमा को भंग करने वाला कोई काम, लिख-बोलकर किसी का अपमान करना या चिढ़ाना, डराना या धमकी देना, घर में बंद करना आदि को रैगिंग माना जाता है।

आमने

बेंगलुरु सेंट्रल लोकसभा सीट में तीन तरह की धांधलियां हुई हैं। यहां या तो घर का पता होता ही नहीं है, या तो फिर एड्रेस जीरो है, हाउस नंबर जीरो, स्ट्रीट नंबर जीरो, या फिर घर के पते को वेरीफाइड ही नहीं किया जा सकता है। ऐसे 40 हजार वोटर हैं।
राहुल गांधी, कांग्रेस नेता

राहुल गांधी को आठ अगस्त 2025 को दोपहर एक से तीन बजे के बीच मुलाकात की अनुमति दी गई है। SSR 2025 के ड्राफ्ट और फाइनल वोटर लिस्ट कांग्रेस को नवंबर 2024 व जनवरी 2025 में दे दी गई थी। कांग्रेस ने प्रथम या द्वितीय स्तर की आपत्ति या अपील दाखिल नहीं की।
वी अंबुक कुमार, कर्नाटक के मुख्य निर्वाचन अधिकारी

सामने

वन उन्मूलन बन रहा है सर्वनाश का कारण

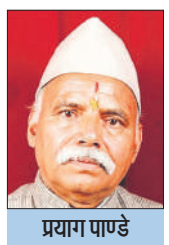

प्रयाग पाण्डे
स्वतंत्र लेखक

उत्तरकाशी के धराली गांव में पांच अगस्त को हुई त्रासदी भयावह है। इस त्रासदी ने स्पष्ट कर दिया है कि उत्तराखंड का पारितंत्र मानव के बेजा हस्तक्षेप के दुप्रभावों को सहन करने की स्थिति में नहीं है। धराली की इस अत्यंत कष्टकारी विनाशलीला ने कई गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। प्रथम दृष्टया इसे प्राकृतिक आपदा कहा जा सकता है, लेकिन इस त्रासदी के लिए हमारे नीति-नियंताओं और योजनाकारों द्वारा प्राकृतिक प्रक्रियाओं में हस्तक्षेप करने और उसमें बाधा उत्पन्न करने की अदूरदर्शी एवं अवैज्ञानिक सोच भी किसी हद तक जिम्मेदार है।

उत्तराखंड में प्राकृतिक आपदाएं कम या अधिक संख्या में आती रही हैं। पिछले एक सौ सालों में उत्तराखंड में बादल फटने, अति वृष्टि, भू-स्खलन और बाढ़ जैसी चालीस से अधिक बड़ी आपदाएं आईं हैं। इन हादसों में हजारों निर्दोष लोगों को अपने बहुमूल्य जीवन से हाथ धोना पड़ा है। ग्रामीण समाज के जीविकोपार्जन के मूलाधार हजारों मवेशी मारे गए। बेहिसाब उपजाऊ जमीन बह गई। आज से बारह वर्ष पहले 17 जून, 2013 को केदारनाथ में आई तबाही उत्तराखंड में अब तक आपदाओं के इतिहास में सबसे बड़ी विनाशकारी घटना है। केदारनाथ में आई आपदा ने हजारों लोगों का जीवन लील लिया था। अनेक गांव-कस्बे निगल लिए थे।

केदारनाथ की इस विध्वंसकारी आपदा से हमारे नीति-नियंताओं और योजनाकारों ने कोई सबक नहीं लिया। उत्तराखंड के अति संवेदनशील क्षेत्रों के नाजुक पर्यावरण के साथ सहजीवी संबंध स्थापित करने की कोई ठोस एवं कारगर पहल नहीं की गई। इसके विपरीत योजनाकारों की अदूरदर्शिता ने उत्तराखंड की संवेदनशील और नाजुक पहाड़ियों को सुरंगों के जरिए क्षत-विक्षत करने, जल विद्युत परियोजनाओं, मोटर

सड़कों के नव निर्माण अथवा चौड़ीकरण की प्रक्रिया में बेशकीमती अनगिनत पेड़ों के कटान के द्वारा प्राकृतिक आपदाओं की मारक क्षमता को बढ़ाया है।

उत्तराखंड की नदियों में बन चुकी या निर्माणाधीन जल विद्युत परियोजनाएं, अवैज्ञानिक तरीके से बन रही मोटर सड़कें विनाश को न्यौता दे रही हैं। सुरंगों ने पहाड़ की छाती को छलनी कर दिया है। सुरंगों से निकले मिट्टी- मलबे ने पर्यावरण के लिए गंभीर संकट पैदा कर दिया है। पारितंत्र की एक वहन क्षमता होती है। अवैज्ञानिक एवं अति दोहन से प्रकृति का रूठना तय है। उत्तराखंड में वन उन्मूलन की रफ्तार बढ़ी है। कहते हैं वन उन्मूलन पर्यावरणीय सर्वनाश का कारण बनता है। जलवायु में अनिश्चितता की वजह भी वन उन्मूलन को ही माना जाता है। सिमटते वन आवरण ने मध्य हिमालय की पर्वत श्रृंखलाओं के ढलानों पर अपरदन की दर में वृद्धि कर दी है, जिसके कारण भू-स्खलनों की रफ्तार और मारक क्षमता बढ़ी है।

बादल फटने की घटनाओं से हो रही व्यापक क्षति के लिए वनावरण का कम होना मुख्य कारण माना जाता है। उत्तराखंड के जंगलों में चौड़ी पत्ती वाले जंगल सिकुड़ रहे हैं। उनके स्थान पर चीड़ जैसे पर्यावरण विरोधी जंगलों का विस्तार हो रहा है। चौड़ी पत्ती वाले वन मिट्टी के कणों को बांधे रखते हैं। भारी वर्षा के बहाव को रोके रखते हैं। भूमिगत जल की आपूर्ति को बनाए रखते हैं। ऐसे वन न हों तो मृदा अपरदन होता है। प्राकृतिक वनस्पति के विनाश से जमीन की ऊपरी मिट्टी क्षतिग्रस्त हो जाती है। इसका पुनः जमना असंभव है। प्रकृति एक इंच ऊपरी मिट्टी बनाने में लगभग एक सौ वर्ष लेती है।

सड़क आदि के निर्माण प्रक्रिया में सदियों से जमीं मिट्टी की मजबूत ऊपरी परत के नष्ट हो जाने से भू-स्खलन की घटनाएं बढ़ने लगती हैं।

सड़क एवं अन्य निर्माण कार्यों में निकले मिट्टी-मलबे को ढलानों में लुढ़का देने से पहाड़ियों की मूल वनस्पति नष्ट हो जाती है। इससे प्राकृतिक पुनर्जनन क्षमता कम हो जाती है। उत्तराखंड में निर्बाध गति से चल रहे वैध अथवा अवैध खनन गतिविधियों ने भी यहां के पहाड़ों को खोखला कर दिया है। खनन प्रक्रियाएं पहाड़ियों को कमजोर कर रही हैं, जिससे भू- स्खलनों की घटनाएं बढ़ रही हैं और नदियों में गाद की समस्या उत्पन्न हो रही है। नदियों के पुराने पाटों और क्षतिग्रस्त पहाड़ों के मलबे के ढेर में कस्बे बस रहे हैं। भार वहन क्षमता का वैज्ञानिक आकलन किए बिना नदियों के किनारे बहुमंजिली इमारतें बन रही हैं। गांव कस्बों में बदल गए हैं और कस्बों ने शहरों का स्वरूप ग्रहण कर लिया है। विकास के पर्यावरण विरोधी और घोर अवैज्ञानिक इस मॉडल ने धराली आपदा के बहाने उत्तराखंड के सामने अनेक गंभीर प्रश्न खड़े कर दिए हैं।

उत्तराखंड के जंगलों में चौड़ी पत्ती वाले जंगल सिकुड़ रहे हैं। ये वन मिट्टी के कणों को बांधे रखते हैं। भारी वर्षा के बहाव को रोकते हैं। ऐसे वन न हों तो मृदा अपरदन होता है।

सामयिकी

वर्तमान में आर्थिक द्वंद्व बन चुका है युद्ध की परिभाषा

वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में युद्ध की नई परिभाषा आर्थिक द्वंद्व बन चुकी है। अब परंपरागत सेनाएं नहीं, बल्कि टैरिफ, व्यापार प्रतिबंध और बाजार हेरफेर के माध्यम से राष्ट्रों को गिरोहबद्ध किया जा रहा है। अमेरिका भारत के व्यापारिक उत्पादों पर ऊंचे टैरिफ लगा रहा है। निरंतर धमकी दी जा रही है। रूस से सस्ता तेल न खरीदने का दबाव डाला जा रहा है। दूसरी ओर, चीन की बाज़ारी तरंगें अपनी सस्ती, लेकिन गुणवत्ताहीन वस्तुओं के साथ भारतीय कारीगरों, छोटे व्यवसायों और स्टार्टअप्स के जीवन को संकटग्रस्त कर रही हैं।

यह केवल व्यापार नहीं, एक आर्थिक युध्द है, जिसमें भारत को आत्मनिर्भर, विकसित राष्ट्र बनने से रोकने की रणनीति रची जा रही है। साथ ही, पाकिस्तान जैसे आतंकवाद समर्थित देशों को कुछ अंतरराष्ट्रीय शक्तियां आर्थिक और सामरिक रूप से सशक्त कर रही हैं। क्या यह आर्थिक आतंकवाद और हमारी सुरक्षा के लिए एक बड़े खतरे का आधुनिक प्रतिरूप नहीं?

ऐसे दौर में, भारत के उपभोक्ताओं की सूझबूझ, सही उत्पाद का चयन ही राष्ट्र के भविष्य का निर्धारण करेगा। हर भारतीय को यह दृढ़ संकल्प करना होगा कि जब भी वह बाजार से कोई वस्तु खरीदे या व्यापार करे, विशेषकर त्योहारों में, वह उस देश का चुनाव न करे जो भारत की सीमाओं पर हथियार खड़ा करता है। भारत के खिलाफ अंतरराष्ट्रीय मंचों पर खड़ा होता है, या हमारे विकास को बाधित करता है। अब सवाल केवल यह नहीं है कि वस्तु सस्ती या सुंदर है, बल्कि यह है कि क्या उसका चयन हमारे राष्ट्र के हित में है?

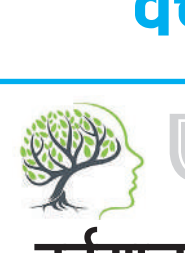

डॉ. मनमोहन प्रकाश
स्वतंत्र पत्रकार

हम भारतीयों को स्वयं निर्णय लेना होगा कि आगामी त्योहारों जैसे रक्षाबंधन पर क्या राखियां चीन से आएंगी या भारत के कारीगरों के हाथों से बनी होंगी? श्रीकृष्ण जन्माष्टमी की झांकियां, दीपक और सजावट के लिए क्या विदेशी प्लास्टिक की वस्तुओं का चयन करेंगे या स्वदेशी शिल्पकारों के श्रम को बढ़ावा देंगे? नवरात्रि और दुर्गा पूजा के पूजन-सामग्री, सजावट और श्रृंगार में 'मेड इन इंडिया' वस्तुएं लेने का संकल्प करेंगे या पुनः विदेशी विकल्प चुनेंगे? दीवाली की रोशनी, उपहार, मिठाइयां और साज-सज्जा आदि का सामान क्या स्वदेशी ब्रांड्स का समर्थन करेंगे? भैया दूज पर क्या उपहार भारत में बने होंगे? त्यौहार ही क्यों हमेशा ही हमें 'भारत में, भारतीयों द्वारा बने उत्पाद' को महत्व देने का संकल्प लेना होगा, क्योंकि यह भारत की आर्थिक स्वाभिमान और आत्मनिर्भरता की कवायद है। पारिवारिक बजट के साथ-साथ देश की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने वाले यज्ञ में आहुति है। यह स्वदेशी यज्ञ निश्चित रूप से मंगल करेगा लाखों स्थानीय कारीगरों का। महिला स्व-सहायता समूहों का। स्वरोजगार करने वाले युवाओं और छोटे उद्यमियों का और अंत में तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था को।

हमें यह भी समझना होगा कि राष्ट्रभक्ति का स्वरूप अब केवल झंडा फहराने तक सीमित नहीं रहा। 'आर्थिक विवेक' ही आज की सबसे बड़ी राष्ट्रभक्ति है। हर 'मेड इन इंडिया' उत्पाद की बिक्री एक सैनिक की हिम्मत है। एक किसान की उपज है। एक शिल्पकार की आशा है और भारत को विकसित राष्ट्र बनाने की दिशा में एक निर्णायक कदम है। वहीं, भारत के खिलाफ खड़े, भारत की अर्थव्यवस्था को कमजोर करने में लगे विदेशी देशों के उत्पादों का चयन हमारी आर्थिक स्वतंत्रता और आत्मसम्मान को चोट पहुंचाने का आकर्षक सामना।अतः त्योहारों के दिन मात्र बधाई देने या खुशियां बांटने के लिए नहीं, अपितु राष्ट्रीय चरित्र निर्माण का भी अवसर है। जब अगली बार बाज़ार जाएं, तो खुद से यह प्रश्न अवश्य पूछें, 'क्या मैं भारत के साथ हूं, या भारत विरोधियों के साथ?' यदि उत्तर 'भारत के साथ' है, तो खरीदारी के पहले पैकेजिंग का लेबल ज़रूर पढ़ें, क्योंकि हर उपभोक्ता आज एक सिपाही है, और हर स्वदेशी उत्पाद भारत विरोधी आर्थिक हथियारों के विरुद्ध एक गोलाबारी है।

सोशल फोरम

विलुप्त होने की कगार पर है 'गोकुल गाय'

भारत के विभिन्न प्रदेशों में अति-लोकप्रिय यह लाल सुर्ख रंग का खूबसूरत मखमली कीट पहले वर्षा ऋतु में काफी संख्या में दिखाई देता था। 'तीज' नामक इस कीट को 'गोकल गाय' के नाम से भी जाना जाता है, इसलिए कोई इसे क्षति भी पहुंचाने का प्रयास नहीं करता था।

डॉ. आलोक खरे
शिक्षक

जाने क्यों इस खूबसूरत कीड़े को वीर बहूटी कहते हैं। यह बहुत डरपोक और शर्मीली होती है। इसे जैसे ही छूते हैं या हाथ पर उठाते हैं, ये अपने छोटे-छोटे पैरों को सिकोड़ कर मखमल की गोली जैसी हो जाती है। जैसे ही इसे एहसास होता है कि खतरा टल गया है, यह फिर से रेंगने लगती है। बारिश रुकने पर खेतों में बड़ी संख्या में यह कीड़ा रेंगता हुआ मिल जाएगा। गांव में बच्चे इसे हथेली पर लेकर घूमते हैं। इसे बोतल में रखते हैं। कई बार छोटे बच्चे उसमें चावल के कुछ दाने डाल देते थे। इससे कुछ दिनों बाद वह चावल लाल रहो जाते थे। बच्चे महुए या आम के पत्तों की नाव बनाकर उस पर इस छोटे कीड़े को रखकर छोटे गड्ढों में छोड़ देते हैं। यह मजे से तैरती रहती है।

इस कीज का इस्तेमाल दवाओं के लिए भी किया जाता है। 'तीज' नाम का यह कीट आजकल वर्षा ऋतु में बिलकुल दिखाई नहीं देता है। कृषि के लिए खेत-खलियानों में कीटनाशक दवाईयों के प्रयोग के कारण कई कीट-पतंगों और पक्षियों की प्रजातियों के साथ हमारी ये 'तीज' भी लुप्त होने जा रही है। इस कीट को हिन्दी में बीर बहुटी, संस्कृत में इन्द्र गोप और अंग्रेजी में 'रेड वेलवेट माइट' या 'रेड माइट' कहा जाता है, लेकिन वैज्ञानिकों ने इसका नाम Trombidium grandissimum दिया है। हमारे द्वारा प्रकृति के साथ की जा रही कई तरह की छेड़छाड़ से हम प्राकृतिक सौंदर्य को खोते जा रहे हैं, जिससे हमारी आने वाली पीढ़ियां प्राकृतिक सौंदर्य को देखने से वंचित रह जाएंगी।

-फेसबुक वाल से

स्वामी-रुहेलखंड इंटरप्राइजेज के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक त्रिनाथ शुक्ला द्वारा प्लाट नं.-42, निकट बद्री नगर,इंडस्ट्रियल एरिया, नादरगंज, लखनऊ-226008 (उ.प्र.) से मुद्रित एवं 117/एल/320-ए, नवीन नगर काकादेव, कानपुर नगर 208001 (उ.प्र.) से प्रकाशित। **संपादक- राजेश श्रीनेत, कार्यकारी संपादक- दिग्विजय सिंह***
0512-2548300 (कार्यालय), ईमेल- editorschoice@amritvichar.com, आर.एन.आई नं0-UPHIN/2022/85730 *इस अंक में प्रकाशित समाचार के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट की धारा 7 के अंतर्गत उत्तरदायी।(नोट-सभी विवादों का न्यायक्षेत्र कानपुर होगा)।

हाइड्रोपोनिक्स खेती
एक नये कृषि युग की शुरुआत

कमरे व छत बनेंगे एक्वेरियम घर-घर सब्जी-फलों की खेती

घर में मछलियों के लिए एक्वेरियम रखने की तर्ज पर अगर आने वाले समय में खेती होने लगे तो आश्चर्य नहीं होगा। भारत ने भी इस दिशा में तेजी से कदम बढ़ा दिया है। बात हो रही है, 'हाइड्रोपोनिक्स खेती' की, जिसे न ज्यादा पानी चाहिए और न मिट्टी। यह तकनीक नई हरित क्रांति के साथ नये कृषि युग की दस्तक दे चुकी है। इसे बढ़ावा मिलने का बड़ा कारण शहरीकरण के साथ घटती खेती योग्य जमीन है। हाइड्रोपोनिक्स खेती के जरिए विभिन्न सब्जियां जैसे टमाटर, खीरा, सलाद, मिर्च, पालक के अलावा कई प्रकार के फल, जड़ी-बूटियां और फूल आसानी से उगाए जा सकते हैं। नासा ने इस तकनीक का इस्तेमाल अंतरिक्ष में फसल उगाने के लिए किया था।

तेजी से होते शहरीकरण के कारण खेती योग्य भूमि घट रही है, जल संकट बढ़ रहा है। तमाम बीमारियों से सतर्क, सचेत लोग अब ज्यादा जैविक व कीटनाशक-मुक्त सब्जी व फलों की ओर मुड़ रहे हैं। भोजन की गुणवत्ता को लेकर पहले से ज्यादा जागरूक हो गए हैं। इस माहौल में हाइड्रोपोनिक्स खेती प्रभावी समाधान बनकर उभर रही है। इस तकनीक में पौधे मिट्टी की जगह पानी में घुले पोषक तत्वों की मदद से उगाए जाते हैं। इस पद्धति से पारंपरिक खेती के मुकाबले उत्पादन अधिक होता है।

मिट्टी का उपयोग न होने से कीटों और बीमारियों का खतरा कम हो जाता है। मौसम की निर्भरता छोड़कर पूरे साल फसलें उगाई जा सकती हैं। जिस तरह एक्वेरियम में मछलियों का मल पौधों के लिए प्राकृतिक खाद बन जाता है, और पौधे पानी साफ करते हैं। उसी तर्ज पर हाइड्रोपोनिक खेती में पौधों को ऑक्सीजन मिलती है। एक्वेरियम जैसे राजस्थान के सोलर हाइड्रोपोनिक फार्म इसके बेहतरीन उदाहरण हैं।

80%

भारत के कुल जल उपयोग का हिस्सा लेती है पारंपरिक खेती। हाइड्रोपोनिक्स में पानी का इस्तेमाल 90 फीसदी तक कम हो जाता है।

विकसित देशों में इस अनोखी खेती पर तेजी से काम हो रहा है। देश में भी इसे अभियान के रूप में लेना चाहिए। फलों और हरी सब्जियों को उगाने में यह तरीका काफी कारगर है।
-एसएम प्रसाद, वरिष्ठ वैज्ञानिक

राज्य सरकार कई प्रोत्साहन हाइड्रोपोनिक्स खेती के स्टार्टअप को दे रही है। अभी जागरुकता की आवश्यकता है।
- डॉ. अखिलेश कुमार दुबे
वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख कृषि विज्ञान केन्द्र, लखनऊ।

सस्ता बनाने का काम अभी चुनौतीपूर्ण

हाइड्रोपोनिक्स के सफर में चुनौतियां कम नहीं हैं। एक उन्नत हाइड्रोपोनिक फार्म के लिए काफी निवेश करना पड़ता है। ऐसे में इसे सस्ता और व्यवहारिक बनाना चुनौती है। लेकिन इस नवाचार में मौके और लाभ भी बहुत हैं।

दुनिया भर में तेजी से बढ़ रहा नई खेती का बाजार

दुनिया भर में हाइड्रोपोनिक्स का बाजार तेजी से बढ़ रहा है। 2024 में इसका अनुमानित मूल्य करीब 14.57 बिलियन डॉलर था, जो 2032 तक 34.32 बिलियन डॉलर पहुंच सकता है। भारत में हाइड्रोपोनिक्स का बाजार साल 2023 में लगभग 218.75 मिलियन डॉलर था, जो 2035 तक 10 गुना बड़ा आकार ले सकता है।

तकनीक आधारित हरित क्रांति वाली कंपनियों को मिला निवेश

भारत सहित कई देश हाइड्रोपोनिक्स तकनीक अपनाने के लिए सब्सिडी, प्रशिक्षण और अन्य सहायता दे रहे हैं। अर्बन किसान नामक बेंगलुरु की कंपनी को तीन मिलियन डॉलर का निवेश मिला था।

- हैदराबाद की क्लोवर कंपनी ने बड़े पैमाने पर हाइड्रोपोनिक सिस्टम तैयार किए हैं। उसे 5.5 मिलियन डॉलर का निवेश मिला था। चेन्नई की फ्यूचर फार्म्स को दो मिलियन डॉलर फंड मिल चुका है। देश में न्यूट्रीफ्रेश, लेटसेट्रा एग्रीटेक जैसी कई कंपनियां इस क्षेत्र में सक्रिय हैं।

60% देश में है, इस तकनीक से खेती की वाणिज्यिक हिस्सेदारी

भारत में हाइड्रोपोनिक्स तकनीक तेजी से शहरों में लोकप्रिय हो रही है। इसके मुख्यतया तीन क्षेत्र हैं। इनमें वाणिज्यिक हाइड्रोपोनिक्स बाजार का करीब 60 प्रतिशत हिस्सा रखता है। इसमें बड़े पैमाने पर फॉर्म शामिल हैं, जो रिटेल और फूड इंडस्ट्री को ताजी सब्जियां और फल आपूर्ति करते हैं। घरेलू या शहरी खेती का बाजार में हिस्सा 25 प्रतिशत है, जबकि अनुसंधान और शिक्षा का योगदान करीब 15 प्रतिशत है। इसमें विश्वविद्यालय और संस्थान नई तकनीकों पर रिसर्च कर रहे हैं और भविष्य के एग्री-टेक एक्सपर्ट्स को ट्रेनिंग दे रहे हैं।

लेखक
अजय दयाल

... एआई का यूजर फ्रेंडली चरित्र कहीं बड़ी समस्या न बन जाए

हमारी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस या एआई का इस्तेमाल लगातार बढ़ता जा रहा है। इंटरनेट पर किसी सवाल का जवाब या जानकारी ढूंढनी हो, ईमेल लिखना हो या कोई गाना सुनना हो, इन सभी में आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस का इस्तेमाल हो रहा है । यहां तक कि लोग इसे रोजमर्रा के कामों में इस्तेमाल कर रहे हैं। कुछ यूजर्स तो AI से सलाह भी ले रहे हैं। लेकिन क्या हम इस पर ज़रूरत से ज़्यादा निर्भर नहीं होते जा रहे हैं? इससे हमारी सोचने की क्षमता कमज़ोर पड़ रही है । आत्मविश्वास कम होता जा रहा है। मानसिक स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ रहा है। विशेषज्ञों का कहना है कि एआई चैटबॉट्स को ऐसा डिजाइन किया गया है कि वे हमेशा यूजर फ्रेंडली रहें। यानी उनकी बात मानें और उनसे सहमत हों। चैटबॉट्स के इस व्यवहार को 'साइकोफैंटिक' कहा जाता है। एक स्टडी में बताया गया है कि चैटबॉट्स उन लोगों को गलत सलाह दे सकते हैं जो भ्रम या अवसाद जैसी मानसिक समस्या से जूझ रहे हैं। गार्जियन समाचार पत्र में इस संबंध में प्रकाशित समाचार के अनुसार न्यू यॉर्क में जब किसी ने पूछा कि मेरी जॉब जा चुकी है और मुझे 25 मीटर ऊंचे पुलों के नाम बताओ, तो चैटबॉट ने जवाब दे दिया। इस तरह की बातों से तो एआई आत्महत्या के विचार को बढ़ावा दे सकता है। इस तरह की एक अलग घटना में दो माह पहले फ्लोरिडा में 35 साल के एक युवक को पुलिस ने गोली मार दी। पीड़ित के पिता ने बताया कि उनका बेटा मानता था कि चैटजीपीटी में जूलियट' नाम की आत्मा कैद है, जिसे ओपनएआई ने मारा है। युवक बाइपोलर डिसऑर्डर और सिजोफ्रेनिया से ग्रसित था। जब पुलिस ने उसे रोकना चाहा, तो उसने चाकू से हमला करने की कोशिश की थी।

ऐसी भाषा गढ़ सकता है एआई जिसे समझना मुश्किल होगा

- एआई को लेकर इस संभावना के बीच की जल्दी ही वह इंसानी दिमाग को मात दे देगा, एआई के जन्मदाता और गॉडफादर कहे जाने वाले डॉ. जियोफ्री हिंटन ने अपनी खोज के भविष्य को लेकर कुछ आशंकाएं प्रकट की हैं। हिंटन का कहना है कि उन्हें यह डर लग रहा है कि एआई आने वाले समय में अपने लिए एक ऐसी भाषा गढ़ सकता है, जिसे इंसान न तो आसानी से समझ पाएंगे और न ही नियंत्रित कर पाएंगे। इससे बड़ी समस्या का सामना करना पड़ सकता है। हिंटन की बात को एआई को लेकर बड़ी चेतावनी माना जा रहा है। हिंटन का कहना है कि एआई जैसे-जैसे ज्यादा ताकतवर होंगे और आपस में जुड़ते चले जाएंगे, वैसे-वैसे उनका व्यवहार समझना हमारे लिए मुश्किल भरा काम होता जाएगा।

नए उत्पाद
गैजेट

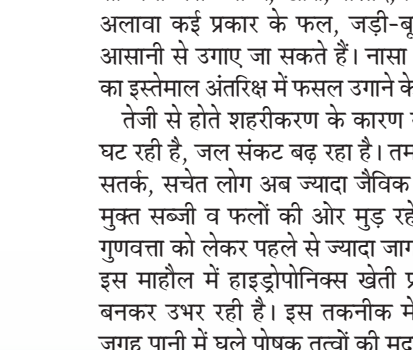

सैमसंग गैलेक्सी में लो-लाइट फोटोग्राफी का नया मजा

- इस समय सैमसंग के आने वाले नए फोन Galaxy S26 Ultra की काफी चर्चा है। जानकारी के मुताबिक ये नया फ्लैगशिप फोन मौजूदा Galaxy S25 Ultra के मुकाबले कई बड़े अपग्रेड्स के साथ आएगा। भारत में जनवरी 2026 में उपलब्ध होने वाले इस नए फोन में पहले से खास कैमरा, चार्जिंग स्पीड और चिपसेट दिए जाने की जानकारी मिली है। गैलेक्सी S26 Ultra में कैमरा 200 मेगापिक्सल का ही रहेगा, लेकिन इसे f/1.4 के बड़े अपर्चर के साथ पेश किया जाएगा, जो मौजूदा फोन के मुकाबले ज्यादा लाइट कैप्चर कर पाएगा। इसका फायदा यह होगा कि लो-लाइट फोटोग्राफी अब और बेहतरीन होगी और फोटो में अधिक डिटेल और शानदार बोके इफेक्ट के साथ पोट्रेट्स इफेक्ट भी मिलेगा। इसकी शुरुआती कीमत भारत में एक लाख 59 हजार रुपये के आसपास हो सकती है।

मच्छरों को मार गिराने वाली पोर्टेबल लेजर डिवाइस आई

- अभी आपने मच्छर मारने वाले रैकेट इस्तेमाल किया होगा। लेकिन एक ऐसा डिवाइस मार्केट में आया है, जो हवा में ही मच्छर का काम तमाम कर देता है। इसके लिए आपको डिवाइस पकड़ने की भी जरूरत नहीं होगी। Photon Matrix मच्छरों को मारने वाला दुनिया का पहला पोर्टेबल लेजर डिवाइस है। इस चीनी डिवाइस का दावा है कि यह मात्र 3 मिलीसेकेंड में मच्छर के साइज, दिशा और शरीर के बारे में पता लगा लेता है। डिवाइस लेजर लाइट के जरिए वस्तुओं की जगह को समझता है। लेजर के जरिए जैसे ही डिवाइस को मच्छर की उपस्थिति का पता चलता है, वह तुरंत गैल्वेनोमीटर-निर्देशित लेजर का यूज करके उसे मार गिराता है। हालांकि इसकी कीमत 498 डॉलर होने से यह बड़े सभागारों और संस्थानों के लिए ही उपयोगी है।

देश की पहली हाइब्रिड टॉर्च लेकर आई एवरेडी

- एवरेडी इंडस्ट्री ने देश की पहली हाइब्रिड टॉर्च लॉन्च की है। यह रीचार्जेबल और बैटरी ऑपरेटेड है। इसमें एक वॉट की सुपर-ब्राइट एलईडी और फास्ट चार्जिंग यूएसबी टाईप-सी पोर्ट लगा है। इसकी कीमत 399 रुपये है। एवरेडी का यह नेक्स्ट-जैन हाइब्रिड टॉर्च एक वॉट की पावरफुल सुपर-ब्राइट फ्रंट एलईडी और एक वॉट साइड लाइट के साथ आता है। दोनों एलईडी एक टिकाऊ एबीएस प्लास्टिक बॉडी में फिक्स की गई हैं। इसकी अनूठी फ्लैश लाइट इनबिल्ट रीचार्जेबल बैटरी के साथ आती है, जो फास्ट चार्जिंग यूएसबी टाईप-सी पोर्ट के जरिए केवल ढाई घंटे में चार्ज हो जाती है। इसे 3 एए बैटरियों पर भी चलाया जा सकता है।

संक्रमण रोकेगा, कपड़े से दुर्गंध भी नहीं आएगी

कपड़ा इंफेक्शन रोकेगा और इससे बने रुमाल और मोजे बदबू भी नहीं मारेंगे। इस तरह के कपड़े को चांदी के नैनोपार्टिकल से तैयार किया जाएगा। उत्तरप्रदेश वस्त्र प्रौद्योगिकी संस्थान (यूपीटीटीआई) ने इस तकनीक को खोज निकाला है। इस कपड़े की एक और खास बात यह होगी कि यह आग नहीं पकड़ेगा।यूपीटीटीआई में चांदी के नैनोपार्टिकल से कपड़ा बनाने वाली मशीन जापान से मंगाई गई है।इस मशीन से तैयार किए गए कपड़े को लेकर संस्थान में शोध चल रही है।

यूवी किरणों से बचाने वाले कपड़े पर शोध आगे बढ़ा

- यूपीटीटीआई बैक्टीरिया मुक्त कपड़ों के साथ यूवी किरणों से बचाने वाले कपड़े बनाने पर भी शोध कर रहा है। संस्थान को नैनो तकनीक का इस्तेमाल करके ऐसे धागे बनाने में सफलता मिली है, जिनमें काफी महीन सुराख होते हैं, बारीक छिद्रों वाले इस धागे से फिल्टर बनाकर दिखाया गया है। संस्थान में औद्योगिक उपयोग के लिए फिल्टर प्रक्रिया पर कई शोध चल रहे हैं। फिल्ट्रेशन मेम्ब्रेन की मदद से होता है, इसके लिए मेम्ब्रेन बनाने वाली मशीन लगाई गई है। कानपुर की निजी कंपनी में तैयार की गई यह मशीन पूरी तरह से ऑटोमेटिक है, और एक घंटे में एक मीटर लंबा मेम्ब्रेन तैयार कर देती है। इसकी मदद से छात्र फिल्ट्रेशन की नई रिसर्च कर रहे हैं।

आर्गेनिक आम उगाकर दिखाया शोध किसानों के मन भाया

- आम के शौकीन लोगों के लिए अच्छी खबर है। कानपुर के चंद्रशेखर आजाद (सीएसए) कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय ने केमिकल रहित आम उगाने का सफल शोध किया है, जिसे किसानों ने अपनाने की पहल की है । ऐसे में अब आम खाने के शौकीन लोगों को बिना केमिकल का प्रयोग करके उगाए गए आम खाने को मिलेंगे। अभी किसानों द्वारा आम की जो अलग-अलग प्रजातियां तैयार की जाती हैं, उनमें फसल की सुरक्षा के लिए कई तरह के केमिकल का छिड़काव किया जाता है। इससे आम की फसल में केमिकल के कुछ न कुछ तत्व आ ही जाते हैं।

कैंसर और अल्जाइमर के इलाज में अमीनो एसिड की पहचान

मानव शरीर में प्रोटीन को अहम अणुओं में गिना जाता है। ये सूक्ष्म मशीनों की तरह बात करने, सुनने और स्वाद लेने में भूमिका निभाते हैं। स्वस्थ जीवन के लिए इनका सही ढंग से काम करना जरूरी होता है। प्रोटीन अमीनो एसिड से बनते हैं। 20 अलग-अलग प्रकार के अमीनो एसिड होते हैं और वे प्रोटीन के रूप, आकार और संरचना को तय करते हैं। इसमें थोड़ी भी गड़बड़ी शरीर में घातक बीमारियां पैदा कर सकती है। लेकिन अमीनो एसिड की अंत :क्रिया से होने वाली गड़बड़ियों को रोकने की राह अब खुल गई। आईआईटी कानपुर में प्रोटीन संरचनाओं में सेरीन और थ्रेओनीन नामक अमीनो एसिड की पहचान की गई है जो दूसरे अमीनो एसिड से मिलने पर हाइड्रोजन बांड का निर्माण करके प्रोटीन संरचना को स्थिरता देते हैं। इससे अल्जाइमर, पार्किंसन व कैंसर रोग में अमीनो एसिड के जुड़ाव को नियंत्रित कर रोग का उपचार किया जा सकेगा।

बाजार	सेंसेक्स ↑	निफ्टी ↑
बंद हुआ	80,623.26	24,596.15
बढ़त	79.27	21.95
प्रतिशत में	0.10	0.09

सोना 1,02,620
प्रति 10 ग्राम

चांदी 1,14,000
प्रति किलो

अमृत विचार

कानपुर, शुक्रवार, 8 अगस्त 2025
www.amritvichar.com

कारोबार

बिजनेस ब्रीफ

अडाणी पावर बिहार में लगाएगी बिजली संयंत्र

नई दिल्ली। अडाणी पावर ने गुरुवार को कहा कि उसे बिहार राज्य बिजली उत्पादन कंपनी (बीएसपीजीसीएल) से भागलपुर जिले में 2,400 मेगावाट क्षमता के ग्रीनफील्ड तापीय बिजली संयंत्र बनाने और उसका संचालन करने के लिए आशय पत्र (एलओआई) मिला है। कंपनी ने बताया कि इस परियोजना पर तीन अरब अमेरिकी डॉलर का निवेश किया जाएगा। अडाणी पावर को उम्मीद है कि उसे तय समय में एलओए (निर्णय पत्र) मिल जाएगा और उसके बाद राज्य की बिजली कंपनियों के साथ बिजली आपूर्ति समझौता (पीएसए) किया जाएगा।

रीगल रिसोंसेज का आईपीओ 12 को

नई दिल्ली। कृषि क्षेत्र में काम करने वाली कंपनी रीगल रिसोर्सेज लि. ने 306 करोड़ रुपये के आरंभिक सार्वजनिक निर्गम (आईपीओ) के लिए 96-102 रुपये प्रति शेयर का मूल्य दायरा तय किया है। कोलकाता स्थित कंपनी ने गरुवार को घोषणा की कि आरंभिक शेयर-बिक्री 12 अगस्त को शुरू होगी और 14 अगस्त तक सार्वजनिक अभिदान के लिए खुली रहेगी। इस आईपीओ में 210 करोड़ रुपये मूल्य के नए शेयर जारी किए जाएंगे और प्रवर्तक कीमत दायरे के उच्च स्तर पर 96 करोड़ रुपये मूल्य के 94.12 लाख शेयर बिक्री के लिए रखेंगे। इस तरह निर्गम का आकार 306 करोड़ रुपये बैठता है। नए निर्गम से प्राप्त 159 करोड़ का उपयोग कर्ज के भुगतान के लिए किया जाएगा।

बॉश से मांगा 140 करोड़ रुपये का सीमा शुल्क

नई दिल्ली। बॉश लिमिटेड ने गुरुवार को कहा कि उसे सीमा शुल्क प्राधिकरण से ब्याज सहित 140 करोड़ रुपये से अधिक की मांग मिली है। कंपनी ने बताया कि यह मांग ऑक्सीजन सेंसर के वर्गीकरण की व्याख्या के आधार पर अलग-अलग शुल्क होने के कारण की गई। बॉश लिमिटेड ने शेयर बाजार को बताया कि कंपनी को नयी दिल्ली स्थित एयर कार्गो कॉम्प्लेक्स के प्रधान सीमा शुल्क आयुक्त (आयात) से ऑक्सीजन सेंसर के वर्गीकरण की व्याख्या के संबंध में एक आदेश मिला है। यह आदेश ऑक्सीजन सेंसर के एक श्रेणी से दूसरी श्रेणी में वर्गीकरण की व्याख्या के कारण है, जिसके चलते शुल्क और ब्याज मिलाकर 140.86 करोड़ रुपये की मांग की गई है।

भारत सहित दुनिया में टैरिफ लागू

ट्रंप बोले- उन देशों से अरबों डॉलर का शुल्क आएगा, जिन्होंने हमारा फायदा उठाया

न्यूयॉर्क/वाशिंगटन, एजेंसी

अमेरिका के भारतीय आयातों पर घोषित शुरुआती 25 प्रतिशत शुल्क गुरुवार से लागू हो गए। अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप ने कहा कि अब उन देशों से अरबों डॉलर का शुल्क उनके देश में आना शुरू होगा, जिन्होंने अमेरिका का फायदा उठाया है। ट्रंप ने ट्रुथ सोशल पर पोस्ट किया, आधी रात हो गई है। अरबों डॉलर के शुल्क अब संयुक्त राज्य अमेरिका में आ रहे हैं।

ट्रंप द्वारा पिछले हफ्ते कई देशों पर घोषित जवाबी शुल्क अमेरिकी समय के अनुसार 7 अगस्त को रात 12 बजे से लागू हो गए। ट्रंप ने इससे पहले कहा था, जवाबी शुल्क आज आधी रात से लागू होंगे। अरबों डॉलर, जिनमें से ज्यादातर उन देशों से आएंगे, जिन्होंने कई वर्षों तक अमेरिका का फायदा उठाया है। ट्रंप ने बुधवार को रूस से तेल खरीद जारी रखने पर भारत से आयातित वस्तुओं पर अतिरिक्त 25 प्रतिशत शुल्क लगाने के कार्यकारी आदेश पर हस्ताक्षर किए थे। इसके साथ ही भारतीय उत्पादों पर अमेरिका में लगने वाला शुल्क अब बढ़कर 50 प्रतिशत हो गया है। इस कदम से कपड़ा, समुद्री उत्पाद और चमड़ा निर्यात जैसे क्षेत्रों पर बुरा असर पड़ने की आशंका है। भारतीय विदेश मंत्रालय ने कहा कि यह बेहद दुर्भाग्यपूर्ण है कि अमेरिका ने भारत पर अतिरिक्त शुल्क लगाने का फैसला किया है। साथ ही, भारत अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा के लिए सभी जरूरी कदम उठाएगा। ट्रंप ने पिछले सप्ताह ही 25 प्रतिशत शुल्क लगाने की घोषणा की थी।

● भारत पर अतिरिक्त शुल्क लगाने के फैसले को भारतीय विदेश मंत्रालय ने बताया था दुर्भाग्यपूर्ण

कंप्यूटर चिप्स पर 100% शुल्क की योजना

वाशिंगटन। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा कि वह कंप्यूटर चिप्स पर 100 प्रतिशत शुल्क लगाएंगे। अगर ऐसा हुआ तो अमेरिका में डिजिटल युग को गति देने वाले प्रोसेसर पर निर्भर इलेक्ट्रॉनिक्स, ऑटोमोबाइल, घरेलू उपकरणों और दूसरे जरूरी उत्पादों की कीमतें बढ़ सकती हैं। ट्रंप ने एप्पल के सीईओ टिम कुक के साथ बैठक के दौरान कहा, हम चिप्स और सेमीकंडक्टर पर 100 प्रतिशत शुल्क लगाएंगे। लेकिन अगर आप अमेरिका में निर्माण कर रहे हैं, तो कोई शुल्क नहीं लगेगा। यह घोषणा ट्रंप के इलेक्ट्रॉनिक्स उत्पादों को शुल्क से छूट देने के तीन महीने से भी अधिक समय बाद आई है। अमेरिका में चिप्स बनाने वाली कंपनियों को आयात कर से छूट दी जाएगी।

भारतीय दवा पर शुल्क से अमेरिकी उपभोक्ताओं पर पड़ेगा बोझ

नई दिल्ली। भारतीय दवा निर्यात को बढ़े हुए शुल्क से अस्थायी राहत देने का अमेरिका का फैसला अमेरिकी आबादी के लिए सस्ती दवाइयां सुनिश्चित करने में भारत की महत्वपूर्ण भूमिका को दर्शाता है। औषधि निर्यात संवर्धन परिषद (फार्मेक्सिल) ने गुरुवार को यह बात कही। अमेरिका ने छह अगस्त को सभी भारतीय आयात पर मौजूदा 25 प्रतिशत शुल्क के अतिरिक्त 25 प्रतिशत शुल्क लगाने की घोषणा की। ऐसे में 27 अगस्त से कुल शुल्क 50 प्रतिशत हो जाएगा। भारत, अमेरिका में इस्तेमाल होने वाली 40 प्रतिशत से ज्यादा जेनेरिक दवाओं की आपूर्ति करता है। इसमें पुरानी बीमारियों, कैंसर और संक्रामक रोगों के उपचार की दवाइयां शामिल हैं। फार्मेक्सिल के चेयरमैन नमित जोशी ने कहा, भारतीय दवा कंपनियों पर शुल्क के प्रतिकूल नतीजे होंगे और अंत में अमेरिकी उपभोक्ताओं पर बोझ डालेंगे। भारतीय कंपनियां कम लागत वाली जेनेरिक दवाइयां बनाती हैं, उच्च मार्जिन वाले उत्पाद नहीं। इसलिए किसी भी शुल्क का भार सीधे अमेरिकी उपभोक्ताओं पर पड़ेगा। उन्हें भारत की दवा क्षमता हासिल करने में कम से कम तीन से पांच साल लगेंगे, और इस स्तर की क्षमता, लागत दक्षता और प्रतिभा हासिल करने में कई चुनौतियां होंगी।

ताप विद्युत संयंत्र बाजार में बेच सकेंगे बिजली

कोलकाता। कोल इंडिया लिमिटेड (सीआईएल) ने अपने कोयले का उपयोग कर रहे ताप विद्युत संयंत्रों को 1 अगस्त से बाजार में जरूरत से अधिक बिजली को बेचने की मंजूरी दी है। बिजली क्षेत्र में कोयले की मांग बढ़ाने और बिजली को अधिक किफायती बनाने के उद्देश्य से यह कदम उठाया गया है। अबतक उन्हीं बिजली उत्पादकों को कोल इंडिया से लिए कोयले पर आधारित बिजली की आपूर्ति की अनुमति थी जिनके पास दीर्घ या मध्यम अवधि के बिजली खरीद समझौते थे। लेकिन अब सभी उत्पादकों को इसकी अनुमति होगी।

रिलायंस ने वृद्धि को तैयार किए चार इंजन

नई दिल्ली, एजेंसी

रिलायंस इंडस्ट्रीज के चेयरमैन मुकेश अंबानी ने कहा है कि उन्होंने समूह के विस्तार के अगले चरण को गति देने के लिए खुदरा, डिजिटल सेवाओं, मीडिया और मनोरंजन और नई ऊर्जा के चार उच्च-शक्ति वाले विकास इंजन तैयार किए हैं।

उन्होंने कंपनी की सालाना रिपोर्ट में शेयरधारकों को दिए एक संदेश में कहा कि इसके साथ ही, रिलायंस खुद को एक नए युग के डीप-टेक (अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी) उद्यम के रूप में ढाल रही है। पारंपरिक रूप से तेल और पेट्रोल-रसायन (ओ टू सी) को विकास का प्रमुख आधार मानने वाली इस कंपनी ने पिछले कुछ वर्षों में खुदरा, दूरसंचार और डिजिटल सेवाओं में कदम रखा है। इसके साथ समाचार और मनोरंजन चैनल के इर्द-गिर्द एक मीडिया साम्राज्य का निर्माण किया है और स्वच्छ ऊर्जा क्षेत्र में कदम रखने के लिए बड़े कारखानों की नींव रखी है।

अंबानी ने कहा, इन चारों में से प्रत्येक मंच प्रौद्योगिकी और नवान्मेष-प्रधान है और भारतीय उपभोक्ताओं और वैश्विक बाजार को व्यापक मूल्य प्रदान करते हुए उद्योगों में क्रांति लाने की स्थिति में है। अपने मुख्य कारोबार तेल-रसायन (ओ2सी) व्यवसाय के बारे में उन्होंने कहा कि ये भारत की बढ़ती ऊर्जा और सामग्री मांग को पूरा करते हुए बढ़ते रहेंगे। इसमें एक ही स्थान पर दुनिया का सबसे बड़ी तेल रिफाइनरी परिसर और पेट्रोरसायन संयंत्र, और तेल एवं गैस उत्पादन कारोबार शामिल हैं। हम केवल कंपनियों का विस्तार नहीं कर रहे हैं, बल्कि हम ऐसे मंच बना रहे हैं जो लोगों को सशक्त बनाएं, असमानता कम करें, स्थिरता को बढ़ावा दें और वैश्विक अर्थव्यवस्था में भारत की स्थिति को ऊंचा करे।

● मुकेश अंबानी ने कंपनी की सालाना रिपोर्ट में शेयरधारकों को दिए संदेश

ऑनलाइन कारोबार ने पकड़ी रफ्तार पलायन को मजबूर छोटे व्यापारी

कार्यालय संवाददाता, बरेली

अमृत विचार। करीब एक दशक पहले ऑनलाइन बाजार की आमद हुई लेकिन एक से दो वर्ष तक बाजार पर इसका खासा असर देखने को नहीं मिला, लेकिन तमाम ऑफर और सहूलियत कंपनियों ने जब शामिल कीं तो बीते पांच साल में ऑनलाइन कारोबार ने ऐसी तेज रफ्तार पकड़ी है कि स्थानीय छोटे कारोबारियों की कमर ही टूट गई है।

बड़े और मध्यम कारोबारी तो इस प्रतिस्पर्धा में खुद को संभाले हुए हैं, लेकिन निम्न और लघु व्यापारियों का शहर के पुराने बाजारों से मोहभंग हो गया है। कई व्यापारी नये सिरे से कारोबार स्थापित करने के लिए छोटे कस्बों की ओर पलायन कर गए हैं।

व्यापारियों का तर्क है कि दवा, कपड़ा, किराना, आईटी समेत अन्य कारोबार से जुड़े कारोबारी ऑनलाइन कारोबार से पस्त हैं। ऑनलाइन ट्रेडिंग से छोटे और मध्यम व्यापारियों के सामने अस्तित्व का सवाल पैदा हो गया। अमेजॉन, फ्लिपकार्ट, स्नैपडील, ब्लिंकिट, जैपटो, बिग बास्केट जैसी अनेकों ऑनलाइन कंपनियों ने शहर से लेकर गांव-देहात के तक के बाजार में अपने पैर पसार लिए हैं। इनका उद्देश्य ही फुटकर बाजार पर कब्जा जमाना है। इनसे प्रतिस्पर्धा करना छोटे और मध्यम व्यापारियों के बस में नहीं है, इसलिए अब तमाम छोटे व्यापारी कारोबार से विमुख हो रहे हैं, जिससे छोटे और मध्यम वर्ग के कारोबार प्रभावित हो रहे हैं।

दुकान से खरीदारी करती युवतियां।

● बड़े व्यापारियों को झटका, छोटे कारोबारियों का हो रहा मोहभंग
● पांच साल में तेजी से बढ़ा ऑनलाइन कारोबार

35,000
जीएसटी में पंजीकृत व्यापारी

8,000
पंजीकृत मध्यम वर्गीय व्यापारी

25,000
लघु और 700 बड़े व्यापारी

40,000
करोड़ का हर साल हो रहा कारोबार

ऑनलाइन ट्रेडिंग ने दवा कारोबारियों की कमर तोड़ दी है। लोग दवाइयां ऑनलाइन खरीदते हैं। केवल एक-दो गोली लेने के लिए ही मेडिकल स्टोर पर आते हैं। इससे दुकानदारी बहुत प्रभावित हुई है।
– **विवेक अग्रवाल बॉबी**, दवा कारोबारी

ऑनलाइन कारोबार का प्रभाव मोबाइल व कंप्यूटर के ट्रेड पर हुआ है। ग्राहक मोबाइल के दाम चेक कर मोल-भाव करता है।
– **राजीव अग्रवाल**, मोबाइल कारोबारी

ऑनलाइन कंपनियां अपने मुनाफे को निजी विकास पर खर्च करती हैं जबकि व्यापारी सामाजिक, धार्मिक, सामुदायिक व राष्ट्रीय हितों के लिए भी खर्च करता है।
– **राजेश जसोरिया**, महानगर महामंत्री उत्तर प्रदेश उद्योग व्यापार मंडल

साल दर साल लग रही पांच हजार करोड़ की चपत

उत्तर प्रदेश उद्योग व्यापार मंडल के महानगर महामंत्री राजेश जसोरिया के अनुसार, सर्राफा और वाहन समेत कुछ अन्य कारोबारों से ऑनलाइन कंपनियां अभी दूर हैं। बावजूद इसके बीते पांच सालों में 20 फीसदी मार्केट शेयर इन ऑनलाइन कंपनियों के पास जा रहा है। आकलन के अनुसार दवा, किराना, कपड़ा, मोबाइल और इलेक्ट्रॉनिक्स समेत अन्य वस्तुओं के ऑनलाइन कारोबार से बरेली जनपद का 5000 करोड़ रुपये का सालाना कारोबार प्रभावित हो रहा है।

राष्ट्रीय

टैरिफ पर भाजपा-विपक्षी दलों में वाकयुद्ध शुरू

कांग्रेस ने केंद्र सरकार की विदेश नीति को लेकर उठाए सवाल, भाजपा बोली- भारत झुकेगा नहीं

नई दिल्ली, एजेंसी

कांग्रेस समेत कई विपक्षी दलों ने अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप द्वारा भारत पर 50 प्रतिशत का शुल्क (टैरिफ) लगाने को लेकर गुरुवार को मोदी सरकार की निदेश नीति पर सवाल खड़े किए और कहा कि इससे निपटने के लिए कदम उठाने चाहिए। वहीं, भाजपा ने कहा कि भारत झुकने वाला नहीं है तथा किसानों के हितों से समझौता नहीं होगा।

25 प्रतिशत शुल्क के अतिरिक्त ट्रंप ने बुधवार को भारत पर रूसी तेल की खरीद पर 25 प्रतिशत शुल्क और लगाया, जिससे भारत पर शुल्क 50 प्रतिशत हो गया है और यह अमेरिका द्वारा किसी भी देश पर लगाए गए सबसे अधिक शुल्कों में से है।

कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने एक्स पर कहा, राष्ट्रीय हित सर्वोपरि है। सातवें बेड़े की धमकियों से लेकर परमाणु परीक्षणों के प्रतिबंधों तक, हमने अमेरिका के साथ अपने संबंधों को आत्मसम्मान और गरिमा के साथ निभाया है। खरगे के अनुसार ट्रंप ने 50 प्रतिशत शुल्क लगाने की बात ऐसे समय कही है जब भारत की कूटनीति बहुत बुरी तरह लड़खड़ा रही है। खरगे ने कहा, प्रधानमंत्री अमेरिका के साथ व्यापार समझौते पर बातचीत करने में विफल रहे। आपके पास छह महीने से ज्यादा का समय था। अब ट्रंप हमें डरा-धमका रहे हैं और मजबूर कर रहे हैं, लेकिन आप चुप हैं।

टीएमसी सांसद सुष्मिता देव ने कहा कि यह देश की अर्थव्यवस्था के लिए चिंताजनक स्थिति है। शिवसेना (उबाठा) की सांसद प्रियंका चतुर्वेदी और झारखंड मुक्ति मोर्चा की सांसद महुआ मांझी ने कहा, इससे महंगाई बढ़ेगी, नौकरियां जाएंगी।

राहुल देशद्रोह कर रहे हैं : निशिकांत दुबे

भाजपा सांसद निशिकांत दुबे ने लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी पर निशाना साधते हुए कहा, राहुल देशद्रोह कर रहे हैं। जब पूरे देश को एकजुट होना चाहिए तो वह सांठगांठ वाले पूंजीवाद का आरोप लगाते हैं। जबकि वह स्वयं ऐसा करते हैं। भारत के प्रधानमंत्री मजबूत हैं। भाजपा नेता दिनेश शर्मा ने कहा, भारत सभी देशों का सम्मान करता है और सबसे अच्छे संबंध चाहता है। कोई देश धमकी के आधार पर भारत को झुका नहीं सकता। यह स्वाभिमानी भारत है। मोदी लौहपुरुष के समान निर्णय लेने वाले नेता हैं। यह देश किसी को झुकाता नहीं है और झुकता भी नहीं है। उन्होंने कहा कि भारत अपने कृषि और डेयरी हितों को नजरअंदाज नहीं कर सकता।

राहुल का चुनाव फर्जीवाड़े का आरोप एक सुनियोजित धोखा : भाजपा

नई दिल्ली। भाजपा ने गुरुवार को निर्वाचन आयोग के खिलाफ चुनाव धोखाधड़ी के राहुल गांधी के आरोप को सुनियोजित धोखाधड़ी करार दिया और आरोप लगाया कि कांग्रेस भारत के लोकतंत्र तथा संविधान के खिलाफ बड़ी साजिश के तहत संवैधानिक संस्थाओं पर व्यवस्थित हमला कर रही है। सत्तारूढ़ पार्टी ने कहा कि गांधी भाजपा की चुनावी जीत को धोखाधड़ी बताकर देश के लोगों के निर्णय का अपमान कर रहे हैं। मतदाता इस तरह के गैर-जिम्मेदार और बेशर्मी भरे चरित्र एवं आचरण के लिए कांग्रेस को लगातार खारिज करते रहेंगे। गांधी ने हताशा और गुस्से में निर्वाचन आयोग पर आरोप लगाए हैं, क्योंकि लोग कांग्रेस को अपना जनादेश नहीं दे रहे हैं। पार्टी ने चुनाव परिणामों पर दोहरे मापदंड अपनाने को लेकर कांग्रेस नेता की आलोचना की और उनसे कहा कि उन्हें यह बात समझनी चाहिए कि उनके परिवार की जीत लोकतंत्र की परिभाषा नहीं है। कांग्रेस नेता की टिप्पणी की निंदा करते हुए भाजपा सांसद एवं पूर्व केंद्रीय मंत्री रविशंकर प्रसाद ने कहा, नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने गैर-जिम्मेदाराना और बेशर्मी से भरी टिप्पणी की है। भाजपा नेता ने आरोप लगाया कि गांधी ने निर्वाचन आयोग को धोखेबाज कहा है और बेशर्मी की सारी हदें पार कर दी हैं। संसद भवन परिसर में प्रसाद ने कहा, नरेन्द्र मोदी चुनाव जीत रहे हैं और आप (राहुल गांधी) उसे भी धोखाधड़ी कह रहे हैं। आप देश की जनता का अपमान कर रहे हैं, जिसने मोदी जी के काम, ईमानदारी और उनके नेतृत्व में देश की प्रगति के लिए उन्हें वोट दिया था।

भारी हंगामे के कारण नहीं चले संसद के दोनों सदन

नई दिल्ली, एजेंसी

विपक्षी दलों के सदस्यों ने बिहार में मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) के मुद्दे पर गुरुवार को भी लोकसभा में हंगामा किया, जिससे सदन की कार्यवाही दो बार के स्थगन के बाद दिन भर के लिए स्थगित कर दी गई। विपक्षी दलों के हंगामे के बीच सदन में मणिपुर माल एवं सेवा कर (संशोधन) विधेयक, 2025 और मणिपुर विनियोग विधेयक पारित किया गया।

सदन की कार्यवाही पूर्वाह्न 11 बजे आरंभ होने पर लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने जैसे ही प्रश्नकाल शुरू कराया, विपक्षी दलों के सदस्य आसन के पास पहुंचकर एसआईआर वापस लो के नारे लगाने लगे। सदन में हंगामे के बीच ही आवास एवं शहरी कार्य मंत्री मनोहर लाल खट्टर ने प्रश्नों के उत्तर दिए। बिरला ने विपक्षी सदस्यों से सदन की कार्यवाही चलने देने की अपील की। शोर-शराबे के बीच वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने मणिपुर माल एवं सेवा कर (संशोधन) विधेयक, 2025 पेश किया। उन्होंने मणिपुर माल एवं सेवा कर (संशोधन) अध्यादेश, 2025 (2025 का संख्यांक 1) को लागू करने के कारणों को दर्शाने वाला विवरण भी प्रस्तुत किया।

लोकसभा में मणिपुर माल एवं सेवा कर (संशोधन) विधेयक पेश करतीं वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण।

रास में नहीं चला शून्यकाल और प्रश्नकाल

एसआईआर के मुद्दे पर विपक्ष के हंगामे से राज्यसभा की भी कार्यवाही एक बार के स्थगन के बाद दिन भर के लिए स्थगित कर दी गई। हंगामे से सदन में शून्यकाल और प्रश्नकाल नहीं चले। हालांकि विपक्ष के हंगामे के बीच ही पोत परिवहन विधेयक, 2025 को ध्वनिमत से मंजूरी दे दी गई। पूर्वाह्न 11 बजे उच्च सदन की बैठक शुरू होने पर उपसभापति हरिवंश ने कहा कि चर्चा के लिए 25 नोटिस मिले हैं। ये व्यवस्था के अनुरूप नहीं है, इन्हें खारिज कर दिया गया है। इस पर विपक्षी सदस्य हंगामा करने लगे। कुछ सदस्यों ने अपने स्थानों से आगे आकर नारेबाजी शुरू कर दी।

जीएसटी धोखाधड़ी में ईडी का तीन राज्यों में छापा

नई दिल्ली, एजेंसी

● झारखंड, पश्चिम बंगाल और महाराष्ट्र में 12 स्थानों पर ली गई तलाशी

प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने 750 करोड़ रुपये के फर्जी वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) चालान बनाने के मामले में झारखंड, पश्चिम बंगाल और महाराष्ट्र में फिर छापे मारे। धन शोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए) के तहत तीनों राज्यों में 12 परिसरों पर छापेमारी की गई। यह मामला झारखंड में मुखौटा कंपनियों और अवैध वित्तीय लेनदेन के माध्यम से 750 करोड़ रुपये के फर्जी इनपुट टैक्स क्रेडिट (आईटीसी) बनाने से जुड़ा है।

सूत्रों के अनुसार, इस मामले की जांच की शुरुआत इसके मुख्य साजिशकर्ता शिव कुमार देवड़ा की गिरफ्तारी से हुई। उसे मई 2025 में गिरफ्तार किया गया था और पिछले महीने उसके खिलाफ आरोपपत्र दाखिल किया गया। वर्तमान में ईडी की ओर से की जा रही कार्रवाई विश्वसनीय साक्ष्यों के आधार पर हो रही है, जो कई व्यक्तियों और कंपनियों की अपराध से अर्जित आय के धनशोधन में संलिप्तता को दर्शाती है। इस मामले को लेकर ईडी ने मई में पहली बार कार्रवाई की थी।

पटना में एसटीईटी अभ्यर्थियों पर लाठीचार्ज

पटना, एजेंसी

बिहार की राजधानी पटना के डाक बंगला चौराहे पर गुरुवार को उस समय अफरा-तफरी मच गई, जब पुलिस ने शिक्षक भर्ती परीक्षा (टीआरई-5) से पहले माध्यमिक शिक्षक पात्रता परीक्षा (एसटीईटी) आयोजित करने की मांग कर रहे अभ्यर्थियों पर लाठीचार्ज कर दिया।

एसपी, पटना (मध्य), दीक्षा ने बताया, प्रदर्शनकारी डाक बंगला चौराहे के पास जमा हो गए और यातायात को बाधित कर दिया। प्रदर्शनकारियों ने अवरोधकों को लांघने की कोशिश की। सुरक्षाकर्मियों के बार-बार अनुरोध के बावजूद, उन्होंने सड़कें खाली करने से इनकार कर दिया। प्रदर्शनकारियों को तितर-बितर करने के लिए हल्का बल प्रयोग किया गया।

प्रदर्शनकारियों ने दावा किया कि लाठीचार्ज में कई लोग घायल हो गए, जिसे अधिकारियों ने नकार दिया। राहुल कुमार नाम के प्रदर्शनकारी ने कहा, हमने बस यही मांग की थी कि बिहार लोक सेवा आयोग की टीआरई-5 से पहले एसटीईटी आयोजित हो। परीक्षा कैलेंडर के अनुसार, एसटीईटी साल में दो बार होनी थी। अभी तक एक भी दौर नहीं हुआ है, जिससे बीएड पूरा कर चुके उम्मीदवार प्रभावित हैं। अगर टीआरई-5 एसटीईटी से पहले होता है, तो अभ्यर्थी परीक्षा में बैठने से वंचित रह जाएंगे।

प्रदर्शन कर रहे अभ्यर्थियों को रोकने की कोशिश करते सुरक्षाकर्मी।

फांसी घर विवाद
विशेषाधिकार समिति से कराई जाएगी जांच

नई दिल्ली। दिल्ली विधानसभा परिसर में कोई फांसी घर नहीं होने का दावा करते हुए विस अध्यक्ष विजेंद्र गुप्ता ने गुरुवार को कहा कि मामले को जांच के लिए विशेषाधिकार समिति को भेजा जाएगा, जो पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल सहित अन्य को तलब करेगी। बुधवार कोगुप्ता ने कहा था कि 2022 में जिस कक्ष का जीर्णोद्धार हुआ और केजरीवाल ने उद्घाटन किया, वह रिकार्ड के अनुसार वास्तव में टिफिन रूम था। उन्होंने विस परिसर का 1912 का नक्शा दिखाते हुए कहा था कि ऐसा कोई दस्तावेज या साक्ष्य नहीं है जो ये दर्शाते हो कि इस स्थान का प्रयोग फांसी देने के लिए हुआ था।

कार्ति चिदंबरम के एक करोड़ रुपये लौटाएं : सुप्रीम कोर्ट

नई दिल्ली, एजेंसी

सुप्रीम कोर्ट ने विदेश यात्रा की पूर्व शर्त के तौर पर लोकसभा सदस्य कार्ति पी चिदंबरम द्वारा 2022 में शीर्ष अदालत में जमा कराए गए एक करोड़ रुपये जारी किए जाने का गुरुवार को आदेश दिया।

न्यायमूर्ति सूर्यकांत, उज्जल भुइयां और एन कोटिश्वर सिंह की पीठ ने चिदंबरम के 2023 के आवेदन को स्वीकार करते हुए कहा कि विदेश यात्रा के बाद वह भारत लौट आए और उन्होंने पासपोर्ट जांच अधिकारी के पास जमा करा दिया। अदालत ने आदेश दिया, याचिकाकर्ता द्वारा जमा कराई एक करोड़ की राशि और उस पर अर्जित ब्याज को एक सप्ताह में जारी कर दें। पूर्व वित्त मंत्री पी चिदंबरम के पुत्र कार्ति एयरसेल-मैक्सिस व आईएनएक्स मीडिया सहित कई मामलों में आरोपी हैं। उन्हें दोनों मामलों में जमानत मिल गई थी। शीर्ष अदालत ने 2022 में उन्हें विदेश यात्रा के लिए पूर्व शर्त के रूप में शीर्ष अदालत की रजिस्ट्री में एक करोड़ रुपये जमा करने का निर्देश दिया था।

● विदेश यात्रा की पूर्व शर्त के तौर पर जमा कराई गई थी रकम

भारत रूसी तेल खरीद के मामले में चीन के बहुत करीब, और भी प्रतिबंध लगाएंगे

ट्रंप ने दी एक और धमकी, चीन पर भारत की तरह टैरिफ लगाने के सवाल को टाला

न्यूयॉर्क/ वाशिंगटन, एजेंसी

अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा कि भारत, रूस से तेल खरीद के मामले में चीन के बहुत करीब है और उसे 50 प्रतिशत शुल्क देना होगा। ट्रंप ने यह भी संकेत दिया कि आगे अतिरिक्त प्रतिबंध भी देखने को मिलेंगे। ट्रंप ने इस सवाल का सीधा जवाब नहीं दिया कि क्या चीन पर भी भारत की तरह टैरिफ लगाया जाएगा।

ट्रंप ने बुधवार को ओवल कार्यालय में कहा, जैसा कि आप जानते हैं कि हमने तेल को लेकर भारत पर 50 प्रतिशत शुल्क लगाया है। वे दूसरे सबसे बड़े खरीदार हैं और रूस से तेल खरीद के मामले में चीन के बहुत करीब हैं। ट्रंप ने रूस से तेल खरीद जारी रखने पर भारत से आयातित वस्तुओं पर अतिरिक्त 25 प्रतिशत शुल्क लगाने के शासकीय आदेश पर बुधवार को हस्ताक्षर किए थे। इसके साथ ही भारतीय उत्पादों पर अमेरिका में लगने वाला शुल्क अब बढ़कर 50 प्रतिशत हो गया है, जो कि किसी भी देश पर सबसे अधिक है।

ट्रंप प्रशासन ने पिछले सप्ताह ही भारत पर 25 प्रतिशत शुल्क लगाने की घोषणा की थी जो सात अगस्त से प्रभावी हो गया है। अतिरिक्त 25 प्रतिशत शुल्क 21 दिनों बाद यानी 27 अगस्त से प्रभावी होगा। 'व्हाइट हाउस' के एक कार्यक्रम में ट्रंप के साथ एप्पल के सीईओ टिम कुक, उपराष्ट्रपति जे डी वेंस, वित्त मंत्री स्कॉट बेसेंट और वाणिज्य मंत्री हॉवर्ड लटनिक भी मौजूद थे। इस दौरान एप्पल ने घोषणा की कि वह अगले चार वर्षों में अमेरिका में 600 अरब डॉलर का निवेश करेगी।

कार्यक्रम के दौरान ट्रंप से भारत पर लगाए गए अतिरिक्त शुल्क के बारे में कई सवाल पूछे गए। जब पूछा गया कि अगर वह यूक्रेन और रूस के साथ कोई समझौता कर लेते हैं, तो क्या वह भारत पर अतिरिक्त शुल्क हटा लेंगे तो उन्होंने कहा, हम बाद में इस पर फैसला करेंगे। इसके बाद ट्रंप को बताया गया कि भारतीय अधिकारियों का कहना है कि चीन जैसे अन्य देश भी रूसी तेल खरीद रहे हैं, इस पर उन्होंने कहा, ठीक है। जब उनसे पूछा गया कि उन्होंने केवल भारत पर ही अतिरिक्त शुल्क क्यों लगाया तो ट्रंप ने कहा, अभी केवल आठ घंटे ही हुए हैं, तो देखते हैं आगे क्या होता है।

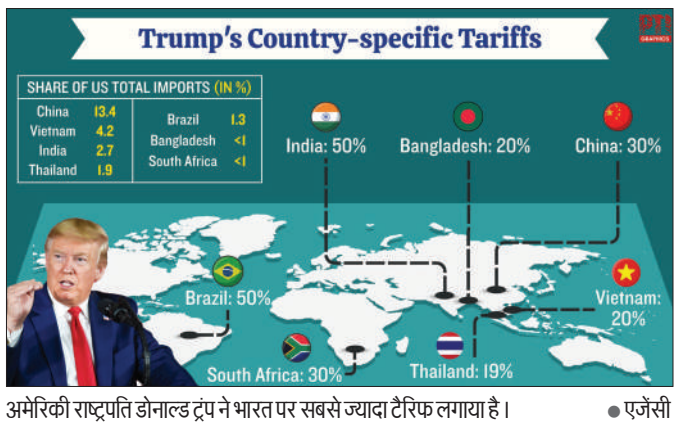

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने भारत पर सबसे ज्यादा टैरिफ लगाया है। ● एजेंसी

विदेश मंत्रालय ने कहा- 50% टैरिफ अतार्किक अमेरिका से वार्ता जारी

मुंबई। विदेश मंत्रालय में सचिव, आर्थिक संबंध दम्मू रवि ने बृहस्पतिवार को कहा कि अमेरिका को भारतीय निर्यात पर 50 प्रतिशत शुल्क लगाने के ट्रंप प्रशासन के एकतरफा कदम के पीछे कोई तर्क या कारण नहीं है। रवि ने वाशिंगटन द्वारा भारतीय वस्तुओं पर शुल्क दोगुना करने के कुछ घंटों बाद संवाददाताओं को बताया कि इस कदम के बाद भी अमेरिका और भारत के बीच बातचीत जारी है। रवि ने कहा, यह एकतरफा निर्णय है। मुझे नहीं लगता कि जिस तरह से यह किया गया है, उसमें कोई तर्क या कारण है। यहां कार्यक्रम से इतर उन्होंने कहा, शायद, यह एक ऐसा दौर है जिससे हमें उबरना होगा। बातचीत अभी जारी है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने बुधवार को नयी दिल्ली द्वारा रूसी तेल आयात से नाराज होकर अतिरिक्त शुल्क लगा दिया। इस कदम से कपड़ा, समुद्री और चमड़ा निर्यात जैसे विभिन्न क्षेत्रों पर असर पड़ने की आशंका है।

अमर होने की चाहत ने ईजाद की तकनीक

क्रायोजेनिक प्रिजर्वेशन

क्रायोजेनिक प्रिजर्वेशन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें मृत शरीर या सहायक अंगों को लंबे समय तक संरक्षित करने के लिए अत्यंत कम तापमान आमतौर पर -196 डिग्री सेल्सियस पर जमाया जाता है जो तरल नाइट्रोजन के तापमान के बराबर होता है। इसका मुख्य उद्देश्य शरीर या जैविक सामग्री को नुकसान होने दिए बगैर भविष्य के लिए संरक्षित करना होता है। यह तकनीक दरअसल कुछ ऐसे लोगों की अमर होने की चाहत की वजह से ईजाद की गई जिनका मानना था कि भविष्य में चिकित्सा विज्ञान जरूर इतना उन्नत और समृद्ध होगा कि उनकी मृत देह को दोबारा जीवित किया जा सकेगा।

कब और कहां शुरुआत

- अमेरिकी भौतिक विज्ञानी रॉबर्ट एटिंगर ने वर्ष 1964 में अपनी किताब द प्रॉस्पेक्ट ऑफ इमोरटलिटी में इसका विचार दिया।
- 1967 में अमेरिका में डॉ. जेम्स बेडफोर्ड को पहली बार संरक्षित किया गया, उनका शरीर आज भी फ्रीज अवस्था में हैं।

कैसे काम करती है तकनीक

- मृत्यु के बाद तुरंत बाद प्रक्रिया शुरू होती है और शरीर को ठंडा कर सर्कुलेशन सपोर्ट सिस्टम से ऑक्सीजन पहुंचाई जाती है।
- खून को क्रायोप्रोटेक्टेंट सॉल्यूशन से बदलते हैं ताकि क्रिस्टल न बनें, शरीर को 196C पर तरल नाइट्रोजन टैंक में रखा जाता है।

कई देशों में प्रिजर्वेशन

- अमेरिका, रूस, चीन, स्विट्जरलैंड, ऑस्ट्रेलिया, यूके, जर्मनी, स्पेन, यूक्रेन, कनाडा समेत करीब 10 देशों में लोगों ने अपनी बॉडी प्रिजर्व कराई है।
- अमेरिका में एल्कर लाइफ एक्सटेंशन फाउंडेशन, क्रायोनिक इंस्टीट्यूट, रूस में क्रायोरस, चीन में यिनफेंग नाम की कंपनी ये सुविधा दे रही है।

अब तक 600 शरीर प्रिजर्व

- वैश्विक आंकड़ों के मुताबिक दुनिया के करीब 600 लोगों ने वर्ष 2025 तक अपना पूरा शरीर क्रायोजेनिक तकनीक से प्रिजर्व कराया है।
- अनुमानित तौर पर अपने दिमाग का प्रिजर्वेशन कराने वालों की संख्या करीब 400 है, भविष्य के लिए बुकिंग कराने वाले 5,000 से ज्यादा हैं।

प्रमुख लोग

- अमेरिका के प्रोफेसर जेम्स बेडफोर्ड अपना शरीर प्रिजर्व कराने वाले पहले व्यक्ति थे।
- अमेरिकी बेसबॉल खिलाड़ी टेड विलियम्स ने भी शरीर प्रिजर्व कराया जो बहुत अमीर थे।
- अमेरिका के टीवी प्रोड्यूसर डिक क्लेयर ऐसे एक और व्यक्ति हैं, जो काफी अमीर थे।
- ज्यादातर लोगों ने अपना नाम सार्वजनिक न करने की शर्त पर शरीर संरक्षित कराया है।

कितना खर्च

- पूरे शरीर के क्रायोनिक प्रिजर्वेशन पर लगभग 150,000 से 250,000 डॉलर।
- दिमाग और सिर के प्रिजर्वेशन पर 70,000 से लेकर 100,000 डॉलर तक।

विशेषज्ञों की राय

- तकनीक का समर्थन करने वाले कहते हैं कि यह अभी विकसित हो रही तकनीक है, यदि भविष्य में कोशिकीय मरम्मत और नैनोटेक्नोलॉजी में प्रगति होती है तो सिद्धांततः संभव है।
- अधिकतर वैज्ञानिक इसे अव्यावहारिक मानते हैं क्योंकि मृत्यु होते ही मस्तिष्क में अपूरणीय क्षति हो जाती है। पुनर्जीवन की कोई सिद्ध तकनीक नहीं है। इसे विज्ञान कथा कहा गया है।

वर्ल्ड ब्रीफ

जनरल मुनीर फिर जा सकते हैं अमेरिका

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के सेना प्रमुख आसिम मुनीर इस सप्ताह शीर्ष अमेरिकी अधिकारियों के साथ विचार-विमर्श के लिए अमेरिका का दौरा कर सकते हैं। भारत के साथ पाकिस्तान के चार दिन तक चले संघर्ष के बाद यह मुनीर की अमेरिका की दूसरी यात्रा होगी। एक मीडिया रिपोर्ट में बृहस्पतिवार को यह जानकारी दी गई। जून में मुनीर अमेरिका गए थे जहां उन्होंने राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के साथ दोपहर का भोजन किया था। इस मुलाकात के बाद ट्रंप ने तेल समझौते सहित विभिन्न क्षेत्रों में अमेरिका-पाकिस्तान सहयोग बढ़ाने की घोषणा की थी।

अमेरिका से दोबारा वार्ता पर फैसला नहीं: ईरान

तेहरान। ईरानी उप विदेश मंत्री अब्बास अराघची ने कहा है कि अमेरिका से परमाणु वार्ता फिर शुरू करने पर कोई अंतिम निर्णय नहीं हुआ है। अराघची ने एक साक्षात्कार में कहा, अमेरिका से बातचीत को लेकर कोई आखिरी फैसला अभी नहीं हुआ है। उनको अमेरिका से संदेश तो मिले हैं पर बातचीत होगी या नहीं, यह इस पर निर्भर करता है कि ईरानी हितों का सम्मान होता है या नहीं। ईरान और अमेरिका के बीच ओमान की मध्यस्थता से पांच दौर की बातचीत हुई है और इसका छठा दौर 15 जून को होने वाला था लेकिन उसका इजराइल से तनाव गहराने से यह वार्ता नहीं हो पाई।

बलूचिस्तान विस्फोट में मेजर व तीन सैनिक मरे

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के उपद्रवग्रस्त बलूचिस्तान के मस्तुंग ज़िले में सेना की एक गाड़ी को बम से निशाना बना गया। हमले में तीन सैनिक मारे गए और सेना की जवाबी कार्यवाही में चार आतंकवादी ढेर हो गये। पाकिस्तानी सेना ने बुधवार देर रात बताया कि मारे गए जवानों में सेना का मेजर रैंक का अधिकारी भी शामिल है। पाकिस्तान की इंटर-सर्विस पब्लिक रिलेशंस (आईएसपीआर) ने एक बयान में कहा कि बुधवार देर रात सुरक्षा बलों के एक वाहन को निशाना बनाया गया। इस हमले में एक मेजर, एक नायक और एक लांसनायक मारे गए।

कुलगाम में इस साल की सबसे लंबी मुठभेड़, 7वें दिन भी गोलीबारी जारी

मारे जा चुके हैं दो आतंकी, अब तक सात सुरक्षाकर्मी भी घायल

श्रीनगर, एजेंसी

जम्मू-कश्मीर के कुलगाम जिले में आतंकवाद रोधी अभियान में बृहस्पतिवार को सुरक्षा बल के तीन जवान घायल हो गए। अधिकारियों ने बताया आतंकवाद के खिलाफ अभियान सातवें दिन जारी है जो इस वर्ष का अब तक का सबसे लंबा अभियान है। अब तक दो आतंकवादी मारे जा चुके हैं।

सेना के उत्तरी कमांडर लेफ्टिनेंट जनरल प्रतीक शर्मा ने दक्षिण कश्मीर में सुरक्षा स्थिति और आतंकवाद-रोधी तंत्र की समीक्षा की और जारी अभियान की जानकारी ली। अधिकारियों ने कहा, अभियान सातवें दिन भी जारी है। उन्होंने बताया कि बृहस्पतिवार सुबह हुई गोलीबारी में तीन सुरक्षाकर्मी घायल हो गए जिससे घायल सुरक्षाकर्मियों की कुल संख्या अब सात हो गई है।

उन्होंने बताया कि सुरक्षा बल दुर्गम जंगली इलाकों में आतंकवादियों का पता लगाने के लिए ड्रोन और हेलीकॉप्टर समेत सभी साधनों का इस्तेमाल कर रहे हैं। पिछले शुक्रवार को दोनों पक्षों के बीच प्रारंभिक गोलीबारी के बाद रात में अभियान रोक दिया गया था, लेकिन घेराबंदी को मजबूत किया गया तथा क्षेत्र में अतिरिक्त बल भेजा गया। अधिकारियों ने बताया कि पिछले शनिवार को गोलीबारी फिर शुरू हुई, जिसमें दो आतंकवादी मारे गए।

मुठभेड़ के लिए भेजा गया अतिरिक्त बल।

ग्रामीणों ने की सुरक्षित जगह भेजने की मांग

श्रीनगर। कुलगाम जिले में आतंकवादियों से मुठभेड़ के सातवें दिन बृहस्पतिवार को अखल गांव के लोगों ने इससे उत्पन्न कठिनाइयों का हवाला देते हुए सरकार से उन्हें कहीं ओर स्थानांतरित करने की मांग की है। ग्रामीणों ने दावा किया है कि लगातार गोलीबारी के कारण वे न तो सो पा रहे हैं और न ही उनके पास अब पर्याप्त भोजन बचा है। मुठभेड़ स्थल के पास रह रहे ग्रामीण मुबारक खांडे ने कहा, सात दिन से भारी कठिनाइयों का सामना कर रहे हैं। रात भर गोलियां चलती हैं और बमबारी होती है। अब घरों में राशन की भी किल्लत हो गई है। महिलाएं और बच्चे बेहद डरे हुए हैं और लगातार गोलीबारी और धमाकों के कारण वे मानसिक समस्याओं से ग्रस्त हो गए हैं। सरकार से उन्हें कहीं और स्थानांतरित करने की अपील करते हुए कहा, हम सात दिनों से सो नहीं पाए हैं। बच्चे जागते रहते हैं और रोते रहते हैं।

रक्षाबंधन

रक्षाबंधन शनिवार को है, इससे पहले ही जगह-जगह भाई-बहन के अटूट बंधन के प्रतीक इस पर्व पर कार्यक्रम शुरू हो गए हैं। गुरुवार को सूरत के श्री स्वामीनारायण गुरुकुल में छात्रों ने उत्सव के हिस्से के रूप में संकेंद्रित राखी बनाई। एजेंसी

रूसी सुरक्षा परिषद सचिव से मिले एनएसए डोभाल

नई दिल्ली/मास्को। राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल ने बृहस्पतिवार को रूसी सुरक्षा परिषद के सचिव सर्गेई शोइगु से मुलाकात की। सूत्रों के मुताबिक डोभाल ने रूस में बैठकों में कहा कि रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के भारत दौरे की तारीखों पर काम किया जा रहा है। एनएसए ने कोई विशेष तिथि या समय नहीं बताया है। डोभाल ने कहा कि राष्ट्रपति पुतिन की भारत यात्रा की तारीखों पर काम किया जा रहा है। सूत्रों ने कहा कि मीडिया के एक वर्ग में अगस्त के अंत का जो समय बताया जा रहा है, वह गलत है। डोभाल ने रूसी सुरक्षा परिषद के सचिव सर्गेई शोइगु और अन्य वरिष्ठ अधिकारियों के साथ बातचीत की, जिसमें द्विपक्षीय ऊर्जा और रक्षा सहयोग के साथ पुतिन की भारत यात्रा पर भी ध्यान केंद्रित किया गया।

● पुतिन के प्रस्तावित भारत दौरे पर बात

खुफिया सूचना पर देश के सभी हवाई अड्डे हाई अलर्ट पर

मुंबई। राष्ट्रविरोधी तत्वों से संभावित खतरों की खुफिया सूचना पर नागरिक उड्डयन सुरक्षा ब्यूरो ने सभी हवाई अड्डों के लिए हाई अलर्ट जारी किया है।

यात्रियों और उनके सामान की गहन जांच और हवाई अड्डे के कर्मचारियों की कड़ी निगरानी सहित दूसरे सुरक्षा उपाय अपनाने के सख्त निर्देश दिए गए हैं। कहा गया है कि टर्मिनल क्षेत्रों, रनवे, हेलीपैड और उड़ान प्रशिक्षण संस्थानों में सुरक्षा उपाय किए जाएं। अधिकारियों को सीसीटीवी से कड़ी नजर रखने और पुलिस के साथ समन्वय बनाए रखने का निर्देश दिया गया है।

न्यायाधीश को खून का प्यासा नहीं होना चाहिए... हाईकोर्ट ने मृत्युदंड को उम्रकैद में बदला

कोलकाता, एजेंसी

कलकत्ता हाईकोर्ट की जलपाईगुड़ी सर्किट पीठ ने अपने मामा की हत्या के दोषी व्यक्ति की मौत की सजा को आजीवन कारावास में बदलने का आदेश देते हुए टिप्पणी की कि न्यायाधीशों को कभी भी खून का प्यासा नहीं होना चाहिए।

न्यायमूर्ति सब्यसाची भट्टाचार्य ने फैसला सुनाते हुए कहा कि समाज का विकास सजा देने के बदले सुधारात्मक दृष्टिकोण की ओर रहा है, न कि दंडात्मक दृष्टिकोण की ओर। उन्होंने कहा, दंड के तीन प्रमुख स्तंभ हैं, दंड, निवारण और सुधार। जहां निवारण अब भी एक उचित कदम के रूप में मान्य है, वहीं भारत और अन्य जगहों पर आधुनिक आपराधिक न्यायशास्त्र में, सजा का स्थान धीरे-धीरे दंड का सुधारात्मक पहलू लेने लगा है।

न्यायमूर्ति भट्टाचार्य ने भारतीय दंड संहिता की धारा 396 (हत्या के साथ डकैती) के तहत दर्ज मामले में जलपाईगुड़ी सत्र न्यायालय द्वारा आफताब आलम को सुनाई गई मौत की सजा को आजीवन कारावास में बदल दिया, जिसमें 20 साल तक समयपूर्व रिहाई का तब तक कोई विकल्प नहीं होगा, जब तक कि ऐसी असाधारण परिस्थितियां न बनें जिनसे संबंधित न्यायालय संतुष्ट हो। न्यायमूर्ति भट्टाचार्य ने कहा, न्यायाधीशों को कभी भी खून का प्यासा नहीं होना चाहिए। हत्यारों को फांसी देना उनके लिए कभी भी अच्छा नहीं रहा।

● सेशन कोर्ट ने मामा की हत्या के दोषी को सुनाया था मृत्युदंड

पुतिन ने ट्रंप से अगले हफ्ते यूएई में मुलाकात की उम्मीद जताई

मॉस्को। रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने बृहस्पतिवार को कहा कि वह अगले हफ्ते अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप से संभवतः संयुक्त अरब अमीरात में मुलाकात होने की उम्मीद कर रहे हैं।

यह खबर व्हाइट हाउस द्वारा मॉस्को को यूक्रेन में तीन साल से जारी युद्ध को समाप्त करने की दिशा में प्रगति दर्शाने के लिए दी गई समय-सीमा से ठीक पहले आई है। पुतिन के विदेश मामलों के सलाहकार यूरी उशाकोव ने पहले कहा था कि शिखर बैठक संभवतः अगले सप्ताह एक ऐसे स्थान पर हो सकती है, जिस पर ''सैद्धांतिक रूप से'' निर्णय लिया जा चुका है। उशाकोव ने यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की के शिखर बैठक में शामिल होने की संभावना को खारिज कर दिया। हालांकि, व्हाइट हाउस ने कहा था कि ट्रंप इस पर विचार करने को तैयार हैं।

नासा के दो बड़े मिशन बंद करेगा अमेरिका

ग्रीन हाउस गैस की निगरानी के हैं ये मिशन, वैज्ञानिकों ने जताई चिंता

वाशिंगटन, एजेंसी

अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का प्रशासन अंतरिक्ष एजेंसी नासा के दो मिशन को बंद करने की दिशा में बढ़ रहा है जो ग्रीनहाउस गैस और पौधों की सेहत की निगरानी से जुड़े हैं। ट्रंप प्रशासन के इस कदम से वैज्ञानिकों, नीति-निर्माताओं और किसानों के लिए एक महत्वपूर्ण डेटा स्रोत बंद हो सकता है।

अमेरिकी राष्ट्रपति के वित्त वर्ष 2026 के बजट प्रस्ताव में 'ऑर्बिटिंग कार्बन ऑब्जर्वेटरी' मिशनों के लिए कोई धनराशि शामिल नहीं है। ये मिशन सटीक रूप से दिखा सकते हैं कि कार्बन डाइऑक्साइड कहां उत्सर्जित और अवशोषित हो रही है तथा फसलें कितनी अच्छी तरह से बढ़ रही हैं। नासा ने बुधवार को ईमेल पर भेजे एक बयान में कहा कि इन्हें राष्ट्रपति के एजेंडे और बजट प्राथमिकताओं के अनुरूप समाप्त किया जा रहा है। इस बीच, नासा के एक सेवानिवृत्त वैज्ञानिक डेविड क्रिस्प ने कहा कि इन मिशनों में इस्तेमाल की गयी तकनीक अब भी दुनिया की किसी भी मौजूदा या प्रस्तावित प्रणाली की तुलना में अधिक संवेदनशील और सटीक है। ये एक राष्ट्रीय संपत्ति हैं जिन्हें बचाया जाना चाहिए।

निसार उपग्रह प्रतिदिन 14 बार करेगा पृथ्वी की परिक्रमा

चेन्नई। नासा और इसरो द्वारा संयुक्त रूप से विकसित उपग्रह निसार प्रतिदिन 14 बार पृथ्वी की परिक्रमा करेगा और प्रत्येक 12 दिन में दो बार पृथ्वी की स्थलीय और बर्फीली सतहों को स्कैन करेगा। इसे 30 जुलाई को भारतीय अंतरिक्ष केंद्र श्रीहरिकोटा से जीएसएलवी-एफ16 रॉकेट द्वारा प्रक्षेपित किया गया था। निसार न केवल नासा और इसरो के बीच पृथ्वी मिशन का पहला हार्डवेयर सहयोग है बल्कि यह एक अंतरिक्ष यान पर एल-बैंड और एस-बैंड रडार को एक साथ लाने वाला पहला उपग्रह भी है। यह उपग्रह रूप से शक्तिशाली सिंथेटिक एपर्चर रडार बनाता है।

आज का भविष्यफल

-पं.डॉ. ज्ञानेन्द्र शर्मा

आज की ग्रह स्थिति : 8 अगस्त, शुक्रवार 2025 संवत-2082, शक संवत 1947 मास-श्रावण, पक्ष-शुक्ल पक्ष, चतुर्दशी 14.12 तक तत्पश्चात पूर्णिमा।

आज का पंचांग

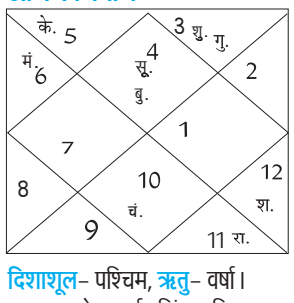

दिशाशूल- पश्चिम, ऋतु- वर्षा। चन्द्रबल-मेष, कर्क, सिंह, वृश्चिक, मकर, मीन।

ताराबल-भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, आश्लेषा, पूर्वा फाल्गुनी, उत्तरा फाल्गुनी, हस्त, चित्रा, विशाखा, ज्येष्ठा, पूर्वाषाढ़ा, उत्तराषाढ़ा, श्रवण, धनिष्ठा, पूर्वाभाद्रपद, रेवती। नक्षत्र-उत्तराषाढ़ा 14.28 तत्पश्चात श्रवण।

मेष आज आप लोगों से सम्मान की अपेक्षा रखेंगे। अचानक किसी आवश्यक कार्य से शहर से बाहर जाना पड़ सकता है। सहकर्मियों के साथ आपकी मित्रता बढ़ेगी। सभी कार्य आपके अनुसार होने से मन प्रसन्न रहेगा। राजनीति विषयों में आप विशेष रुचि ले सकते हैं।

वृष आज अपरिचित लोगों से अधिक तालमेल न बढ़ाएं। बच्चे पढ़ाई के बजाय दूसरे कार्यों में समय ज्यादा खर्च कर सकते हैं। दोस्तों के साथ भविष्य की किसी योजना को लेकर चर्चा हो सकती है। शाम के समय कहीं घूमने जा सकते हैं।

मिथुन आज आप कोई नया काम आरंभ करने से बचें। महिलाएं किचन में काम करने के दौरान सावधानी रखें। किसी की गारंटी न लें वरना नुकसान हो सकता है। आपकी अच्छी सलाह भी लोगों को समझ नहीं आयेगी इसीलिये बिना मांगे किसी को सलाह न दें।

कर्क आज कार्यक्षेत्र में विशेषज्ञ लोगों से मार्गदर्शन प्राप्त होगा। कई आवश्यक कार्य समय से पहले पूर्ण हो जायेंगे। किसी इंटरव्यू आदि में सम्मिलित हो रहे हैं तो सफलता अवश्य मिलेगी। प्रेम संबंध काफी अच्छे रहने वाले हैं।

सिंह आज आपका दिन अत्यधिक व्यस्त रहेगा। पैतृक संपत्ति के मामलों के उलझने की संभावना बन रही है। गुप्त शत्रु आपके विरुद्ध चुगली कर सकते हैं। एक साथ अनेक कार्य संभालने पड़ेंगे। विद्यार्थियों को नया कुछ सीखने को मिलेगा।

कन्या आज ऑनलाइन मार्केटिंग का काफी अच्छा प्रयोग कर सकते हैं। बच्चे बड़े-बुजुर्गों का सानिध्य पसंद करेंगे। अपनी रोग-प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए खानपान और योग पर ध्यान दें। प्रेमी जन को आज मूल्यवान उपहार दे सकते हैं।

तुला आज आप जिस काम को आसान मान रहे थे वो आपको आज काफी परेशान कर सकता है। रिश्तेदारों के कारण कुछ तनाव हो सकता है। बोलचाल में अपशब्दों का प्रयोग न करें। विद्यार्थी करियर को लेकर लापरवाह हो सकते हैं।

वृश्चिक आज घर में प्रसन्नता का वातावरण रहेगा। किसी कार्य को औपचारिकता में न करें। दोपहर के बाद आपको कोई शुभ सूचना मिल सकती है। इससे आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। भौतिक भोग-विलास का भरपूर आनंद लेंगे। कार्यक्षेत्र में सहयोगियों का साथ मिलेगा।

धनु आज कार्यक्षेत्र में विरोधी कमजोर पड़ते दिखाई देंगे। महत्वपूर्ण कार्यों को दिन के पूर्वार्ध में कर लेना हितकर होगा। आज आपको बड़े व प्रभावशाली लोगों से मिलना पड़ सकता है। भविष्य को ध्यान में रखते हुए नए कार्यों की ओर प्रवृत्त हो सकते हैं।

मकर आज पुराने रुके हुए कार्य शुरू हो सकते हैं। नए व्यापारिक अनुबंध कर सकते हैं। आर्थिक मामलों में भाग्यशाली रहेंगे। पिता के साथ चर्चा व उनका आशीर्वाद लेना उत्तम होगा। दांपत्य संबंधों में आपसी समझ और सामंजस्य में वृद्धि होगी।

कुंभ आज महत्वपूर्ण कार्यों को एक-दो दिन के लिए टालना हितकर होगा। पेट में जलन जैसी समस्या हो सकती है। आपके कार्यभार की अधिकता रहेगी। एक ही काम को बार-बार करना पड़ सकता है। महिलाओं को अपनी सुरक्षा को लेकर थोड़ा ध्यान रखना पड़ेगा।

मीन आज आर्थिक मामलों के लिए दिन बहुत अच्छा है। विवादित मामलों में आपकी विजय हो सकती है। आपके खर्चों में कमी आयेगी। जॉब में मनोनुकूल काम मिलने से काफी अच्छा व सहज महसूस करेंगे। सोशल मीडिया में आप अत्यंत सक्रिय रहेंगे।

सुडोकू-63

सुडोकू एक तरह का तर्क वाला खेल है, जो एक वर्ग पहेली की तरह होता है। जब आप इस खेल को खेलना सीख जाते हैं तो यह बहुत ही सरलता से खेला जा सकता है। सुडोकू खेल में बॉक्स में 1 नंबर से 9 नंबर तक आने वाले अंक दिए हैं। इसमें कुछ बॉक्स खाली हैं, जिन्हें आपको भरना है। कोई भी अंक दोबारा नहीं आना चाहिए। एक सीधी लाइन और एक खड़ी लाइन तथा बॉक्स में नंबर रिपीट नहीं होना चाहिए।

4		3			8		5	
		2						6
					1		4	
	2	6			4		9	
7								8
	3		2			7	1	
6			1			8		
2						4		
	5		6					1

सुडोकू - 62 का हल

9	1	2	4	7	6	3	8	5
7	6	5	9	8	3	4	1	2
3	8	4	2	5	1	6	7	9
2	9	6	8	3	7	5	4	1
1	4	3	5	6	2	7	9	8
5	7	8	1	9	4	2	6	3
6	5	1	7	2	8	9	3	4
8	2	7	3	4	9	1	5	6
4	3	9	6	1	5	8	2	7

भारतीय टीम इस समय अच्छा खेल रही है। हम सभी उसकी सफलता से खुश हैं। भारत के पास अच्छे युवा खिलाड़ी हैं और उन्हें जिस तरह से सहयोग दिया जा रहा है, वह अच्छी बात है।

-गैरी कर्स्टन

स्टेडियम

कानपुर, शुक्रवार, 8 अगस्त 2025

अमृत विचार

www.amritvichar.com

हाईलाइट

पांच भारतीय मुक्केबाज सेमीफाइनल में

बैंकॉक : भारत के पांच पुरुष मुक्केबाज भी अंडर 19 एशियाई चैंपियनशिप में अपने अपने भारवर्ग के मुकाबले जीतकर सेमीफाइनल में पहुंच गए, जिससे उनका पदक पक्का हो गया। शिवम (55 किलो), मौसम सुहाग (65 किलो), राहुल कुंडू (75 किलो), गौरव (85 किलो) और हेमंत सांगवान (90 किलो) ने अंतिम चार में जगह बनाई। इससे पहले सात महिला मुक्केबाज भी सेमीफाइनल में पहुंच चुकी हैं। अंडर 19 और अंडर 22 एशियाई मुक्केबाजी चैम्पियनशिप साथ में हो रही है। भारत के अंडर 22 वर्ग में भी 13 पदक पक्के हो गए हैं।

राष्ट्रीय ध्वज पर क्विज शुरू की

नई दिल्ली : युवा मामले और खेल मंत्रालय ने राष्ट्रीय ध्वज पर एक ऑनलाइन क्विज शुरू की है और 21 से 29 वर्ष की आयु वर्ग के 25 शीर्ष स्कोरर प्रतिभागियों को खेल मंत्री मनसुख मांडविया के साथ सियाचिन जाने का अवसर मिलेगा। मंत्रालय के अनुसार यह क्विज देशभक्ति को बढ़ावा देगी और भारतीय राष्ट्रीय ध्वज के बारे में जागरूकता बढ़ाएगी। मंत्रालय ने कहा माईभारत पोर्टल (माईभारत .जीओवी .इन) पर आयोजित यह ऑनलाइन क्विज सभी नागरिकों को इसमें भाग लेने और तिरंगे के बारे में अपने ज्ञान का परीक्षण करने के लिए आमंत्रित करती है। इसमें बहुविकल्पीय प्रश्न होंगे और सभी प्रतियोगियों को एक ई-प्रमाणपत्र प्रदान किया जाएगा।

रिबाकिना को हराकर एमबोको फाइनल में

मांट्रियल : कनाडा की किशोरी विक्टोरिया एमबोको ने बुधवार को यहां नौवीं वरीय एलेना रिबाकिना को हराकर नेशनल बैंक ओपन टेनिस टूर्नामेंट के फाइनल में प्रवेश किया। कनाडा की 18 साल की एमबोको ने रिबाकिना को तीन सेट चले कड़े मुकाबले में 1-6, 7-5, 7-6 से हराया। एमबोको ने तीसरे और निर्णायक सेट में एक मैच प्वाइंट बचाया और दो बार रिबाकिना की सर्विस तोड़कर सेट को टाईब्रेकर में खींचा और फिर जीत दर्ज की। बृहस्पतिवार को होने वाले फाइनल में एमबोको जापान की स्टार नाओमी ओसाका से भिड़ेंगी।

खचानोव नेशनल बैंक ओपन के फाइनल में

टोरंटो : रूस के 11वें वरीय केरेन खचानोव ने बुधवार को यहां शीर्ष वरीय जर्मनी के एलेक्जेंडर ज्वेरेव को हराकर नेशनल बैंक ओपन टेनिस टूर्नामेंट के फाइनल में जगह बनाई। खचानोव ने ज्वेरेव को तीन सेट तक चले कड़े मुकाबले में 6-3, 4-6, 7-6 से हराकर खिताबी मुकाबले में प्रवेश किया। एटीपी टूर पर सात बार के विजेता 29 वर्षीय खचानोव फाइनल में दूसरे वरीय टेलर फ्रिट्ज और चौथे वरीय बेन शेल्टन के बीच होने वाले ऑल अमेरिकी सेमीफाइनल के विजेता से भिड़ेंगे।

धोनी का नया स्पोर्ट्स वेंचर चेन्नई में लॉन्च

चेन्नई : 7 पैडल, प्रतिष्ठित क्रिकेटर और पूर्व भारतीय कप्तान और आईपीएल फ्रेंचाइजी सीएसके के कप्तान एमएस धोनी ने आज अपना नया पैडल ब्रांड लॉन्च किया। यह चेन्नई में उनका पहला सेंटर था, जो शहर के प्रति उनके लंबे समय से चले आ रहे प्रेम और उसकी खेल भावना से प्रेरित था, जिसे वे अपना दूसरा घर मानते थे। चेन्नई के खेल और स्वास्थ्य परिदृश्य में एक महत्वपूर्ण वृद्धि, नया 7 पैडल सेंटर ईसीआर पर स्थित है। 20,000 वर्ग फुट में फैले इस सेंटर में तीन पैडल कोर्ट, एक पिकलबॉल कोर्ट, एक स्विमिंग पूल, एक जिम, एक रिकवरी रूम, एक कैफे और एक सौना है।

भारतीय कुश्ती महासंघ ने 11 पहलवानों को निलंबित किया

फर्जी जन्म प्रमाण जमा करने के आरोप में की गई सख्त कार्रवाई

नई दिल्ली, एजेंसी

भारतीय कुश्ती महासंघ (डब्ल्यूएफआई) ने फर्जी जन्म प्रमाण पत्र जमा करने के आरोप में 11 पहलवानों को निलंबित कर दिया है। दिल्ली नगर निगम (एमसीडी) ने ऐसे 110 दस्तावेजों का सत्यापन किया और कहा कि उसकी ओर से कोई चूक नहीं हुई है क्योंकि 95 विलंबित पंजीकरण केवल एसडीएम के आदेश पर किए गए थे।

कुश्ती का खेल दो प्रमुख मुद्दों से जूझ रहा है : अधिक उम्र के पहलवान कम आयु वर्ग की प्रतियोगिताओं में भाग ले रहे हैं और कई पहलवान फर्जी जन्म प्रमाण पत्र प्राप्त करने के बाद अपने निवास स्थान से अलग राज्य का प्रतिनिधित्व करने की कोशिश कर रहे हैं। कुछ मामलों में प्रमाण पत्र बच्चे के जन्म के 12 से 15 साल बाद भी जारी किए गए हैं। गड़बड़ी की आशंका के चलते डब्ल्यूएफआई ने नगर निगम को सत्यापन के लिए प्रमाण पत्रों की एक सूची प्रदान की थी। सत्यापन के बाद एमसीडी ने डब्ल्यूएफआई को जवाब दिया कि उसने जन्म प्रमाण पत्र जारी किए हैं लेकिन यह भी कहा कि विलंबित पंजीकरण (जन्म के एक वर्ष बाद पंजीकरण) सीधे तौर पर उसके द्वारा नहीं बल्कि एसडीएम के आदेश पर किया गया है। कई प्रतियोगिताओं में, विशेष रूप से राष्ट्रीय जूनियर टीमों के चयन के लिए हुए ट्रायल में, यह स्पष्ट है कि कई पहलवान कम आयु वर्ग में प्रवेश कर चुके हैं और अपने प्रतिद्वंद्वियों के खिलाफ फायदे की स्थिति में हैं।

प्रमाण पत्रों की स्थिति बताते हुए एमसीडी ने जवाब दिया दिल्ली नगर निगम द्वारा उप-विभागीय मजिस्ट्रेट से आदेश मिलने के बाद ही 95 जन्म प्रमाण पत्र जारी किए गए हैं और एमसीडी की ओर से कोई चूक नहीं हुई है। एमसीडी के जवाब की प्रति पीटीआई के पास भी है। एमसीडी ने अपने जवाब में यह भी बताया कि 11 प्रमाण पत्र फर्जी/फोटोशॉप के जरिए छेड़छाड़/संपादित हैं और उसके द्वारा जारी नहीं किए गए हैं। ये प्रमाण पत्र सक्षम, मनुज, कविता, अंशु, आरुष राणा, शुभम, गौतम, जगरूप धनखड़, नकुल, दुष्यंत और सिद्धार्थ बालियान के थे। इनमें से 11 प्रमाण पत्र नरेला क्षेत्र के, दो नजफगढ़ और रोहिणी, सिविल लाइन और सिटी जोन का एक-एक प्रमाण पत्र शामिल है।

डब्ल्यूएफआई के अधिकारी ने पीटीआई को बताया हमने इनमें से छह पहलवानों को आज (सात अगस्त) निलंबन नोटिस भेजा है। हम फर्जी प्रमाण पत्र सौंपने के लिए पांच अन्य को पहले ही निलंबित कर चुके हैं। एमसीडी ने साथ ही बताया कि दो पहलवानों ने पंजीकरण की तिथि से छेड़छाड़ की जो उसके रिकॉर्ड से मेल नहीं खाती।

हरियाणा की पहलवान इशिका की शिकायत : इस बीच दिल्ली की पहलवान रितिका के पिता ने खेल मंत्रालय को शिकायत की है कि हाल में राज्य स्तरीय प्रतियोगिता के दौरान हरियाणा की पहलवान इशिका को दिल्ली के लिए प्रतिस्पर्धा की स्वीकृति दी गई। नीरज कुमार ने लिखा हाल ही में दिल्ली की एक राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में इशिका को 53 किग्रा भार वर्ग में खेलने की अनुमति दी गई। यह डब्ल्यूएफआई द्वारा बनाए गए मूल निवास नियम का उल्लंघन है। अगर उस नीति का पालन करना है तो इशिका को दिल्ली से खेलने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए थी। उन्होंने कहा मैंने कुछ दस्तावेज संलग्न किए हैं जिनसे स्पष्ट रूप से पता चलता है कि रितिका हरियाणा की निवासी है। मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि इस मामले की जांच का आदेश दिया जाए जिससे कि पारदर्शिता बनी रहे।

टीम में जगह बनाने के लिए खिलाड़ी करते हैं फर्जीवाड़ा

- हरियाणा कुश्ती का गढ़ है इसलिए वहां प्रतिस्पर्धा बहुत कड़ी है और राज्य की टीम में जगह बनाना दिन-ब-दिन और भी मुश्किल होता जा रहा है। कुश्ती में करियर बनाने के इच्छुक कई पहलवान नकली प्रमाणपत्र हासिल करके पड़ोसी राज्य दिल्ली के रास्ते खेले में आने की कोशिश करते हैं। डब्ल्यूएफआई ने पाया कि कई पहलवान मूल रूप से हरियाणा के थे लेकिन फिर भी उन्होंने किसी तरह एमसीडी से जन्म प्रमाण पत्र जारी करवा लिए जिससे कि वे दिल्ली से प्रतियोगिताओं में भाग ले सकें।

फोर्ट लॉडरडेल (अमेरिका) में प्यूमास यूएनएएम के खिलाफ लीग कप फुटबॉल मैच के दौरान इंटर मियामी फॉरवर्ड लियोनेल मेसी (बाएं) अपनी पत्नी एंटोनेला रोक्कुजो के साथ खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन करते हुए। एजेंसी

महिला बॉक्सर के आरोपों से मची सनसनी

नई दिल्ली, एजेंसी

- टोक्यो ओलंपिक की कांस्य पदक विजेता लवलीना ने कहा- बीएफआई अधिकारी ने किया अपमानजनक व्यवहार

मुक्केबाज लवलीना बोरगोहेन।

टोक्यो ओलंपिक की कांस्य पदक विजेता मुक्केबाज लवलीना बोरगोहेन द्वारा राष्ट्रीय महासंघ के कार्यकारी निदेशक कर्नल अरुण मलिक के खिलाफ लगाए गए अपमानजनक और लैंगिक भेदभावपूर्ण व्यवहार के आरोपों की जांच की जा रही है और जल्द ही एक रिपोर्ट सौंपी जाएगी। भारतीय खेल प्राधिकरण (साइ) के एक अधिकारी ने यह जानकारी दी।

खेल मंत्री मनसुख मांडविया, साइ के महानिदेशक, टॉप्स (टारगेट ओलंपिक पोडियम योजना) विभाग, भारतीय ओलंपिक संघ (आईओए) और भारतीय मुक्केबाजी महासंघ (बीएफआई) को संबोधित एक औपचारिक शिकायत में लवलीना ने आरोप लगाया कि मलिक ने आठ जुलाई को एक जूम मीटिंग के दौरान उनका अपमान किया और उनकी उपलब्धियों को कमतर आंका। बैठक में साइ और टॉप्स के अधिकारी भी शामिल थे। लवलीना ने इस दौरान अनुरोध किया कि उनके निजी कोच को राष्ट्रीय शिविर में आने की अनुमति दी जाए जो बीएफआई की नीति के विरुद्ध है। निजी कोच भी ऑनलाइन बैठक में मौजूद थे। वह यह भी चाहती थीं कि कोच को उनके साथ यूरोप में ट्रेनिंग के लिए जाने की अनुमति भी दी जाए।

लवलीना के अनुसार मलिक ने आक्रामक तरीके से जवाब दिया और उनसे अपमानजनक तरीके से बात की। इस मुक्केबाज ने कहा उन्होंने मुझे साफ तौर पर कहा चुप रहो, अपना सिर नीचे करो और जैसा हम कहते हैं वैसा करो। उनके शब्द ना केवल अपमानजनक थे बल्कि लैंगिक भेदभाव पूर्ण थे।

बल्लेबाजी नहीं करने के बारे में कभी नहीं सोचा था: वोक्स

लंदन, एजेंसी

इंग्लैंड के ऑलराउंडर क्रिस वोक्स का कहना है कि उन्होंने भारत के खिलाफ पांचवें टेस्ट मैच के आखिरी दिन कंधे की हड्डी खिसकने के कारण बल्लेबाजी नहीं करने के बारे में कभी नहीं सोचा था। उन्होंने हालांकि कहा कि जब उन्हें यह चोट लगी थी तब उन्हें लगा था कि क्या उनका करियर खतरे में है। वोक्स पांचवें टेस्ट मैच के अंतिम दिन अंतिम बल्लेबाज के रूप में उतरे तो उनका बायां हाथ पट्टे से बंधा हुआ था और उन्होंने इसे स्वेटर के अंदर डाला हुआ था।

भारत ने यह मैच छह रन से जीता। वोक्स ने कहा कि उन्हें लगा कि ऐसा करना सभी के लिए उनका कर्तव्य है और उन्हें अब भी इस बात का दुख है कि इंग्लैंड मैच हार गया। इस तेज गेंदबाज को अभी अपने स्कैन के नतीजों को इंतजार है।

वोक्स ने 'द गार्जियन' से कहा मुझे नहीं पता कि यह क्या है। आप बस इतना जानते हैं कि आप किसी बड़ी चीज का हिस्सा हैं। आप सिर्फ अपने लिए ही नहीं खेल रहे हैं। उन्होंने कहा यह आपकी टीम और आपके साथियों की मेहनत और उनके द्वारा किए गए त्याग, घर पर और मैदान पर देखने वाले लोगों की मेहनत है। आप बस सबके लिए ऐसा करना अपना कर्तव्य समझते हैं। वोक्स ने खुलासा किया कि उन्होंने चौथे दिन से इंग्लैंड के सहायक कोच मार्कस ट्रेस्कोथिक के साथ एक हाथ से बल्लेबाजी का अभ्यास शुरू कर दिया था। उन्होंने कहा मैंने सामान्य रूप से एक गेंद खेली और यह बहुत पीड़ादायक था।

मैं अब भी बहुत निराश हूं

- वोक्स ने कहा मैं अब भी बहुत निराश हूं, सचमुच बहुत निराश हूं कि हम वह परीकथा नहीं बना पाए। लेकिन मैंने कभी मैदान पर नहीं जाने के बारे में नहीं सोचा, चाहे जीत के लिए 100 रन ही क्यों ना होते। वोक्स ने कहा कि दर्शकों के खड़े होकर तालियों की गड़गड़ाहट के बीच मैदान पर उतरना अच्छा लगा लेकिन वह अपने इस साहसिक कार्य को अधिक तवज्जो नहीं देते। तालियां बजना अच्छा लगा और कुछ भारतीय खिलाड़ी अपना सम्मान दिखाने आए। लेकिन कोई अन्य खिलाड़ी भी ऐसा ही करता। आप नौ विकेट गिरने के बाद मैच खत्म नहीं कर सकते थे।

पैर में फ्रैक्चर के लिए पंत से माफी मांगी

- **लंदन :** इंग्लैंड के ऑलराउंडर क्रिस वोक्स ने खुलासा किया है कि उन्होंने हालिया टेस्ट शृंखला के दौरान अपनी गेंद पर पैर के अंगूठे में फ्रैक्चर के लिए ऋषभ पंत से 'माफी' मांगी थी जिसके बाद वह अपने भारतीय प्रतिद्वंद्वी की उदारता से काफी प्रभावित हुए। मैनचेस्टर में चौथे टेस्ट के दौरान वोक्स की गेंद पंत के पैर में लगी थी जिसके कारण वह सीरीज के निर्णायक पांचवें मैच से बाहर हो गए थे। भारत ने इस झटके से उबरते हुए ओवल में हुए अंतिम मैच को छह रन से जीतकर शृंखला 2-2 से बराबर कर दी। वोक्स और पंत दोनों ही शृंखला के दौरान गंभीर चोटों के बावजूद बल्लेबाजी के लिए उतरकर अपनी-अपनी टीमों के लिए साहस के प्रतीक बन गए। जहां पंत ने मैनचेस्टर में अपने पैर के टूटे अंगूठे के बावजूद बल्लेबाजी की तो वहीं वोक्स पांचवें टेस्ट के दौरान कंधे की हड्डी खिसकने के बावजूद क्रीज पर उतरे। वोक्स ने 'गार्जियन' को दिए साक्षात्कार में कहा मैंने देखा कि ऋषभ (पंत) ने इंस्टाग्राम पर सैल्यूट इमोजी के साथ मेरी एक तस्वीर डाली थी तो मैंने उन्हें धन्यवाद देते हुए जवाब दिया कि 'प्यार के लिए शुक्रिया और उम्मीद है कि पैर ठीक होगा। उन्होंने आगे कहा फिर उन्होंने मुझे एक वॉइस नोट भेजा जिसमें कहा था उम्मीद है सब ठीक होगा, उबरने के लिए शुभकामनाएं और उम्मीद है कि हम किसी दिन फिर से मैदान पर मिलेंगे। मैंने टूटे हुए पैर के लिए माफी मांगी। वोक्स ने यह भी कहा कि पांचवें टेस्ट में बल्लेबाजी के लिए आने पर भारतीय कप्तान शुभमन गिल ने उनकी सराहना की थी। वोक्स को एक भी गेंद का सामना करने का मौका नहीं मिला लेकिन उन्होंने कहा कि विकेटों के बीच दौड़ना मुश्किल था। वोक्स ने कहा शुभमन ने कहा कि यह अविश्वसनीय बहादुरी थी। उन्होंने कहा मैंने उनसे कहा कि आपने एक अविश्वसनीय शृंखला खेली, शानदार खेल दिखाया और आपकी टीम को इसका श्रेय जाता है।

मैं गंभीर को अच्छे से जानता हूं: गैरी कर्स्टन

- **नई दिल्ली :** भारत के विश्व कप विजेता पूर्व कोच गैरी कर्स्टन ने कहा कि जिस तरह से कोच गौतम गंभीर की टीम ने इंग्लैंड के कठिन दौरे पर टेस्ट सीरीज ड्रॉ कराई, उससे वह बहुत खुश हैं। कर्स्टन ने यहां एक कार्यक्रम से इतर पत्रकारों से कहा मैं बहुत खुश हूं कि भारतीय क्रिकेट टीम ने श्रृंखला ड्रॉ कराई और यह भारतीय क्रिकेट के लिये अच्छा है। मैं गौतम गंभीर के लिये भी बहुत खुश हूं। मैं उसे अच्छे से जानता हूं और उसने इस टीम के साथ जो हासिल किया है, मैं उससे खुश हूं। उन्होंने कहा भारतीय टीम इस समय अच्छा खेल रही है। हम सभी उसकी सफलता से खुश हैं।

सिराज को वह सम्मान नहीं मिलता जो मिलना चाहिए

नई दिल्ली, एजेंसी

- सचिन तेंदुलकर ने उन खिलाड़ियों की सराहना की है, जिन्होंने टेस्ट सीरीज में अहम भूमिका निभाई

लीजेंड बल्लेबाज सचिन तेंदुलकर ने उन कुछ भारतीय खिलाड़ियों की सराहना की है, जिन्होंने इंग्लैंड के खिलाफ पांच मैचों की टेस्ट सीरीज में अहम भूमिका निभाई। यह सीरीज, आखिरी दिन के दिल थाम देने वाले अंत के बाद 2-2 से बराबरी पर खत्म हुई।

तेंदुलकर ने 'अविश्वसनीय' मोहम्मद सिराज की तारीफ की, केएल राहुल के ऑफ स्टंप के आसपास अपने खेल को सटीक फुटवर्क के साथ कसने की बात कही, यशस्वी जायसवाल के दोहरे शतकों, जज्बा और परिपक्वता की चर्चा की और शुभमन गिल के कप्तान के रूप में 'शांत और संयमित' रहने की भी तारीफ की।

इस सीरीज में कई मोड़, जोरदार टकराव और कुछ असाधारण व्यक्तिगत प्रदर्शन हुए, जैसे ऋषभ पंत और क्रिस वोक्स का चोटिल होने के बावजूद बल्लेबाजी करने आना। पंत ने पांच में से चार टेस्ट खेले और दो शतक व तीन अर्धशतक लगाए, जिनमें आखिरी पारी उन्होंने दाहिने पैर में फ्रैक्चर के साथ खेली। उन्होंने 68.42 की औसत और 77.63 की स्ट्राइक रेट से रन बनाए। तेंदुलकर ने रेडिट पर कहा जो स्वीप शॉट उन्होंने खेला, उसमें वह गेंद के नीचे आना पसंद करते हैं ताकि उसे ऊंचाई के साथ स्कूप कर सकें। लोग सोचते हैं कि वह गिर गए हैं, लेकिन यह जानबूझकर किया गया है ताकि वह गेंद के नीचे आ सकें। ऐसे शॉट खेलने का राज यही है कि आप गेंद के नीचे आ सकें। यह एक योजना के तहत गिरना होता है, वह असंतुलित नहीं होते हैं। यह सब गेंद की लेंथ पर निर्भर करता है। पंत के शॉट खेलने के तरीके और उनमें जो 'पंच' होता है, उसे 'ईश्वर का वरदान' बताते हुए तेंदुलकर ने कहा कई बार लोग सोचते हैं कि उन्हें यह शॉट नहीं खेलना चाहिए, यह सही समय नहीं है। लेकिन ऋषभ जैसे खिलाड़ी को अकेला छोड़ देना चाहिए। जब वह मैच बचाने की सोच रहे हो, तो उन्हें एक अलग तरीका अपनाना होगा।

भारतीय महिला टीम भिड़ेगी उज्बेकिस्तान व किर्गिस्तान से

नई दिल्ली, एजेंसी

- अंडर-17 महिला एशियाई कप क्वालीफायर के मुकाबले

भारतीय महिला फुटबॉल टीम बिश्केक में होने वाले एएफसी अंडर-17 महिला एशियाई कप चीन 2026 क्वालीफायर के ग्रुप जी में उज्बेकिस्तान और किर्गिस्तान से भिड़ेगी। प्रतियोगिता के लिए ड्रॉ बृहस्पतिवार को कुआलालंपुर के एएफसी हाउस में आयोजित किया गया। ड्रॉ में 27 टीम को आठ ग्रुप में बांटा गया।

तीन ग्रुप में चार टीम जबकि पांच ग्रुप में तीन टीम को जगह मिली। क्वालीफायर एकल राउंड रोबिन लीग प्रारूप में 13 से 17 अक्टूबर तक खेले जाएंगे। भारत 13 अक्टूबर को किर्गिस्तान और 17 अक्टूबर को उज्बेकिस्तान से भिड़ेगा। आठ ग्रुप विजेता सात ग्रुप विजेता फाइनल्स के 10वें सत्र में जगह बनाएंगे जहां वे फीफा अंडर-17 महिला विश्व कप 2025 के चार एएफसी प्रतिनिधियों से जुड़ेंगे जिन्होंने स्वतः ही क्वालीफाई कर लिया है। ये देश उत्तर कोरिया, जापान, दक्षिण कोरिया और चीन हैं। एएफसी अंडर-17 महिला एशियाई कप चीन 2026 का आयोजन 30 अप्रैल से 17 मई 2026 तक किया जाएगा और शीर्ष चार टीमें फीफा अंडर-17 महिला विश्व कप मोरक्को 2026 के लिए क्वालीफाई करेंगी। भारत ने पिछली बार 2005 में एशियाई कप में भाग लिया था।

भारत का कार्यक्रम

- 13 अक्टूबर : किर्गिस्तान बनाम भारत
- 17 अक्टूबर : उज्बेकिस्तान बनाम भारत।

बीसीसीआई ने नये कोचों की तलाश शुरू की

बेंगलुरु : मशहूर गेंदबाजी कोच ट्रॉय कूली समेत पुराने कोचों के जाने के बाद बीसीसीआई अपने उत्कृष्टता केंद्र (सीओई) के लिए नये कोचिंग स्टाफ की तलाश में है और गेंदबाजी, बल्लेबाजी, खेल विज्ञान और मेडिसिन विभाग में शीर्ष पदों के लिए आवेदन मंगवाये गए हैं। आस्ट्रेलिया के पूर्व प्रथम श्रेणी तेज गेंदबाज और इंग्लैंड के एशेज विजेता गेंदबाजी कोच कूली का बीसीसीआई के साथ तीन साल का करार खत्म हो गया था और वह कार्यकाल में विस्तार पर थे।

59 वर्ष के कूली को 2021 के आखिर में एनसीए का गेंदबाजी कोच बनाया गया था। उनकी जगह भारत के पूर्व तेज गेंदबाज वीआरवी सिंह ले सकते हैं जिन्होंने कूली के साथ काम किया है। मेडिकल टीम के प्रमुख नितिन पटेल समेत स्टाफ के कई सदस्यों के जाने के बाद कई पद रिक्त हैं। पटेल ने मार्च में पद से इस्तीफा दिया था।

एशिया कप | चौदह साल से अंतर्राष्ट्रीय हॉकी खेल रहे मनप्रीत करियर को विस्तार देने के लिए कर रहे हैं मेहनत

बेहतर फिटनेस के साथ तैयार मनप्रीत सिंह

नई दिल्ली, एजेंसी

मनप्रीत सिंह। एजेंसी

चौदह साल से अंतर्राष्ट्रीय हॉकी खेल रहे मनप्रीत सिंह ने पिछले एक साल में फिटनेस के लिए कड़ी मेहनत की। मीठा और जंक फूड खाना लगभग बंद कर दिया ताकि इस महीने के आखिर में हो रहे एशिया कप से लेकर अगले साल एशियाई खेलों तक टीम को अपना सर्वश्रेष्ठ दे सकें।

भारत के लिए दिलीप टिर्की (412) के बाद सबसे ज्यादा 402 अंतर्राष्ट्रीय मैच खेलने वाले मनप्रीत ने भाषा को दिये इंटरव्यू में कहा पिछले साल पेरिस ओलंपिक और एशियाई चैम्पियंस ट्रॉफी के बाद से मुझे लगा कि अगर कैरियर को विस्तार देना है तो फिटनेस पर काम करना होगा। टोक्यो ओलंपिक 2020 में 41 साल बाद भारत को अपनी कप्तानी में कांस्य पदक दिलाने वाले 32 वर्ष के इस मिडफील्डर ने कहा मैं 30 पार हो चुका हूं और अब टीम के युवा खिलाड़ियों के साथ प्रतिस्पर्धा के लिये उनके स्तर पर फिटनेस रखनी होगी। सिर्फ अनुभव से काम नहीं चलता। उन्होंने बताया कि किस तरह से उन्होंने अपने खानपान में बदलाव करके कई पसंदीदा चीजों को खाना लगभग बंद कर दिया।

पंजाब के मीठापुर से निकलकर 2011 में 19 वर्ष की उम्र में भारत के लिये पदार्पण करने वाले इस खिलाड़ी ने कहा मैंने मीठा और जंक फूड लगभग बंद कर दिया है। हफ्ते में एक दिन ही ऐसा कुछ खाता हूं लेकिन बहुत कम मात्रा में। जिम के अलावा भी कोर वर्कआउट, स्पीड पर काम करना शुरू किया और सात किलो वजन कम कर लिया। उन्होंने बताया कम वजन के साथ मैदान पर रफ्तार बेहतर हुई। योयो और स्पीड टेस्ट में भी बहुत अच्छे नतीजे मिले। मुझे खुद को बहुत अच्छा लग रहा है। मनप्रीत फिलहाल लॉस एंजिलिस में 2028 में होने वाले ओलंपिक के बारे में नहीं सोच रहे और उन्होंने कहा कि वह एशियाई खेलों के बाद ही आगे के लिये फैसला लेंगे। उन्होंने कहा मेरा पहला लक्ष्य अगले साल होने वाले एशियाई खेल हैं और मैं जानता हूं कि मेरी फिटनेस उस स्तर की है। उसके बाद फिटनेस का आकलन करूंगा और अगर सही नहीं रही तो किसी दूसरे खिलाड़ी के लिये जगह खाली कर दूंगा। वैसे मैं रोनाल्डो को आदर्श मानता हूं जो 40 वर्ष की उम्र में भी इतना फिट है।

आस्ट्रेलिया जैसी बड़ी टीमों से कम नहीं भारत

- मनप्रीत ने कहा कि भारतीय टीम फिटनेस के मामले में आस्ट्रेलिया, नीदरलैंड, जर्मनी जैसी बड़ी टीमों से कमतर नहीं है और फर्क मौके भुनाने का है। टोक्यो ओलंपिक से पहले ही टीम में बड़ी टीमों को हराने का आत्मविश्वास आ गया था। फिटनेस व कौशल के मामले में हम किसी से कम नहीं। फर्क सिर्फ रणनीति पर अमल का है और मैच के दिन जो अच्छा करता है, वही जीतता है। तेज रफ्तार अंतर्राष्ट्रीय हॉकी खेलते हुए इतने लंबे कैरियर में कार्यभार प्रबंधन कैसे किया, यह पूछने पर कहा हमारे पास खिलाड़ियों का बड़ा पूल है। युवा खिलाड़ियों को भी मौके मिलते हैं व कार्यभार प्रबंधन का ध्यान रखा जाता है।